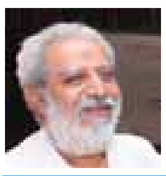
04 - न्यायपालिका को खुद बचानी होगी अपनी साख

05 - विजय शाह की माफी अस्वीकार के पीछे ठोस आधार

A Daily News Magazine
इंदौर
सोमवार, 26 मई, 2025

06 - तपने के बजाए ठंडा रहा नौतपा का पहला दिन

07 - 'हॉर्ट लैम्प' आप भी लिखिए, भले छोटा लिखिए

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 226, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रु. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

अमेरिका पर बढ़ते कर्ज का भारत पर क्या होगा असर ?

पंकज श्रीवास्तव

अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होते हुए भी बढ़ते क़र्ज़ के बोझ से कैसे जूझ रहा है? जानिए अमेरिका के क़र्ज़ संकट की वजहें, इतिहास, और वैश्विक असर।

दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और महाशक्ति, संयुक्त राज्य अमेरिका, आज एक अभूतपूर्व कर्ज संकट से जूझ रहा है। इसका राष्ट्रीय कर्ज 36.2 ट्रिलियन डॉलर (लगभग 3,000 लाख करोड़ रुपये) के पार पहुँच चुका है। यह संकट न केवल अमेरिका, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए भी चिंता का विषय है, जिसमें भारत जैसे उभरते बाजार भी शामिल हैं। अमेरिका का कुल कर्ज 36.2 ट्रिलियन डॉलर (1 ट्रिलियन = 1,000 अरब) तक पहुँच गया है, जो देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 122त्न है। यह कर्ज हर तिमाही 1 ट्रिलियन डॉलर की रफ्तार से बढ़ रहा है। हाल ही में क्रेडिट रेटिंग एजेंसी मूडीज ने अमेरिका की रेटिंग को Aaa से घटाकर Aa1 कर दिया। एक सदी से अधिक समय में पहली बार है कि दुनिया के सबसे बड़े बॉन्ड मार्केट को शीर्ष रेटिंग नहीं मिली। इससे पहले 2011 में स्टैंडर्ड एंड पूअर्स और 2023 में फिच ने भी अमेरिका की रेटिंग घटाई थी।

अमेरिका पर क़र्ज़ के विभिन्न स्रोत हैं- 42 प्रतिशत अमेरिकी निजी निवेशक, जैसे पेंशन फंड और म्यूचुअल फंड।, 20 प्रतिशत अमेरिकी सरकारी एजेंसियाँ और ट्रस्ट।, 13 प्रतिशत फेडरल रिजर्व, 25 प्रतिशत विदेशी निवेशक, जैसे जापान (1.13 ट्रिलियन डॉलर), यूनाइटेड किंगडम (779.3 अरब), और चीन (765.4 अरब)।

हर साल अमेरिका अपनी आय से अधिक खर्च करता है, जिससे राजकोषीय घाटा बढ़ता है। इसे पूरा करने के लिए सरकार ट्रेजरी बिल्स, नोट्स, और बॉन्ड्स के जरिए उधार लेती है। इन प्रतिभूतियों को निवेशक खरीदते हैं, और सरकार ब्याज के साथ इसे चुकाने का वादा करती है। लेकिन इस उधार की एक सीमा, जिसे ऋण सीमा कहते हैं, होती है। 1960 से अब तक अमेरिकी कांग्रेस ने इस सीमा को 78 बार बढ़ाया है। हाल ही में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के नए टैक्स कट बिल को मंजूरी मिली, जो 2017 के टैक्स कट्स को और बढ़ाएगा। यह कर्ज में 5 ट्रिलियन डॉलर और जोड़ सकता है।

अगर कर्ज का ब्याज भुगतान बढ़ता है, तो सरकार को बजट में कटौती या टैक्स बढ़ाना पड़ सकता है। इससे बंधक, कार लोन, और क्रेडिट कार्ड बिल जैसे खर्चे महँगे हो जाएँगे, जिसका सीधा असर आम अमेरिकी पर पड़ेगा।

आज अमेरिका वैभव और शक्ति का प्रतीक है, लेकिन हमेशा ऐसा नहीं था। 1776 में 'लिबर्टी' (स्वतंत्रता) के मंत्र के साथ अमेरिकी क्रांति हुई। क्रांति के बाद अमेरिका की आर्थिक और राजनीतिक यात्रा शुरू हुई। 19वीं सदी में औद्योगिक क्रांति ने अमेरिका को बदल दिया। रेलवे, स्टील, और तेल उद्योगों ने अर्थव्यवस्था को गति दी। हेनरी फोर्ड की ऑटोमोबाइल क्रांति और जॉन डी. रॉकफेलर जैसे उद्योगपतियों ने इसे औद्योगिक ताकत बनाया।

1914-1918 के प्रथम विश्व युद्ध ने अमेरिका को आर्थिक शक्ति के रूप में उभारा। यूरोप में युद्ध के दौरान अमेरिका ने मित्र राष्ट्रों को हथियार, खाद्यान्न, और कर्ज दिया। युद्ध के बाद यूरोपीय देशों का पुनर्निर्माण भी अमेरिकी पूँजी से हुआ। 1920 के दशक में अमेरिकी डॉलर वैश्विक मुद्रा बनने की राह पर था, और वॉल स्ट्रीट वित्तीय केंद्र बना। लेकिन 1929 की महामंदी ने अर्थव्यवस्था को झटका दिया। द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) अमेरिका के लिए टर्निंग पॉइंट था। जब यूरोप और एशिया में तबाही मची, अमेरिका सुरक्षित रहा।

जे. रॉबर्ट ओपेनहाइमर के नेतृत्व में चले 'मैनहट्टन प्रोजेक्ट' ने अमेरिका के लिए परमाणु बम विकसित किया। 1945 में जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर अणु बम के हमले के साथ युद्ध समाप्त हुआ। जिसने अमेरिका को दुनिया की सबसे बड़ी सैन्य शक्ति बनाया।

1944 में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में अमेरिकी डॉलर को वैश्विक मुद्रा के रूप में स्थापित किया गया। विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की स्थापना हुई, जिसने अमेरिका को वैश्विक वित्तीय प्रणाली का केंद्र बनाया। युद्ध के बाद मार्शल प्लान के तहत यूरोप के पुनर्निर्माण के लिए अरबों डॉलर का निवेश किया गया। युद्ध के बाद अमेरिका ने नाटो जैसे गठबंधनों के ज़रिए सैन्य उपस्थिति बढ़ाई। कोल्ड वॉर में सोवियत संघ के साथ प्रतिस्पर्धा ने इसे वैश्विक नेता बनाया। अमेरिका ने शोध और अनुसंधान को बढ़ावा दिया, स्वतंत्र चिंतन को प्राथमिकता दी, और लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत किया। यह दुनिया भर के प्रतिभाशाली लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बना।

अमेरिका का कर्ज संकट भारत जैसे देशों को कई तरह से प्रभावित कर सकता है:

निर्यात पर प्रभाव: अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। अगर अमेरिकी अर्थव्यवस्था मंदी की चपेट में आती है, तो भारत के आईटी, टेक्सटाइल, और फार्मास्यूटिकल्स जैसे निर्यात प्रभावित होंगे। एक प्रतिशत की मंदी भी वैश्विक आपदा बन सकती है।

वित्तीय बाजारों में अस्थिरता: अमेरिका की क्रेडिट रेटिंग में कमी से वैश्विक शेयर बाजार अस्थिर हो सकते हैं। भारत के स्टॉक मार्केट और निवेशकों पर इसका असर पड़ सकता है। अगर अमेरिका डिफॉल्ट करता है, तो वैश्विक ब्याज दरें बढ़ेंगी, जिससे भारत में उधार लेना महँगा होगा।

अमेरिकी ट्रेजरी बॉन्ड्स में निवेश: भारत ने अमेरिकी ट्रेजरी बॉन्ड्स में 220 अरब डॉलर का निवेश किया है। अगर अमेरिका की रेटिंग और गिरती है, तो इन निवेशों का मूल्य घटेगा, जिससे भारत का 690 अरब डॉलर का विदेशी मुद्रा भंडार प्रभावित होगा। अमेरिका भारत का रणनीतिक साझेदार है। कर्ज संकट से उसकी आर्थिक शक्ति कमजोर होने पर रक्षा, अंतरिक्ष, और परमाणु ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में सहयोग प्रभावित हो सकता है।

भारत पर क़र्ज़: भारत का कर्ज भी बढ़ रहा है, लेकिन यह संकट की स्थिति में नहीं है। भारत पर 2014 में कुल कर्ज 55 लाख करोड़ रुपये था, जिसमें बाहरी कर्ज 31 लाख करोड़ रुपये (461 अरब डॉलर) था। प्रति व्यक्ति कर्ज लगभग 42,307 रुपये था।

2025 में कर्ज: अनुमानित कुल कर्ज 200-220 लाख करोड़ रुपये, जिसमें बाहरी कर्ज 55.38 लाख करोड़ रुपये (663.8 अरब डॉलर) है। प्रति व्यक्ति कर्ज अब लगभग 1.44 लाख रुपये है।

वृद्धि: कुल कर्ज में 181-300 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

भारत में हर नवजात शिशु लगभग 1.5 लाख रुपये के कर्ज के साथ पैदा हो रहा है। ब्याज भुगतान की लागत बढ़ रही है, और अगर राजकोषीय घाटा नियंत्रित नहीं हुआ, तो भविष्य में दबाव बढ़ सकता है।

36.2 ट्रिलियन डॉलर का कर्ज और 122 प्रतिशत का कर्ज-से-जीडीपी अनुपात अमेरिका के लिए चेतावनी है। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से भारत जैसे देशों, को प्रभावित कर सकता है।, क्योंकि वैश्विक मंदी, निर्यात में कमी, और निवेश पर असर भारत की अर्थव्यवस्था को चुनौती दे सकता है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

मन की बात

ऑपरेशन सिंदूर एक सैन्य मिशन नहीं, बदलते भारत की तस्वीर है

पीएम मोदी ने कहा-इसने पूरे देश को देश-भक्ति के भावों से भर दिया है

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी ने रविवार को रेडियो शो 'मन की बात' के 122वें एपिसोड के तहत देश को संबोधित किया। एपिसोड की शुरुआत में उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ एक सैन्य मिशन नहीं है, ये हमारे संकल्प, साहस और बदलते भारत की तस्वीर है। इस तस्वीर ने पूरे देश को देश-भक्ति के भावों से भर दिया है, तिरंगे में रंग दिया है। पीएम ने भारतीय सेना के पराक्रम की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि भारत की सेना ने आतंकवाद के खिलाफ कड़ा प्रहार किया। इसके साथ ही उन्होंने उन आतंकी ठिकानों की तस्वीरें भी दिखाई जिन्हें भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में नष्ट किया था। उन्होंने बताया कि पीओके में गुलपुर और अब्बास कैंप (कोटली में) और भिंबर के बरनाला कैंप को नष्ट किया गया। पीएम ने कहा कि आज पूरा देश आतंकवाद के खिलाफ एकजुट है, संकल्पबद्ध है। आज हर भारतीय का यही संकल्प है, हमें आतंकवाद को खत्म करना ही है। ऑपरेशन सिंदूर

के दौरान हमारी सेनाओं ने जो पराक्रम दिखाया है, उसने हर हिंदुस्तानी का सिर ऊंचा कर दिया है। जिस सटीकता के साथ हमारी सेनाओं ने सीमा पार के आतंकवादी ठिकानों को ध्वस्त किया, वो अद्भुत है। 'ऑपरेशन सिंदूर' ने दुनिया-भर में आतंक के खिलाफ लड़ाई को नया विश्वास और उत्साह दिया है।

ऑपरेशन सिंदूर ने लोगों में देशभक्ति की भावना जगाई

पीएम ने कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' ने देश के लोगों को इतना प्रभावित किया है कि कई परिवारों ने इसे अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है। बिहार के कटिहार में, यूपी के कुशीनगर में, और भी कई शहरों में, उस दौरान जन्म लेने वाले बच्चों का नाम 'सिंदूर' रखा गया है। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर सोशल मीडिया पर कविताएं लिखी जा रही थीं, संकल्प गीत गाये जा रहे थे। छोटे-छोटे बच्चे पेंटिंग्स बना रहे थे जिनमें बड़े संदेश छुपे थे। देश के कई शहरों में, गावों में, छोटे-छोटे कस्बों में, तिरंगा यात्राएं निकाली गईं। हजारों लोग हाथों में तिरंगा लेकर देश की सेना, उसके प्रति वंदन-अभिनंदन करने निकल पड़े। कितने ही शहरों में सिविल डिफेंस वॉलेंटियर बनने के लिए बड़ी संख्या में युवा एकजुट हो गए।

छत्तीसगढ़ में नक्सल प्रभावित इलाकों में अब शिक्षा बढ़ रही

पीएम ने कहा कि छत्तीसगढ़ के बस्तर के बच्चों में साइंस का पैशन है। वो स्पोर्ट्स में भी कमाल कर रहे हैं। ऐसे प्रयासों से पता चलता है कि इन इलाकों में रहने वाले लोग कितने साहसी होते हैं। इन लोगों ने तमाम चुनौतियों के बीच अपने जीवन को बेहतर बनाने की राह चुनी है। मुझे यह जानकार भी बहुत खुशी हुई कि 10वीं और 12वीं की परीक्षाओं में दंतेवाड़ा जिले के नतीजे बहुत शानदार रहे हैं। करीब 95 फीसदी के साथ ये जिला 10वीं के नतीजों में टॉप पर रहा। वहीं 12वीं की परीक्षा में इस जिले ने छत्तीसगढ़ में छठा स्थान हासिल किया।

गुजरात में पांच साल में शेरों की संख्या बढ़ी

पीएम ने कहा कि शेरों से जुड़ी एक बड़ी अच्छी खबर है। पिछले केवल पांच सालों में गुजरात के गिर में शेरों की आबादी 674 से बढ़कर 891 हो गई है। लॉयन सेंसस के बाद सामने आई शेरों की ये संख्या बहुत उत्साहित करने वाली है। साथियों, आप में से बहुत से लोग यह जानना चाह रहे होंगे कि आखिर ये एनिमल सेंसस होती कैसे है। ये एक्सरसाइज बहुत ही चुनौतीपूर्ण है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि लॉयन सेंसस 11 जिलों में, 35 हजार वर्ग किलोमीटर के दायरे में की गई थी। सेंसस के लिए टीमों ने चौबीसों घंटे इन क्षेत्रों की निगरानी की।

भारत बना दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

जापान को पीछे छोड़ा, 2028 तक जर्मनी को पछाड़कर तीसरे स्थान पर पहुंचेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत आधिकारिक तौर पर जापान को पीछे छोड़कर दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। नीति आयोग के सीईओ बीवी आर सुब्रह्मण्यम ने 24 मई को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में इसकी जानकारी दी। भारत ने यह उपलब्धि अपनी इकोनॉमिक पॉलिसी के कारण हासिल की है। इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड यानी, आईएमएफ के आंकड़ों का हवाला देते हुए सुब्रह्मण्यम ने कहा, हम चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। हम 4 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था हैं। आज भारत जापान से बड़ा है। अब केवल अमेरिका, चीन और जर्मनी ही भारत से बड़े हैं। नीति आयोग के सीईओ ने ये भी कहा कि अगर हम अपनी योजना और सोच-विचार पर टिके रहे, तो 2.5-3 साल में हम तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएंगे। नीति आयोग के सीईओ ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष यानी आईएमएफ के आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि भारत अब जापान से आगे निकल गया है और अब हम 4 ट्रिलियन डॉलर्स की इकॉनमी हैं। उन्होंने कहा कि यदि हम अपनी योजना और विचार पर कायम रहते हैं तो 2.5-3 वर्षों में हम तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होंगे। ध्यान देने वाली बात यह है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एप्पल को धमकी दी थी कि वो आईफोन का प्रोडक्शन भारत में न करें। इसको लेकर उठे सवालों पर नीति आयोग के सीईओ सुब्रह्मण्यम ने कहा कि टैरिफ क्या होगा, यह अभी स्पष्ट नहीं है लेकिन मौजूदा हालात को देखते हुए भारत मैन्युफैक्चरिंग के लिए एक किफायती जगह बना रहेगा।

'विकसित भारत 2047' की दिशा में मजबूत कदम

बैठक के दौरान 'विकसित राज्य से विकसित भारत 2047' विषय पर केंद्र और राज्यों के बीच गहन विचार-विमर्श हुआ। नीति आयोग के सीईओ ने बताया कि इस बैठक में मैन्युफैक्चरिंग, सेवाएं, ग्रामीण और शहरी गैर-कृषि क्षेत्र, अनौपचारिक क्षेत्र, ग्रीन और सर्कुलर इकोनॉमी जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई। सुब्रह्मण्यम ने कहा, भारत अब एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां से उसकी अर्थव्यवस्था बहुत तेज गति से आगे बढ़ सकती है। हम टेक-ऑफ स्टेज पर हैं।

समुद्र में लौट रहा लहरों का योद्धा आईएनएस ब्रह्मपुत्र

भीषण आग लगने के बाद हुआ था बड़े हादसे का शिकार

कोलकाता (एजेंसी)। भारतीय नौसेना का स्वदेशी युद्धपोत आईएनएस ब्रह्मपुत्र जुलाई 2024 में मुंबई स्थित नौसेना डॉकयार्ड में हुए एक गंभीर हादसे के बाद बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। लेकिन अब यह युद्धपोत एक बार फिर से सेवा में लौटने की राह पर है। वरिष्ठ नौसैनिक अधिकारियों ने बताया कि युद्धपोत के 'फ्लोट और मूव' क्षमताओं को बहाल करने का कार्य इस साल के अंत या 2026 की शुरुआत तक पूरा हो सकता है, जबकि इसकी 'फाइट' यानी युद्ध क्षमता जून-जुलाई 2026 तक दोबारा सक्रिय हो सकती है।

प्रधानमंत्री से मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने की भेंट

सार्थक और सफल रहा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का दो दिवसीय नई दिल्ली प्रवास

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से सौजन्य भेंट एवं चर्चा की। इसके पहले शनिवार को नीति आयोग की गवर्निंग बॉडी की बैठक में प्रधानमंत्री श्री मोदी की मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. यादव सहित अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों से भेंट हुई थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आज शीर्ष नेताओं की उपस्थिति में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की मुख्यमंत्री परिषद की बैठक में हिस्सा लिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का दो दिवसीय नई दिल्ली प्रवास सार्थक और सफल रहा।

नीति आयोग की बैठक

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में नीति आयोग की शासी परिषद (गवर्निंग काउंसिल) की 10वीं बैठक में भाग लिया। यह बैठक 'विकसित राज्य फॉर विकसित भारत @2047' थीम पर केंद्रित थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बैठक में शामिल होकर प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का मार्गदर्शन प्राप्त किया और इस बैठक को भारत के भविष्य निर्माण की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल बताया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि प्रधानमंत्री जी के दूरदर्शी नेतृत्व में सभी राज्य 'टीम इंडिया' की भावना के साथ कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज मध्यप्रदेश विकास और लोक कल्याण के संकल्प पथ पर अग्रसर है और निरंतर नए प्रतिमान स्थापित कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत-आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के विजन से प्रेरित होकर मध्यप्रदेश को देश के अग्रणी राज्यों की प्रथम पंक्ति में स्थापित करने के लिए राज्य सरकार संकल्पित है।

मध्यप्रदेश में संपन्न महत्वपूर्ण विकास कार्यों पर प्रजेंटेशन

नीति आयोग की बैठक में मध्यप्रदेश सरकार की ओर से विभिन्न विकास परक कार्यों और योजनाओं की उपलब्धि विस्तार से सबके सामने रखी गई। बैठक में सभी सहभागियों ने एक स्वर में वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वर्ष 2047 तक भारत की अर्थव्यवस्था को 30 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। मध्यप्रदेश देश की अर्थ व्यवस्था में 2 ट्रिलियन डालर का योगदान देगा। प्रधानमंत्री जी ने राज्यों से आव्हान किया है कि इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए सभी राज्य अपना-अपना योगदान दें। जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से गरीब, किसान, महिला और युवाओं को लाभ दिया जाए। मेड इन इंडिया को बढ़ावा देते हुए स्वास्थ्य से लेकर सभी क्षेत्रों में योजनाएं तैयार की जाएं।

मन की बात का श्रवण

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्रवासियों से निरंतर संवाद के माध्यम मन की बात के 122वीं कड़ी का रविवार को नई दिल्ली प्रवास के दौरान श्रवण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मन की बात कार्यक्रम का श्रवण करने के पश्चात कहा कि मन की बात कार्यक्रम जन संवाद का अनूठा माध्यम है। यह कार्यक्रम राष्ट्र निर्माण की दिशा में सामूहिक चेतना जागृत करने का अनुपम प्रयास है। प्रधानमंत्री श्री मोदी का मन की बात कार्यक्रम युवा शक्ति, ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, गरीब कल्याण, पर्यावरण संरक्षण और नवाचार से लेकर समाज के प्रत्येक वर्ग को जोड़ने वाला संवाद कार्यक्रम है, जो राष्ट्रवासियों को नई ऊर्जा और दिशा देता है।

सुप्रभात

लड़की की कुंडली में
सातवें भाव के स्वामी
नवम भाव में विद्यमान हैं।

सो जो होगा
वो होगा ही।

पर कभी-कभी
लड़की दब जाती है
प्रेम के गुरुत्व से।

पर जाए कहां
जब प्रेम ही रुष्ट हो?

क्या करे लड़की,
जब प्रेम
उसे उसके नाम के स्थान पर
'शिष्या' कहकर पुकारे?

लड़की धरती है।
लड़की प्रेमिका है।
पर कभी-कभी
आकाश भी बहुत भारी हो जाता है।

लड़की कह देना चाहती है
लड़के से-
'अभी इतने भी बड़े नहीं हुए
मैं और तुम।
आओ थोड़ा खेल लें हम
चांद और चकोर जैसे।

मेरी पुस्तक का पृष्ठ नहीं,
उल्कापिंड-सा ध्वस्त होता
मेरा अस्तित्व पढ़ो।'

पर तब तक प्रेम
उसे गृहकार्य दे चुका होता है।

- प्रज्ञा विश्नोई

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ सोमवार, 26 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

सूर्य-चंद्रमा की रोशनी से दूरी, बच्चे हो रहे मायोपिया का शिकार

एम्स में 6 हजार बच्चों पर स्टडी, 47 प्रतिशत को दूर की चीजें दिखती हैं धुंधली

भोपाल (नप्र)। नेचुरल लाइट यानी सूर्य और चांद की रोशनी के नीचे अब लोगों का समय कम बीत रहा है। ऐसे में उन्हें दूर की वस्तुएं धुंधली दिखाई देने लगी हैं। इस रोग को मायोपिया कहा जाता है। यह समस्या इतनी तेजी से बढ़ रही है कि इस साल मायोपिया अवेयरनेस वीक (19 से 25 मई) के लिए थीम 'स्क्रीन डाउन, आइज अप' रखी गई है।इसका मतलब है कि व्यक्ति मोबाइल, लैपटॉप और टीवी को छोड़कर घर से बाहर खुले आसमान के नीचे समय बिताए।

मायोपिया से सबसे ज्यादा बच्चे प्रभावित- इससे सबसे अधिक प्रभावित बच्चे हो रहे हैं। एम्स भोपाल के नेत्र रोग विभाग द्वारा हाल ही में पांच साल तक की गई एक केस स्टडी सामने आई है। इसमें पता

चला कि जिन 6,000 बच्चों को आंखों से जुड़ी समस्या थी, उनमें से 47 प्रतिशत बच्चों को मायोपिया था। यही नहीं, अब इस रोग को 'मायोपिया एपिडेमिक' यानी महामारी का नाम भी दिया गया है।

विशेषज्ञों ने चिंता जाहिर की है कि यदि जल्द सख्त कदम नहीं उठाए गए, तो साल 2050 तक हर दूसरा बच्चा इससे ग्रसित होगा।

रुक रहा बच्चों की आंखों का विकास- एम्स के नेत्र रोग विभाग की प्रमुख डॉ. भावना शर्मा ने बताया कि आज हर घर में बच्चे मोबाइल, लैपटॉप और टीवी के सामने अधिक समय बिता रहे हैं। इसके कारण उनकी आंखों का वह विकास रुक रहा है, जो सामान्य रूप से 18 साल तक होता है।

आंखों की मांसपेशियां दूर और पास देखने के लिए अपनी स्थिति बदलती हैं। जब आंखों में तेज रोशनी पड़ती है तो पुतली सिकुड़ती है। लेकिन अब लंबे समय तक पास की चीजों को देखने और कृत्रिम रोशनी में रहने के कारण आंखों की मांसपेशियां एक ही स्थिति में फिक्स हो रही हैं, जिससे मायोपिया की समस्या बढ़ रही है।

मायोपिया को नजरअंदाज न करें

ऑल इंडिया ऑप्थैल्मोलॉजिकल सोसाइटी के महासचिव डॉ. संतोष होनावर के अनुसार मायोपिया चुपचाप एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती बनती जा रही है। यह केवल चश्मे तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे रेटिनल डिजनरेशन, ग्लूकोमा, मायोपिक डिजनरेशन और अंधेपन जैसी जटिलताएं हो सकती हैं।

2050 तक दुनिया की आधी आबादी हो सकती है शिकार

2019 में मायोपिया के बढ़ते मामलों को देखते हुए अमेरिकन एकेडमी ऑफ ऑप्थैल्मोलॉजी ने 'मायोपिया टास्क फोर्स' का गठन किया। इसके प्रमुख डॉ. रिचर्ड एल. एबॉट और डॉ. डोनाल्ड टैन थे। टीम में दुनियाभर के नेत्र विशेषज्ञ, बाल रोग विशेषज्ञ और अन्य संस्थाएं शामिल थीं। उनका मानना है कि मायोपिया को अब नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। 2010 में दुनिया की 28 प्रतिशत आबादी मायोपिया से ग्रसित थी। अनुमान है कि 2050 तक यह आंकड़ा 50 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। पूर्वी एशिया में यह दर 90 प्रतिशत तक जा सकती है।

चीन के मंसूबे पर फिरा पानी भारत ने कर दिया 'खेला'

- ईस्ट में भारत का रोड व पोर्ट के साथ फेस्ट का प्लान तैयार

नई दिल्ली (एजेंसी)। 1 जनवरी 2026 को, अरुणाचल प्रदेश और पूरे भारत से हजारों लोग सूर्य नमस्कार के साथ नए साल का स्वागत कर सकते हैं। यह उस गांव में होगा जहां भारतीय धरती पर पहला सूर्योदय होता है। यह भव्य आयोजन रणनीतिक और

आध्यात्मिक महत्व से भरा होगा। यह प्रस्तावित सनराइज फेस्टीवल का मुख्य आकर्षण होगा। यह फेस्टीवल डोंग गांव में होगा। डोंग गांव भारत-चीन-म्यांमार के त्रिकोणीय जंक्शन के पास एक दूरस्थ पहाड़ी गांव है। यह फेस्टीवल 13 मई को राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में स्वीकृत किया गया था। यह बैठक किबिथू में हुई थी।

भारत के पास ताकतवर होने के अलावा कोई विकल्प नहीं

संघ प्रमुख मोहन भागवत बोले-सभी सीमाओं पर बुरी ताकतों की दुष्टता को दिख रही

कहा- हिंदू एक हों, देश की सेना को भी मजबूत बनाएं, ताकि कोई उसे जीत न सके

नई दिल्ली (एजेंसी)। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा है कि भारत के पास शक्तिशाली होने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। हम अपनी सभी सीमाओं पर बुरी ताकतों की दुष्टता को देख रहा है। भागवत ने हिंदू समाज से एक होने और भारतीय सेना को ताकतवर बनाने की अपील की, ताकि कई शक्तियां एक साथ आने पर भी उसे जीत न सकें। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शक्ति को धर्म के साथ जोड़ना चाहिए। हमें सद्गुण और शक्ति दोनों की पूजा करनी चाहिए। लोगों की रक्षा, दुष्टों का खात्मा करने के लिए, यही हमारी शक्ति का स्वभाव होना चाहिए। भागवत ने कहा- कृषि, औद्योगिक और

वैज्ञानिक क्रांतियां खत्म हो चुकी हैं। अब दुनिया को एक धार्मिक क्रांति की जरूरत है और भारत को ही इसका रास्ता दिखाना होगा। संघ प्रमुख ने संघ की वीकली मैगजीन ऑर्गनाइजर को दो महीने पहले बेंगलुरु में संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक के बाद एक इंटरव्यू दिया था, जिसमें उन्होंने भारत की सेना, अर्थव्यवस्था, हिंदू समाज, धर्म पर अपनी बात रखी।

संघ 100 साल की यात्रा और महिला भागीदारी पर भी बोले

भागवत ने कहा- संघ के पास कुछ नहीं था। विचार की मान्यता नहीं, प्रचार का साधन नहीं था। समाज में उपेक्षा और विरोध ही था। कार्यकर्ता भी नहीं थे। यह भविष्यवाणी की जाती थी कि यह पैदा होते ही मर जाने वाला है लेकिन संघ सफल होकर निकला और 1950 तक यह साबित हो गया कि संघ आगे बढ़ेगा। इसी पद्धति से हिन्दू समाज को भी संगठित किया जा सकता है। आपातकाल के बाद संघ की ताकत कई गुना बढ़ गई। हम यह भी मानते हैं कि महिलाओं का उद्धार पुरुष नहीं कर सकते। महिलाएं स्वयं अपना उद्धार करेंगी, उसमें सबका उद्धार हो जाएगा। इसलिए हम उन्हीं को प्रमुखता देते हैं और जो वे करना चाहती हैं, उसके लिए उनको सशक्त बनाते हैं।

मोदी और चंद्रबाबू के बीच 'टेंशन' में दिखे तमिलनाडु सीएम

- स्टालिन के चेहरे पर नहीं था कोई भाव और मुस्कुराते रहे पीएम

चेन्नई (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में दिल्ली में नीति आयोग की 10वीं बैठक हुई। इसमें कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों और

केंद्रीय मंत्रियों ने हिस्सा लिया। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने तमिलनाडु की ओर से भाग लिया। बैठक में उपस्थित सभी लोगों ने सामूहिक फोटो खिंचवाई। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने कहा कि केंद्रीय कर राजस्व का 50 प्रतिशत राज्यों को दिया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी बैठक में ब्रेक के दौरान मुख्यमंत्री एमके स्टालिन और चन्द्रबाबू नायडू मुस्कुराते हुए बातचीत करते हुए नजर आए। इस दौरान जहां पीएम और चन्द्रबाबू मुस्कुराते हुए दिखे, वहीं स्टालिन के चेहरे पर चिंता थी।

साल 2030 तक भारत में दौड़ने लगेगी 'बुलेट' ट्रेन!

गुजरात में तेजी से चल रहा काम, महाराष्ट्र में धीमी है चाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की पहली बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए मुंबई से अहमदाबाद के बीच 508 किलोमीटर लंबा हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर तैयार किया जा रहा है। इसको लेकर बड़ी जानकारी सामने आ रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, 2028 तक यह गुजरात में साबरमती से वापी के बीच शुरू हो सकती है। पूरे मार्ग पर 2030 तक ट्रेन के दौड़ने की संभावना जताई गई है। सीएनएन न्यूज-18 ने अपनी एक रिपोर्ट में इसकी जानकारी दी है। नेशनल हाई-स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा राइडरशिप सर्वे कराया जाएगा, जिसमें यात्री संख्या, किराया निर्धारण और ट्रैफिक अनुमान तय किए जाएंगे। सर्वे में यह आकलन किया जाएगा कि कौन-कौन से मौजूदा यात्रा विकल्प जैसे कि कार, टैक्सी, बस, एसी ट्रेन, हवाई यात्रा आदि से यात्री हाई-स्पीड रेल की ओर आकर्षित होंगे। यह सर्वे विशेष रूप से राष्ट्रीय राजमार्गों और एक्सप्रेसवे के आसपास के क्षेत्रों में किया जाएगा। इस रेल लाइन की कुल दूरी 508 किलोमीटर की होगी। गुजरात में करीब यह 348 किमी की दूरी तय करेगी। इसके बाद महाराष्ट्र में लगभग 156 किमी के ट्रैक पर बुलेट ट्रेन दौड़ेगी। महाराष्ट्र में मुंबई, ठाणे, विरार, बोईसर में स्टेशन तैयार किए जा

रहे हैं। वहीं, गुजरात में वापी, बिलीमोरा, सूरत, भरूच, वडोदरा, आनंद, अहमदाबाद, साबरमती स्टेशन बनाए जा रहे हैं। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि अब तक 300 किमी वायाडक्ट का निर्माण हो चुका है। मुंबई के स्टेशन पर 76 प्रतिशत खुदाई का काम पूरा हो चुका है। 383 किमी पियर वर्क, 401 किमी फाउंडेशन और 326 किमी गर्डर कास्टिंग भी पूरी हो चुकी है।

केरल में लाइबेरिया का कार्गो शिप डूबा, देवदूत बने कोस्टगार्ड

- सभी 24 क्रू मेंबर्स का किया रेस्क्यू, नेवी ने भी किया सहयोग

कोच्चि (एजेंसी)। केरल में कोच्चि तट पर लाइबेरिया का कार्गो शिप एल्सा 3 डूब गया। इंडियन कोस्ट गार्ड और नेवी ने सभी 24 क्रू मेंबर्स को बचा लिया गया। शिप पर

लदे 640 कंटेनर्स में कैल्शियम कार्बाइड, डीजल, फर्नेस ऑयल समेत कुछ खतरनाक केमिकल्स भरे थे। शिप 23 मई को केरल के ही विझिनजाम पोर्ट से कोच्चि के लिए रवाना हुआ था। 24 मई को दोपहर करीब 1ः25 बजे कोच्चि तट से 38 समुद्री मील की दूरी पर करीब 26 डिग्री तक झुकने की खबर दी गई।

लालू ने तेज प्रताप को पार्टी और परिवार से निकाला

कहा-उनकी हरकत गैरजिम्मेदाराना, यह बर्दाश्त से बाहर

पटना (एजेंसी)। आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव ने अपने बड़े बेटे तेज प्रताप यादव को पार्टी और परिवार से निकाल दिया है। लालू ने इसकी जानकारी फेसबुक पर पोस्ट करके दी। तेजप्रताप यादव के एक महिला के साथ फोटो और वीडियो वायरल हो रहे हैं। इसमें वह एक लड़की के साथ दिख रहे हैं। यूजर्स तेजप्रताप की दूसरी शादी का दावा कर रहे हैं। लालू प्रसाद ने लिखा- निजी जीवन में नैतिक मूल्यों की अवहेलना करना हमारे सामाजिक न्याय के लिए सामूहिक संघर्ष को कमजोर करता है। ज्येष्ठ पुत्र की गतिविधि, लोक आचरण

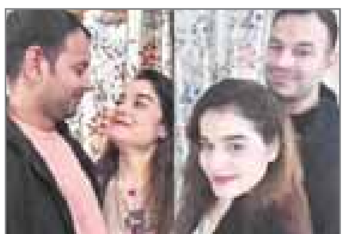

तथा गैर जिम्मेदाराना व्यवहार हमारे पारिवारिक मूल्यों और संस्कारों के अनुरूप नहीं है। अतएव उपरोक्त परिस्थितियों के चलते उसे पार्टी और परिवार से दूर करता हूं। अब से पार्टी और परिवार में उसकी किसी भी प्रकार की कोई भूमिका नहीं रहेगी। उसे पार्टी से 6 साल के लिए निष्कासित किया जाता है। अपने निजी जीवन का भला -बुरा और गुण-दोष देखने में वह स्वयं सक्षम है। उससे जो भी लोग संबंध रखेंगे वो स्वविवेक से निर्णय लें।

60 किमी के रूट पर 35 हजार जवान और 4 हजार कैमरे

पहलगाम (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले के बाद इस साल अमरनाथ यात्रा अपने इतिहास की सबसे कड़ी हाई सिक्योरिटी में होने जा रही है। सीनियर पुलिस अधिकारी ने बताया- 2024 में जहां कुल 40 हजार

- पहलगाम हमले के बाद अमरनाथ यात्रा में होगी हाई सिक्योरिटी

जवान तैनात थे। वहीं इस बार 35 हजार जवानों की तैनाती 60 किमी वाले दोनों यात्रा रूट पर ही रहेगी। इसके अलावा, जम्मू से पवित्र गुफा तक की सुरक्षा 1 लाख जवान संभालेंगे। दोनों रूट हाई रेजोल्यूशन और फेस रिकग्निशन टेक्नोलॉजी वाले 4 हजार सीसीटीवी कैमरों से लैस रहेंगे। इन्हें 6

कंट्रोल रूम से जोड़ा जाएगा। बंकर भी बनाए जा रहे हैं। जम्मू से पवित्र गुफा तक दो यात्रा रूट हैं। पहला- 14 किमी लंबा बालटाल रूट, जो बेस कैंप से गुफा तक 14 किमी लंबा है। दूसरा- पहलगाम रूट जो बेसकैंप से गुफा तक 46 किमी लंबा है। 3 जुलाई से शुरू होने वाली इस तीर्थयात्रा के लिए देशभर से 4 लाख से अधिक श्रद्धालु रजिस्ट्रेशन करा चुके हैं। 46 किमी के पहलगाम रूट पर भारी सुरक्षा श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड के अधिकारी कई विभागों के साथ पहलगाम और बालटाल के दोनों मार्गों पर ट्रैक को साफ करने और सुविधाओं को लेकर काम कर रहे हैं। बालटाल मार्ग से बालटाल, नीलग्रथ डोमेल, ब्रारी मार्ग, संगम, लोअर गुफा और पवित्र गुफा पर शिविर स्थापित किए जा रहे हैं। पहलगाम मार्ग से नंदीवान, चंदनवाड़ी, पिसु टॉप, शेषनाग और पंचतरणी पर भी कैंप बन रहे है। बालटाल और नंदीवान बेस कैंप में दो नए यात्री भवन का निर्माण शामिल है। श्रीनगर के पंथाचौक स्थित 6 मंजिला यात्री निवास की दो और मंजिलें इस साल शुरू होने वाली हैं। इसकी क्षमता 1,000 लोगों की है। स्वच्छता सेवाओं का काम ग्रामीण विकास विभाग सौंपा गया है। 5,000 शौचालय स्थापित किए जा रहे हैं, 2,000 कर्मचारी तैनात किए जाएंगे। हेलीकॉप्टर की बुकिंग जून से शुरू होगी सुरक्षा के अलावा, तीर्थयात्रा के सुचारू संचालन को सुविधाजनक बनाने के लिए भी तैयारियां चल रही हैं। तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए हेलीकॉप्टर सेवाओं की भी व्यवस्था की जा रही है। चंदनवाड़ी मार्ग पर श्रीनगर से पहलगाम और पहलगाम से पंचतरणी तक हेलीकॉप्टर उड़ानें संचालित होंगी। बालटाल मार्ग पर, हेलीकॉप्टर श्रीनगर से नीलग्रथ बालटाल और फिर पंचतरणी तक उड़ान भरेंगे।

अब महाराष्ट्र निकाय चुनाव पर बीजेपी ने टिकाई नजर

- अमित शाह की 'रणनीति' से किला फतह करने की तैयारी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव में बड़ी जीत दर्ज करने के बाद बीजेपी अब राज्य के स्थानीय निकाय चुनाव के लिए जुटने जा रही है। चुनाव में पार्टी की

तैयारियों की समीक्षा के लिए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह नांदेड़ पहुंचे। बताना होगा कि अगले 4 महीने के भीतर महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय के चुनाव होने जा रहे हैं। स्थानीय निकाय चुनाव में जीत के लिए सरकार चला रहे महायुति गठबंधन और विपक्षी महाविकास अघाड़ी महागठबंधन रणनीति बनाने में जुटे हुए हैं।

बॉर्डर पर तैनात जवान की बेटी के दिल में छेद

तबीयत बिगड़ने पर रात में खुला हेल्थ ऑफिस, कुछ ही घंटों में दस्तावेज तैयार कर मुंबई भेजा

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में शनिवार की रात स्वास्थ्य विभाग के लिए किसी इमरजेंसी अलर्ट से कम नहीं थी। सरकारी अवकाश होने के बावजूद रात 8 बजे से 11 बजे तक जिला स्वास्थ्य कार्यालय खुला रहा। कारण था। आर्मी के जवान की एक महीने की मासूम बच्ची की जान बचाना, जिसे दिल में छेद की गंभीर बीमारी थी। कुछ ही घंटों में दस्तावेज तैयार हुए और बच्ची को परिजनों के साथ मुंबई इलाज के लिए रवाना कर दिया गया।

मामला अधारताल निवासी राहुल कुशवाहा की एक माह की बेटी आराध्या का है। बच्ची के पिता भारतीय सेना में पदस्थ हैं और वर्तमान में श्रीनगर बॉर्डर पर तैनात हैं। शनिवार दोपहर आराध्या की तबीयत अचानक बिगड़ गई, शरीर नीला पड़ने लगा।

परिजन उसे तुरंत अस्पताल ले गए। इको जांच में सामने आया कि उसके दिल में जन्मजात छेद है। डॉक्टरों ने सलाह दी कि तत्काल मुंबई रेफर किया जाए, क्योंकि जबलपुर में इसका इलाज संभव नहीं।

सीएमएचओ और जिला प्रबंधक भी लौटे ऑफिस- बच्ची की बिगड़ती हालत को देखते हुए उसकी मां और दादा रामायण कुशवाहा डीईआईसी कार्यालय पहुंचे। चूंकि शाम 5 बजे के बाद कार्यालय

बंद हो चुका था, ऐसे में उन्होंने फोन पर डीईआईसी जिला प्रबंधक सुभाष शुक्ला से संपर्क किया। शुक्ला घर लौट रहे थे, लेकिन जैसे ही उन्हें मासूम की हालत की जानकारी मिली, वे तुरंत वापस कार्यालय पहुंचे। सीएमएचओ डॉ. संजय मिश्रा को भी सूचना दी गई, और वे भी रात को कार्यालय पहुंचे।

कुछ ही देर में पूरा स्टाफ कार्यालय बुलाया गया। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत आराध्या के इलाज के लिए सभी दस्तावेज तैयार किए गए। रात में ही डॉक्टरों से संपर्क हुआ, और रेलवे टिकट की भी व्यवस्था कर बच्ची को परिवार समेत मुंबई के नारायणा अस्पताल के लिए रवाना किया गया।

मुख्यमंत्री बाल हृदय योजना के तहत होगा इलाज

जिला प्रबंधक सुभाष शुक्ला ने बताया कि बच्ची की हालत बेहद नाजुक थी। समय की संवेदनशीलता को समझते हुए पूरी टीम ने तीन घंटे के भीतर सभी औपचारिकताएं पूरी कीं। मुंबई के डॉक्टरों से बातचीत कर व्यवस्था सुनिश्चित की गई। उन्होंने बताया कि आराध्या का पूरा इलाज मुख्यमंत्री बाल हृदय योजना के तहत निःशुल्क किया जाएगा।

सेना में तैनात पिता श्रीनगर में, बच्ची को देख तक नहीं पाए

राहुल कुशवाहा की बच्ची का जन्म करीब एक महीने पहले 26 अप्रैल 2025 को हुआ था। उसी दौरान भारत-पाक सीमा पर तनाव बढ़ गया और उन्हें दो दिन बाद ड्यूटी पर श्रीनगर जाना पड़ा। जन्म के बाद से ही आराध्या की तबीयत बिगड़ रही थी, लेकिन शनिवार को हालत गंभीर हो गई।

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम बना संजीवनी

सीएमएचओ डॉ. संजय मिश्रा ने बताया कि राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य योजना के अंतर्गत 0 से 18 वर्ष तक के बच्चों के जन्मजात विकृतियों जैसे दिल में छेद, कटे होंठ, पैरों का टेढ़ापन, नेत्र विकार आदि का इलाज निश्शुल्क किया जाता है।

मोहसिन खान पर चौथी एफआईआर धोखाधड़ी की

राइफल दिलाने के नाम पर ध्रुव महाजन से लिए 2 लाख 80 हजार रुपए, सात साल में नहीं लौटाए

इंदौर (एजेंसी)। शूटिंग एकेडमी में छात्राओं के साथ अश्लील हरकत और रेप के मामले में गिरफ्तार मोहसिन खान पर अब धोखाधड़ी का केस दर्ज किया गया है। इसे मिलाकर मोहसिन पर चार केस दर्ज हो चुके हैं। धोखाधड़ी का केस ध्रुव महाजन ने शुक्रवार रात को दर्ज कराया। इस मामले में भी पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

मोहसिन पर चौथी एफआईआर दर्ज- एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच राजेश दंडोतिया ने बताया कि ध्रुव महाजन साल 2018 में मोहसिन की एकेडमी में जाता था। वह वहां ट्रेनिंग ले रहा था। मोहसिन ने पहले तो उसे अपने झांसे में लिया कि तुम्हारा खेल काफी अच्छा है। आगे तक जा सकते हो और परफॉर्मेंस काफी अच्छा हो सकता है। बस अच्छी राइफल खरीद लो। हिंदू संगठन के सदस्यों का दावा है कि मोहसिन खान ने 100 से

ज्यादा युवतियों को शिकार बनाया है।

राइफल के एवज में लिए 2 लाख 80 हजार- मोहसिन की बातों में आकर फरियादी ने उसे 2 लाख 80 हजार रुपए राइफल के लिए दे दिए। काफी समय बाद भी मोहसिन ने युवक को न तो राइफल दी और न ही पैसे वापस लौटाए। तब से युवक चुप था पर ड्रीम ओलिंपिक शूटिंग एकेडमी के मोहसिन खान का छात्राओं से अश्लील हरकत करने और रेप का मामला उजागर हुआ तो युवक भी आगे आया और थाना में शिकायत की। पुलिस को आरोपी के मोबाइल से नकली नोटों की डील करने के मैसेज भी मिले हैं।

एकेडमी की रसीद भी पुलिस को दी

दंडोतिया ने बताया कि फरियादी ने 2 लाख 80 हजार रुपए की रसीद भी पुलिस को उपलब्ध कराई है, जो मोहसिन की एकेडमी की ही है। सात साल से ज्यादा समय बाद फरियादी ने मोहसिन के खिलाफ मामले में शिकायत की है। अन्नपूर्णा पुलिस ने युवक की शिकायत पर मोहसिन पर धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया है। दंडोतिया ने बताया कि मोहसिन पर एक रेप की, दो छेड़छाड़ और एक धोखाधड़ी के मामले में एफआईआर दर्ज की।

रेप-छेड़छाड़ के आरोपी मोहसिन के दोनों भाई, मामा भी कोच

इंदौर में ड्रीम ओलिंपिक शूटिंग एकेडमी में छात्राओं और युवतियों से रेप और अश्लील हरकत करने के मामले में रोज नए खुलासे हो रहे हैं। आरोपी कोच मोहसिन खान को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। बताया जा रहा है कि मोहसिन खान के साथ उसके मामा और दो भाई भी कोच हैं। वे भी ट्रेनिंग देते हैं। तीन भाइयों में सबसे बड़ा इमरान, साजिद और सबसे छोटा मोहसिन है। मोहसिन की गिरफ्तारी के बाद से दोनों भाई गायब हैं।

नौतपा के पहले दिन इंदौर में तेज धूप नहीं रही, बारिश होगी

4 दिन तक आंधी का भी अलर्ट; दो दिनों से तापमान 34 डिग्री सेल्सियस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में इन दिनों तापमान में गिरावट है। दो दिनों से पारा 34 डिग्री सेल्सियस बना हुआ है। इसके साथ ही दिन में बादलों के साथ काफी उमस है। आज से नौतपा शुरू हो रहा है लेकिन मौसम एकदम बदला हुआ है। सुबह से बादल छाए हैं। मौसम वैज्ञानिकों ने आज तेज आंधी के साथ बारिश के आसार जताए हैं। दरअसल, इस बार मई बारिश के सीजन के जैसा ही रहा है। नौतपा में इस बार आंधी-बारिश वाला मौसम रहेगा।

इस दौरान हवा की रफ्तार 30 से 50 किलोमीटर प्रतिघंटा तक रह सकती है। इससे पहले शनिवार को भी इंदौर में तेज हवा चली और बादल छाए थे। आज भी मौसम का मिजाज कुछ ऐसा ही है। शुक्रवार को दिन का तापमान 34.4 (-6) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था जबकि रात का तापमान 26.4 (+1) डिग्री सेल्सियस था। शनिवार को दिन का तापमान 34.9 (-5) डिग्री सेल्सियस रहा जबकि रात का तापमान 26.5 (+1) डिग्री सेल्सियस रहा। इस तरह दिन का तापमान सामान्य से 5 डिग्री कम और रात का तापमान सामान्य से 1 डिग्री ज्यादा है। शनिवार शाम को बादलों के छाने के साथ बारिश के आसार बने लेकिन नहीं हुई। मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा के मुताबिक दो साइक्लोनिक सर्कुलेशन और एक ट्रफ की वजह से मौसम का मिजाज बदला हुआ है। इस वजह से आने वाले चार दिन तक आंधी और बारिश का अलर्ट जारी किया है। इस दौरान इंदौर और आसपास के क्षेत्रों में तेज हवा के साथ बारिश के आसार हैं।

भस्म आरती दर्शन

बाबा महाकाल का रजत मुकुट, आभूषण, पुष्प और रुद्राक्ष की माला से हुआ श्रृंगार

उज्जैन (एजेंसी)। विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में रविवार तड़के (चार बजे) भस्म आरती के दौरान मंदिर के पट खुलते ही पंडे-पुजारी ने गर्भगृह में स्थापित सभी भगवान की प्रतिमाओं का पूजन कर भगवान महाकाल का जलाभिषेक और

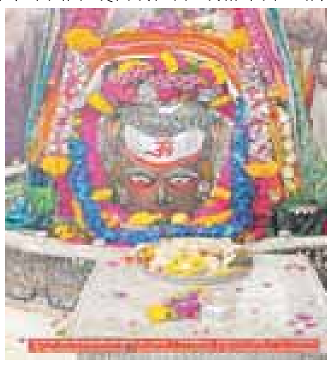

दूध, दही, घी, शकर, फलों के रस से बने पंचामृत से पूजन किया। प्रथम घंटाल बजाकर हरि ओम का जल अर्पित किया। कपूर आरती के बाद भगवान के मस्तक पर भांग, चंदन और त्रिपुण्ड अर्पित किया। बाबा महाकाल के मस्तक पर ऊँ, सिर पर रजत मुकुट और आभूषण अर्पित कर श्रृंगार किया। श्रृंगार पूरा होने के बाद ज्योतिर्लिंग को कपड़े से ढांककर भस्मी रमाई गई। भगवान महाकाल का भांग, ड्रायफ्रूट, चंदन, आभूषण और फूलों से राजा स्वरूप में श्रृंगार किया गया। भस्म अर्पित करने के बाद शेषनाग का मुकुट, रजत की मुण्डमाल और रुद्राक्ष की माला के साथ-साथ सुगंधित पुष्प से बनी फूलों की माला अर्पित की। भगवान महाकाल ने मोगरे और गुलाब के सुगंधित पुष्प धारण किए। फल और मिष्ठान का भोग लगाया, भस्म आरती में बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने बाबा महाकाल का आशीर्वाद लिया। महा निर्वाणी अखाड़े की ओर से भगवान महाकाल को भस्म अर्पित की गई। मान्यता है की भस्म अर्पित करने के बाद भगवान निराकार से साकार रूप में दर्शन देते हैं।

प्लेटफॉर्म पर हरियाली, सोलर से बिजली भी बचा रहे

इंदौर (एजेंसी)। रेलवे स्टेशन पर रेलवे ने प्लेटफॉर्म 1 और 2 के बीच हरियाली के लिए बगीचा विकसित कर दिया

है। हालांकि ट्रेनों की आवाजाही के चलते ऊंचाई वाले पौधे नहीं लगाकर छोटे पौधे लगाए। ये देखने में भी आकर्षक हैं। इसका फायदा यह हुआ कि प्लेटफॉर्म के बीच अब गंदगी भी नहीं होती। वहीं दूसरी ओर रेलवे ने प्लेटफॉर्म पर सोलर ऊर्जा के लिए सोलर पैनल भी लगा दिए हैं। प्लेटफॉर्म 1 पर 20 किलोवॉट, जबकि प्लेटफॉर्म 5 व 6 पर 250 किलोवॉट का सोलर पैनल लगाया है। इससे रेलवे को हर महीने करीब 1.75 लाख रुपए की बिजली की बचत होने लगी है।

जिला अस्पताल में कचरे की तरह दवाएं फेंकने के मामले में स्टोर कीपर निलंबित

इंदौर (एजेंसी)। जिला अस्पताल परिसर में स्थित मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के दवा स्टोर में भारी मात्रा में एक्सपायरी दवा मिलने के मामले में कलेक्टर आशीष सिंह ने स्टोर कीपर सत्यप्रकाश इंगले को निलंबित कर दिया है। दवाओं के साथ बड़ी संख्या में पीपीई किट और मास्क भी मिले हैं। प्रशासन ने हिदायत दी है कि जब तक बैच नंबर सहित सभी जानकारी नहीं जुटाई जाती, तब तक दवाइयों को डिस्पोज नहीं किया जाए। उधर, डॉ. एस सिसौदिया, डॉ. मुकेश गुप्ता और दौलत पटेल की टीम स्टोर पहुंची। दवाइयों की लिस्टिंग के लिए कहा, लेकिन शनिवार देर शाम तक लिस्ट नहीं बन पाई। मामले में स्टोर के नोडल अधिकारी डॉ. आशुतोष शर्मा ने कहा, मुझे सिर्फ चार महीने पहले ही चार्ज मिला है। दवाइयां कब खरीदी, यह पिछले स्टोर इंचार्ज ही बता पाएंगे। वहीं, पूर्व नोडल अधिकारी डॉ. वीरेंद्र राजवीर ने कहा, मैं दो साल पहले ही स्टोर की जिम्मेदारी से मुक्त हो चुका हूं। मुझे इसकी जानकारी नहीं है।

इंदौर की कंपनी पर रैनसमवेयर अटैक

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के बाणगंगा थाना क्षेत्र स्थित एक निजी कंपनी के मेन सर्वर को हैक कर लिया गया। हैकर्स ने सर्वर की स्क्रीन पर धमकी भरा मैसेज दिखाया, जिसमें कहा गया कि डेटा चोरी कर लिया गया है। अगर फिरौती (रैनसम) नहीं दी गई, तो पूरा डेटा सार्वजनिक कर दिया जाएगा। कंपनी के जीएम की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। मामले की जांच क्राइम ब्रांच को सौंपी गई है। एडिशनल डीसीपी (क्राइम ब्रांच) राजेश दंडोतिया ने बताया कि यह एक रैनसमवेयर अटैक है, जो काफी खतरनाक माना जाता है।

इंदौर क्राइम ब्रांच की बड़ी कार्रवाई

1.048 किलोग्राम चरस के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर क्राइम ब्रांच ने 1.048 किलोग्राम चरस के साथ शनिवार रात दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों में अब्दुल रईस (48 वर्ष) निवासी बड़वानी और मोहम्मद बाबर (40 वर्ष) निवासी मल्हार पलटन शामिल हैं। दोनों आरोपी चरस की सप्लाई के इरादे से इंदौर आए थे। एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच राजेश दंडोतिया ने बताया कि क्राइम ब्रांच की टीम संदिग्ध वाहनों की चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान लक्ष्मीबाई नगर रोड स्थित इंडस्ट्रियल एरिया में एक संदिग्ध कार नजर आई। कार में बैठे दोनों व्यक्ति पुलिस को देखकर घबरा गए, जिससे संदेह और गहरा गया। पुलिस टीम ने तत्परता दिखाते हुए घेराबंदी कर कार को रोका और तलाशी ली। जिसमें उनके पास से 1.048 किलोग्राम चरस बरामद हुई। प्रारंभिक पूछताछ में दोनों ने खुलासा किया कि वे स्वयं भी नशा करते हैं और सस्ते दामों पर चरस लाकर शहर में सप्लाई करने की योजना बना रहे थे। क्राइम

क्राइम ब्रांच की टीम को देख घबरा गए थे आरोपी

ब्रांच ने आरोपियों के कब्जे से एक हुंडई कार भी जब्त की है। जब्त चरस की कीमत 3 लाख रुपए बताई जा रही है। वहीं 4 लाख की कार भी जब्त की गई है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ जारी है और पुलिस यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि इनके संपर्क में और कौन-कौन लोग शामिल हैं।

पुराना रिकॉर्ड खंगाल रही पुलिस- एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया ने बताया कि आरोपी चरस कहां से लेकर आ रहे थे और कहां सप्लाई करना थी, इसे लेकर पूछताछ की जा रही है। इसके अलावा आरोपियों के पुराने रिकॉर्ड भी खंगाले जा रहे हैं। ताकि पता चल सके कि आरोपी नशीले पदार्थों का कारोबार तो नहीं करते हैं।

कबाड़ और दर्जी का काम करते हैं आरोपी

आरोपी अब्दुल रईस ने पुलिस की पूछताछ में बताया कि वह शर्ट में काज-बटन लगाने का काम करता है। जल्दी रुपए कमाने के इरादे से चरस की तस्करी में शामिल हो गया। आरोपी के विरुद्ध थाना सदर बाजार एवं मल्हारगंज में लड़ाई-झगड़े, जान से मारने की धमकी, जुआ एक्ट में 2 अपराध पहले से पंजीबद्ध हैं। वहीं मोहम्मद बाबर कबाड़ी का काम करता है। जल्दी रुपए कमाने के इरादे से चरस तस्करी में शामिल हो गया। आरोपी के विरुद्ध थाना सदर बाजार में एनडीपीएस एक्ट में पहले से अपराध पंजीबद्ध है।

इंदौर के राजवाड़ा से महिला सशक्तिकरण दौड़

देवी अहिल्याबाई होलकर को समर्पित मैराथन ; विधायक-सांसद हुए शामिल

इंदौर (एजेंसी)। लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जन्म जयंती के अवसर पर रविवार सुबह महिला सशक्तिकरण मैराथन का आयोजन किया गया। यह मैराथन राजवाड़ा से शुरू हुई। सबसे पहले यहां लगे मंच से महिलाओं की एक टीम ने जुम्बा किया। इस दौरान वहां मौजूद अन्य महिलाओं ने भी मंच के नीचे जुम्बा में हिस्सा लिया। कार्यक्रम की प्रभारी वृंदा गौड़ ने बताया कि यह दौड़ नारी शक्ति और माता अहिल्याबाई को समर्पित रही। सुबह 6 बजे शुरू हुई इस मैराथन में बड़ी संख्या में खेल संगठनों और आम नागरिकों ने हिस्सा लिया। इसके अलावा बीएसएफ के जवानों सहित कई महिलाओं और बालिकाओं ने भी दौड़ में भाग लिया। कोचिंग क्लास के छात्रों ने भी इसमें भागीदारी की। रास्ते में दौड़ में शामिल लोगों को पानी और ड्राय फ्रूट दिए गए।

युवक ने जहर खाया, इलाज के दौरान मौत

घर से जहर खाकर निकला, तकलीफ हुई तो अस्पताल पहुंचा,चार दिन से चल रहा था इलाज

इंदौर (एजेंसी)। एरोड्रम थाना क्षेत्र में रहने वाले 50 वर्षीय जितेंद्र मालवीय ने जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या का प्रयास किया था। इलाज के दौरान शुक्रवार को एमवाय अस्पताल में उनकी मौत हो गई। परिजनों ने आरोप लगाया है कि जिस फर्म में जितेंद्र काम करते थे, उसी के मालिक और सीए ने पहले उनके नाम से और बाद में उनकी पत्नी के नाम से फर्जी फर्म खोलकर जीएसटी का गबन किया। साथ ही, नौकरी से भी निकाल दिया। एरोड्रम पुलिस के अनुसार, सोमानी नगर निवासी जितेंद्र मालवीय 20 मई को जहरीला पदार्थ खाकर घर से निकले थे। रास्ते में सीने में दर्द हुआ, तो खुद ही अस्पताल पहुंच गए। बाद में परिजनों को पता चला तो वह भी अस्पताल पहुंच गए। उनका एमवाय और सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में चार दिन इलाज चला। शनिवार को पुलिस ने उनका पीएम कराया और शव परिजनों को सौंप दिया। साथ ही पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है। अधिकारियों का कहना है कि आरोपों की पुष्टि के लिए दस्तावेजों की जांच की जा रही है।

नीट यूजी की एग्जाम से अधिकारियों ने लिया सबक

इंदौर में 36 केंद्रों पर यूपीएससी परीक्षा हुई

यूपीएससी में 14 हजार परीक्षार्थी शामिल हुए

इंदौर (एजेंसी)। यूपीएससी यानी संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सर्विसेज प्रारंभिक परीक्षा-2025 आज रविवार 25 मई को हुई। इस परीक्षा के लिए इंदौर में 36 परीक्षा केंद्र बनाए गए थेजिन पर 14,692 परीक्षार्थी पेपर हल करेंगे। परीक्षा पहले सत्र में सुबह 9.30 बजे शुरू हुई,दूसरे सत्र में दोपहर 2.30 बजे से शाम 4.30 बजे तक आयोजित हुई। खास बात यह है कि परीक्षा करा रहे अधिकारियों ने नीट परीक्षा से सबक लिया है। बिजली कंपनी के अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए थे कि परीक्षा केंद्रों पर सुबह 7 से शाम 7 बजे तक बिजली सप्लाई बाधित न हो।

नीट की परीक्षा में हुई थी बिजली गुल- नीट परीक्षा 4 मई को आयोजित हुई थी। परीक्षा के बीच आंधी और बारिश के कारण इंदौर-

बिजली बाधित न होने की दी थी कड़ी हिदायत

उज्जैन के 24 परीक्षा केंद्रों पर बिजली गुल होने से परीक्षार्थी ठीक से पेपर हल नहीं कर पाए। यह मामला कोर्ट में चल रहा है। ऐसे में यूपीएससी परीक्षा में वैकल्पिक बिजली, पानी व्यवस्था रखने, रास्ते और शौचालय की सफाई रखने को कहा है। बता दें कि इस बार यूपीएससी परीक्षा के लिए 9.48 लाख से अधिक उम्मीदवारों ने आवेदन किया है। देश के 80 केंद्रों के 2368 स्थलों पर परीक्षा आयोजित हुई।

कमिश्नर दीपक सिंह ने ली थी बैठक

यूपीएससी परीक्षा की तैयारियों को लेकर इंदौर में शनिवार को कमिश्नर दीपक सिंह ने बैठक ली थी। उन्होंने निर्देश दिए कि यूपीएससी परीक्षा देश की शीर्ष परीक्षाओं में से एक है। इसका संचालन सुचारू रूप से हो। सभी व्यवस्थाओं का विशेष रूप से ध्यान रखा जाए। परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो। बैठक में एडिशनल पुलिस कमिश्नर अमित सिंह, डिप्टी कमिश्नर (रेवेन्यू) शैली कनाश, संघ लोक सेवा आयोग नईदिल्ली के उप सचिव नीरज कुमार, आईडीए सीईओ आरपी अहिरवार सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

चीन और बांग्लादेश से कपड़ों का व्यापार बंद

इंदौर के व्यापारियों ने 20 करोड़ का माल लौटाया; महीने में 125 करोड़ का होता है कारोबार

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के व्यापारी चीन और बांग्लादेश के कपड़े नहीं बेचेंगे। वे इनके बहिष्कार की मुहिम चला रहे हैं। दुकानों के बाहर पोस्टर लगा दिए गए हैं। पुराने माल को पहले ही वापस कर दिया है। सारा लेन-देन भी पूरा कर लिया गया। व्यापारियों ने पिछले 10 से 12 दिन में करीब 20 करोड़ रुपए का चीनी माल वापस कर दिया है। यही नहीं रिटेल गारमेंट्स एसोसिएशन के सदस्य अपने ग्राहकों से भी अपील कर रहे हैं कि वे ऑनलाइन भी इन देशों का सामान ना खरीदें। अब तक 22 हजार से ज्यादा ग्राहकों से संपर्क किया जा चुका है। कॉल के माध्यम से लगातार यह काम जारी है। इस मुहिम में जुड़ने के लिए इंदौर के बाहर के व्यापारियों से भी संपर्क कर रहे हैं। बता दें, इंदौर में चीन से हर महीने करीब 75 करोड़ रुपए और बांग्लादेश से 30 से 35 करोड़ रुपए महीने का गारमेंट्स आता है। आसपास के शहरों में भी 40 से 50 करोड़ रुपए का व्यापार होता है। यानी सभी मिलाकर लगभग 125 करोड़ रुपए का व्यापार होता है।

इसलिए व्यापारियों ने लिया निर्णय

दरअसल, पहलगाम आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन और बांग्लादेश पाकिस्तान समर्थन में खड़े नजर आए थे। इसके चलते इंदौर रिटेल गारमेंट्स एसोसिएशन के व्यापारियों ने यहां के कपड़ों का व्यापार बंद करने का फैसला लिया है। प्लानिंग के अनुसार 10-12 दिन पहले ही डिस्ट्रिब्यूटरों से इन कपड़ों को मंगाना बंद कर दिया था। जो माल व्यापारियों के पास था उसे लौटाना शुरू कर दिया। नए ऑर्डर भी कैंसिल कर दिए। इसके बाद बुधवार को व्यापारियों ने चीन-बांग्लादेशी कपड़े नहीं बेचने का फैसला लिया। उन्होंने भगवान के सामने शपथ ली थी। फिर अपनी दुकानों के बाहर पोस्टर लगा दिए, जिसमें लिखा है कि हम चीन और बांग्लादेश के कपड़े नहीं बेचेंगे।

फाइबर गारमेंट्स की ज्यादा डिमांड

इंदौर के मार्केट में फाइबर की टी-शर्ट, टॉप्स, किड्स वियर, वूलन, डेनिम, होजियरी सहित कई गारमेंट्स चीन से आते हैं। फाइबर गारमेंट्स लोगों को ज्यादा आकर्षित करता है। बांग्लादेश से डेनिम और होजरी ज्यादा आता है। यह माल बड़े पैमाने पर बिकता है। इंदौर में किड्स वियर की काफी डिमांड है। व्यापारियों का कहना है कि बांग्लादेश और चीन के माल की जगह लुधियाना से होजरी मंगाएंगे। अहमदाबाद से डेनिम, शूटिंग शर्टिंग का माल लाएंगे।

संपादकीय

देश में फिर कोरोना की दस्तक

दुनिया के साथ-साथ देश में भी खतरनाक कोविड 19 वायरस फिर दस्तक देने लगा है। बीते 24 घंटों में भारत में कोरोना के कारण दो लोगों की मौत हो गई है और 27 नए मामले सामने आए हैं। हालांकि अधिकृत जानकारी के अनुसार इलाज के बाद कोरोना एक्टिव मरीज 363 भी हुए हैं। इस बीच राजधानी नई दिल्ली में स्वास्थ्य मंत्रालय ने दिल्ली में बैठक कर स्थिति की समीक्षा की है। देश में कोरोना के ज्यादातर नए मामले केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक राज्यों से सामने आ रहे हैं। कर्नाटक और महाराष्ट्र में एक एक व्यक्ति की मौत की खबर है। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव ने समीक्षा बैठक में में इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर), स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर), डायरेक्टर जनरल हेल्थ सर्विसेज (डीजीएचएस) और नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल (एसीडीसी) के अधिकारी शामिल हुए। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार भारतीय SARS-CoV-2 जीनोमिक्स कंसोर्टियम के मुताबिक भारत में कोविड-19 के वेरिएंट NB.1.8.1 का एक और LF.7 प्रकार के चार मामले मिले हैं। चीन और एशिया के बढ़ते मामलों में यही वैरिएंट दिख रहा है। हालांकि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे 'चिंताजनक' नहीं माना है, लेकिन निगरानी में रखे गए वैरिएंट के रूप में कैटेगराइज किया है। हालांकि NB.1.8.1 के 435S, V445H, और T478I जैसे स्पाइक प्रोटीन म्यूटेशन अन्य वेरिएंट की तुलना में तेजी से फैलते हैं। इन पर कोविड के खिलाफ बनी इम्युनिटी का भी असर नहीं होता। भारत में JN.1 वैरिएंट सबसे आम है। टेस्टिंग में आधे से ज्यादा सैंपल में यह वैरिएंट मिलता है। इसके बाद BA.2 (26 प्रतिशत) और ओमिक्रॉन सबलाइनेज (20 प्रतिशत) वैरिएंट के मामले भी मिलते हैं। JN.1 वैरिएंट इम्यूनिटी कमजोर करता है JN.1, ओमिक्रॉन के BA2.86 का एक स्ट्रेन है। अमेरिका के जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी के अनुसार JN.1 अन्य वैरिएंट्स की तुलना में ज्यादा आसानी से फैलता है, लेकिन यह बहुत गंभीर नहीं है। बेशक वैज्ञानिक इसे बहुत गंभीर नहीं मान रहे हैं, फिर भी कोरोना को लेकर सावधानी बरतना और कोरोना प्रोटोकॉल का पालन जरूरी है। महाराष्ट्र में किए गए एक सर्वे में सुझाव दिया गया है कि कोमोरबिडिटी वाले लोगों को टेस्ट कराना चाहिए, क्योंकि वे कोविड के जोखिमों के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि कोरोना का नया वेरिएंट आने तक हम सुरक्षित हैं। फिलहाल सिंगापुर, चीन, हांगकांग आदि देशों में इसके मामले ज्यादा पाए गए हैं। लेकिन हमे भी सतर्कता बरतने की जरूरत है। क्योंकि यह पूरे देश को चपेट में ले सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने लोगों से मास्क पहनने, भीड़-भाड़ वाली जगहों से बचने और नियमित रूप से हाथ धोने की सलाह दी है। सरकार ने लोगों से कोविड वैक्सीन की बूस्टर डोज लेने और लक्षण दिखने पर तुरंत टेस्ट कराने की अपील की है। साथ ही, स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों में कोविड प्रोटोकॉल को फिर से लागू करने पर विचार किया जा सकता है। ये देश चार साल पहले आई कोरोना की दूसरी लहर को कभी नहीं भूल सकता, जब कोरोना के अत्यंत घातक डेल्टा वेरिएंट ने लाखों लोगों को मौत की नींद सुला दिया था। लोग अपने परिजनों का अंतिम संस्कार करने में भी डर रहे थे। हालांकि तब भी आइसोलेशन, दवाओ और वैक्सीन ने उस कोरोना को मात दी थी। दिक्कत यह है कि कोरोना का वायरस कभी पूरी तरह मरता नहीं है। वह भेस बदलकर फिर लौट आता है। इस बार भी वही हो रहा है। अच्छी बात यहहै कि कोरोना की पहली लहर की तुलना में कोरोना से हमारा सुरक्षा चक्र ज्यादा मजबूत है। कोरोना के व्यवहार और घातकता के बारे में हमारे पास अधिक जानकारी है और हम मानसिक रूप से भी इसके लिए तैयार हैं।

न्यायपालिका को खुद बचानी होगी अपनी साख

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

पिछले कई दशकों से जजों के चयन का कॉलेजियम सिस्टम बहस के घेरे में है। कॉलेजियम सिस्टम में जज साहब ही जजों की नियुक्ति करते हैं और जाति-परिवार और चौम्बर तीनों बीमारियाँ इस चयन में देखी जाती है। कॉलेजियम सिस्टम जातिवाद के संरक्षण का एक मजबूत कवच भी बना हुआ है, जो उच्च न्यायपालिका को जाति-परिवार और चौम्बर, के आरोप से बचाता है। परिणामस्वरूप उनके फैसलों में भी चतुराई से जाति श्रेष्ठता और हिस्सेदारी को बचाया जाता है। यद्यपि सरकार के हस्तक्षेप से काफी हद तक यह मुक्त रहते हैं और सरकार तथा न्याय पालिका में एक अंतर टकराव भी नजर आता है। पिछले कई दशकों से सरकारें यह प्रयास कर रही हैं कि कॉलेजियम सिस्टम को हटाकर राष्ट्रीय न्यायिक आयोग बनाया जाये जिसके माध्यम से न्यायाधीशों का चयन हो। और जस्टिस वर्मा, जस्टिस मिश्रा की घटना के बाद यह बहस फिर शुरू हुई।

जस्टिस वर्मा के घर पर आग के बाद जो खबरें देश में आई उनसे आम लोगों के दिमाग में एक ही बात उठी है कि न्यायपालिका भी अब ईमानदार नहीं बची है और संदेह के घेरे में है। वैसे भी यह चर्चा आमजन में हो रही है कि न्यायपालिका ईमानदार नहीं है, और न्यायपालिका के भ्रष्टाचार के किस्से आमजनों की जुबान पर चर्चा में होते हैं। अपने 60 के दशक से वकालत के कार्यकाल में मैंने स्वतः भी ऐसी कई घटनायें सुनी और जानी हैं जिनमें न्यायपालिका के भ्रष्टाचार और ईमानदारी के उच्चतम मूल्यों की भी घटनायें थीं।

वैसे भी कोई संस्था चाहे व राजनैतिक हो, न्यायपालिका हो, उच्च सेवा की हो, न संपूर्णतः ईमानदार होती है न संपूर्णतः भ्रष्टाचारी। दोनों प्रकार के उदाहरण मिल जाते हैं परंतु दिल्ली हाईकोर्ट के जज श्री वर्मा के घर में लगी आग ने देश की न्यायपालिका की साख को भी आग से जलाया है।

उसके कई प्रकार के परिणाम संभावित हैं। एक तरफ न्यायपालिका के भ्रष्टाचार व उनकी कार्यशैली पर गंभीर प्रश्न चिन्ह लगना शुरू हुये। जस्टिस वर्मा ने जो सफाई दी है कि जो जले नोटों की गड्डी जो उनके स्टोर रूम में थी, उससे उनका कोई संबंध नहीं है। यह बात आम लोगों के गले नहीं उतर रही है। यद्यपि सुप्रीम कोर्ट ने इन हाउस जांच कराई है जिसकी रपट सी.जे.आई. को सौंप दी गई है। परंतु आम लोगों में बहस यह है कि जो जज साहब कड़ी सुरक्षा में रहते हैं, जिनके घर में कोई बिना अनुमति के प्रवेश भी नहीं कर सकता तो नोटों से भरी बोरियां कैसे पहुँची होगी? अगर कोई सुरक्षाकर्मी या सेवाकर्मी की यह बोरियां हैं तो क्या वे बगैर जज साहब की जानकारी के आई होंगी? या वे लोग जज साहब के सौरभ शर्मा हैं कि जो सिपाही रहते हुये 50 करोड़ का सोना अपनी गाड़ी में रख सकता है और कह सकता है कि यह मेरा नहीं है। हालांकि दोनों जांचों के यानि मप्र के सौरभ शर्मा प्रकरण और जस्टिस वर्मा के प्रकरण में फर्क है। सौरभ शर्मा के प्रकरण की जांच राज्य की जांच एजेंसियां राज्य सरकार की निगरानी में कर रही है इसलिये यह चमत्कार संभव है कि इतने बड़े सोने के जखीरे के मालिक का पुलिस पता न लगा सके, वह डायरी ही लापता हो जाये जिसमें सांकेतिक नाम थे और सरकार भी बरी हो जाये कि सौरभ शर्मा की नियुक्ति नियमानुसार हुई है। मुझे लगता है कि सुप्रीम कोर्ट की इन हाउस जांच इतनी चमत्कारी नहीं होगी। देश के वाचाल उपराष्ट्रपति श्री जगदीश धनखड़ ने यह कहकर कि किसी और के घर पर मिलते तो वह जेल में होता, इस बहस को और हवा दे दी है।

जस्टिर वर्मा अग्निकांड के पहले जब-जब उच्च न्यायपालिका के माननीय न्यायाधीशों के खिलाफ कोई शिकायतें आयी हैं तो केवल एक जस्टिस कर्णन को छोड़कर किसी और प्रकरण में कोई कार्यवाही हुई हो ऐसा मुझे ध्यान नहीं आ रहा। एक जज साहब के खिलाफ तो संसद में महाभियोग पारित होने वाला था परंतु यह सूचना देकर कि वे इस्तीफा देंगे, महाभियोग वापिस हो गया और जज साहब ने अपना कार्यकाल बगैर इस्तीफा दिये पूरा किया। यद्यपि जस्टिस कर्णन के ऊपर हुई कार्यवाही में सही मानता हूँ। पर न अनुसूचित जाति के लोगों के मन में यह भावना है कि उनके ऊपर कार्यवाही इसलिये हुई क्योंकि वे दलित थे। वैसे भी कई जज साहबान अपने आप को देवपुरुष तो क्या देवता मानने लगे हैं जिनके पास कुछ भी कहने और करने का अधिकार है। इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक जज राममनोहर नारायण मिश्रा ने एक प्रकरण की सुनवाई करते हुये अपराधी को बरी किया और कहा कि किसी बच्ची के निजी अंग पकड़ना, उसके पायजामे की डोरी को तोड़ना, उसे घसीटने की कोशिश करना, यह पास्को अपराध की व्याख्या में नहीं आता, जबकि सुप्रीम कोर्ट ने कुछ समय पहले एक निर्णय में कहा था कि किसी बच्ची को आपराधिक तरीके से स्पर्श करना भी पास्को कानून की श्रेणी जैसा अपराध है। यह एक प्रकार से जज साहब की अराजक मानसिकता और न्यायप्रणाली की आंतरिक अराजकता का भी संकेत है। ऐसी अशोभनीय टिप्पणियां या अव्यवहारिक, अनुचित टिप्पणियां न्यायपालिका के जज साहबान अमूमन करते हैं।

पिछले कई दशकों से जजों के चयन का कॉलेजियम सिस्टम बहस के घेरे में है। कॉलेजियम सिस्टम में जज साहब ही जजों की नियुक्ति करते हैं और जाति-परिवार और चौम्बर तीनों बीमारियाँ इस चयन में देखी जाती है। कॉलेजियम सिस्टम जातिवाद के संरक्षण का एक मजबूत कवच भी बना हुआ है, जो उच्च न्यायपालिका को जाति-परिवार और चौम्बर, के आरोप से बचाता है। परिणामस्वरूप उनके फैसलों में भी चतुराई से जाति श्रेष्ठता और हिस्सेदारी को बचाया जाता है। यद्यपि सरकार के हस्तक्षेप से काफी हद तक यह मुक्त रहते हैं और सरकार तथा न्याय पालिका में एक अंतर टकराव भी नजर आता है। पिछले कई दशकों से सरकारें यह प्रयास कर रही हैं कि कॉलेजियम सिस्टम को हटाकर राष्ट्रीय न्यायिक आयोग बनाया जाये जिसके माध्यम से न्यायाधीशों का चयन हो। और जस्टिस वर्मा, जस्टिस मिश्रा की घटना के बाद यह बहस फिर शुरू हुई।

दरअसल हमारे देश और संविधान में न्यायाधीशों के लिये अपने सेवाकाल या कार्यकाल में आपराधिक कार्यवाही से मुक्ति दी गई है और उस समय की संविधान सभा की यह सोच थी कि न्यायपालिका की स्वतंत्रता और सरकार के भय व दबाव से मुक्ति के लिये उन्हें यह मुक्ति दी जाना चाहिये। परंतु इस प्रावधान का प्रयोग न्यायपालिका के अपराधों को छिपाने या बचाने के लिये होता है। जस्टिस वर्मा जैसी घटनाओं के बाद अब सरकार को न्यायपालिका के चयन के कॉलेजियम सिस्टम जो न्यायपालिका का स्वयं निर्मित सिस्टम था जो कि संवैधानिक नहीं था, को बदलने के छिपे मंसूबे को तर्क मिल गया है। अब न्यायपालिका का सिर झुका होगा और सरकार का सिर उठा होगा।

बहुत संभवतः यह है कि सरकार स्वतरू भी स्वयं कॉलेजियम सिस्टम को बदलनान चाहे क्योंकि जज जातीय श्रेष्ठता के ढांचे को बचाने का कवच भी है, परंतु न्यायिक चयन में सरकार का हस्तक्षेप बढ़ेगा, विशिष्ट विचार और जाति की भागीदारी बढ़ेगी। इसी प्रकार भारत की उच्च नौकरशाही को भी विशेष संवैधानिक संरक्षण प्राप्त है। केंद्रीय सेवा के अधिकारियों को जिस राज्य में वे काम करते हैं उस राज्य की सरकार निलंबित कर सकती हैं परंतु कितना ही बड़ा अपराध क्यों न हो उन्हें दंडित नहीं कर सकती। और इसका लाभ उच्च नौकरशाही उठाती है। सरकारें बदलती हैं तो अधिकारी यहां से वहां बदल जाते हैं। हो सकता है कि मलाईदार सीट कुछ समय को छूट जाती हो परंतु आपस में अदला-बदली का खेल होता रहता है। भ्रष्ट अपराधी अधिकारी अपने बचाव के लिये केंद्र की शरण में जाकर जी हुजूरी करने लगते हैं या फिर दूसरी विपक्ष की सरकार के संभावित मुख्यमंत्रियों की सेवा में लग जाते हैं और राजनैतिक बदलाव के बाद उनके खास बन जाते हैं और मलाईदार सीट पर वापिस आ जाते हैं। राजनैतिक सरकारें तो बदल जाती हैं परंतु ट्रिब्यूनल न्यायिक ब्यूरोक्रेट की सरकार यथावत रहती है। अब समय है कि उनकी नाभि के संभावित अमरत्व को समाप्त करने के लिये कुछ संवैधानिक कदम उठाये जायें जैसे कि -

1. यह विशेष सुरक्षा कवच समाप्त किया जाये। चयन प्रक्रिया कितनी ही बेहतर हो अगर संवैधानिक रक्षा कवच को नहीं हटाया जायेगा तो हल नहीं निकलेगा।
2. अनकों ऐसी संस्थायें वैधानिक रूप से गठिन कर दी गई हैं कि जो अपराधी अधिकारियों को दंड से बचाने का माध्यम बन जाती है। राज्य प्रशासनिक प्राधिकरण इसी प्रकार की एक गैर जरूरी संस्था हैं। अगर सरकार किसी अधिकारी के विरुद्ध जायज कार्रवाई करे तो वह इन संस्थाओं में अपील कर वर्षों क्या दशकों तक बचने का समय निकाल लेता है और तब तक सेवानिवृत्त होकर सारी सुविधाओं और लाभ के साथ ससम्मान घर पहुँच जाता है।
3. अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप की सरकार ने एक एफिशिएंसी विभाग बनाया है जो उच्च अधिकारियों की कार्य क्षमता के आधार पर उन्हें हटाने का निर्णय करेगा।

अभी हाल में वहां 30 हजार ऐसे कर्मचारियों को एक कलम से हटा दिया गया। हो सकता है कि कुछ पक्षपात हुआ हो परंतु बेहतर प्रशासन के लिये ऐसे कदम जरूरी है। राज्य प्रशासनिक या राष्ट्रीय प्रशासनिक सेवा में अमूमन सेवानिवृति जजों या सेवा निवृत्त अधिकारियों को नियुक्त किया जाता है जो कि एक प्रकार से उन्हें दिया जाने वाला सेवा विस्तार जैसा है जिसमें उन्हें आगामी वर्षों के लिये वेतन और सुविधायें प्राप्त होती हैं और अपने-अपने स्वभाव के अनुसार कुछ खाने-पीने का जुगाड़ हो जाता है।

मेरी राय में इन गैर जरूरी संस्थाओं को समाप्त किया जाना चाहिये।

न्यायपालिका और उच्च न्यायपालिका और उच्च कार्यपालिका का सोशल ऑडिट किया जाए, जिसमें आमजन को उनके बारे में क्या राय है, इसका अध्ययन कराया जाना चाहिये, कम से कम इससे कुछ लोगों को अपने कामों पर शर्म तो आयेगी। उप्र के एक ईमानदार अफसर श्री पाण्डे ने यह सिलसिला शुरू किया था कि उनकी आईएएस बिरादरी के अफसरों में सर्वाधिक भ्रष्ट कौन हैं, इसकी सूची वे जारी करवाते थे। इससे बड़ा बदलाव तो नहीं आया परंतु कुछ हलचल होना शुरू हुई थी।

उच्च न्यायपालिका को भी, शिक्षण, सामाजिक और वैधानिक मर्यादाओं को बांधने के लिये कदम उठाये जाना चाहिये।

जस्टिस मिश्रा की बच्चियों के बारे में की गई टिप्पणी के बाद यौन अपराधियों को कितना प्रोत्साहन मिला होगा, कितने यौन अपराध बढ़ेंगे? क्या इसकी कल्पना हो सकती है? हालांकि सुप्रीम कोर्ट को साधुवाद कि उन्होंने यह कहकर कि यह टिप्पणी अमानवीय है, उसे संतुलित किया है परंतु इतना ही पर्याप्त नहीं है। क्या ऐसे जज को बर्खास्त नहीं किया जाना चाहिये, ताकि अन्यों को भी सबक मिल सके?

सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के फैसलों में भी अक्सर भारी फर्क देखे जाते हैं। एक प्रकरण में एक जज कुछ और निर्णय देते हैं और दूसरे प्रकरण में उनके ही समकक्ष जज भिन्न निर्णय देते हैं। अब सुप्रीम कोर्ट को भी चाहिये कि अपने पुराने निर्णयों के अंतरों को एक निर्णायक नजीर बनाने के लिये पहल करे और नये नैतिक न्यायिक नजीरों को तैयार करे, ताकि न्याय पालिका के निर्णयों के अंतरविरोधों को समन्वित किया जा सके। हालाँकि सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही मे एक अच्छी पहल की है कि सुप्रीम कोर्ट के सभी जजों के उनके परिवार सहित संपत्ति का सार्वजनिक प्रकाशन किया है और सुप्रीम कोर्ट की पारदर्शिता और ईमानदारी की साख कायम रखने का महत्वपूर्ण कदम उठाया।

यह राज्यों के उच्च-न्यायालयों को भी करना चाहिए। इससे न्यायपालिका की साख बढ़ेगी और आमजन का विश्वास भी बढ़ेगा। जस्टिस वर्मा के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने आंतरिक जांच के निष्कर्ष और जस्टिस वर्मा के इस्तीफा देने से इंकार करने के बाद जांच रपट को राष्ट्रपति को अग्रिम कार्यवाही हेतु भेजा है।

सेवा, सुरक्षा और सुशासन के पीएम मोदी के 11 साल

मोदी सरकार 3.0

सुरेश पचौरी

लेखक, भारत सरकार में रक्षा उत्पादन, कार्मिक व संसदीय कार्य राज्यमंत्री रहे हैं।

लोकतंत्र में श्रेष्ठ नेतृत्व की पहचान नीति, नीयत और निष्ठा की कसौटी पर खरा उतरने से होती है, यह एक सुखद पक्ष है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी इस मापदंड पर सर्वथा खरे उतरे हैं। देश की जनता ने बड़ी उम्मीदों के साथ उन्हें देश का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी सौंपी और उन्होंने 26 मई 2014 को प्रधानमंत्री पद की प्रथम बार शपथ ली। बतौर प्रधानमंत्री अपने 11 वर्ष के लगातार कार्यकाल में उन्होंने राजपथ को कर्तव्य पथ के रूप में स्वीकारा तथा देशवासियों का विश्वास जीतने में कामयाब रहे। श्री नरेन्द्र मोदी ऐसे कर्मयोगी हैं, जो सर्वे भवन्तु सुखिनः के राष्ट्र-भाव को चरितार्थ करते हुए सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास का संकल्प लेकर भारत को दुनिया का सिरमौर बनाने में अहर्निश लगे हुए हैं। संक्षेप में कहा जाए तो मोदी जी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार का सिद्धांत है- रिफार्म, परफार्म एवं ट्रांसफॉर्म, प्रधानमंत्री ने भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प की सिद्धि के लिए अपनी प्राथमिकता में GYAN को रखा है। G का तात्पर्य गरीब, Y का तात्पर्य युवा, A का तात्पर्य अन्नदाता किसान और N का तात्पर्य नारी, वर्तमान में केंद्र सरकार ने अपनी कल्याणकारी योजनाओं में इन पर अधिक फोकस किया है।

गरीब कल्याण कार्यक्रम-केन्द्र सरकार ने समाज के शोषित, वंचित, पीड़ित एवं सर्वहारा वर्ग के हितों को दृष्टिगत रखते हुए अनेक ऐतिहासिक एवं कल्याणकारी निर्णय लिये हैं। श्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की। पिछले 11 वर्षों में यह अभियान एक जन आंदोलन बन गया है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत लगभग 12 करोड़ शौचालय बन चुके हैं। उज्ज्वला योजना के अंतर्गत लगभग 10 करोड़ गैस कनेक्शन निःशुल्क दिये गये हैं। पिछले 5 सालों में जल जीवन मिशन के तहत 12 करोड़ परिवारों के घरों में नल से जल देने का काम पूरा हुआ है। इसी तरह प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत गरीबों को 4 करोड़ घर मिल चुके हैं। देश के 80 करोड़ जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क राशन उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना के तहत मार्च 2025 तक कुल 55.02 करोड़ जन-धन खाते देश में खोले जा चुके हैं। इन्हीं सब प्रयासों की वजह से 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर उठ गये हैं।

युवा शक्ति की बेहतरी-प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्राथमिकताओं में युवाओं के लिए अच्छा स्वास्थ्य, फिटनेस और उन्हें उचित हुनर से लैस करना शामिल है। मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्किल इंडिया, मुद्रा कोष योजना और डिजिटल इंडिया जैसी योजनाओं ने भारत को विकसित राष्ट्र की ओर आगे बढ़ाया है। मार्च 2025 तक समर्थ पोर्टल पर लगभग 5 लाख उपयोगकर्ता पंजीकृत हुये, जिनमें से 77 प्रतिशत युवाओं को प्लेसमेंट मिल चुका है। स्टार्टअप इंडिया के तहत 16 लाख लोगों को प्रत्यक्ष नौकरियां मिली हैं और नौजवान इन योजनाओं से प्रभावित होकर स्वरोजगार स्थापित कर रहे हैं।

किसान कल्याण-प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का विजन बहुत साफ़ है कि किसानों को उनकी पैदावार का सही दाम मिले। इस बाबत फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में रिकार्ड बढ़ोत्तरी की। किसान सम्मान निधि के अंतर्गत किसानों को उनके बैंक खातों में हर चार महीनों में दो हजार रुपये पहुचाये जाते हैं। पीएम किसान सम्मान निधि से करीब साढ़े तीन लाख करोड़ रुपये सीधे किसान के खातों में पहुंचे हैं। पीएम फसल बीमा योजना के तहत दो लाख करोड़ रुपये किसानों को मिले हैं। किसानों को सस्ते दामों में खाद मिले, इस दिशा में पिछले दस सालों में बारह लाख करोड़ रुपये खर्च किये गये हैं। दलहन, तिलहन और नारियल की खरीद के लिए सरकारी गारंटी बढ़ाकर 45,000 करोड़ रुपये कर दी गई है। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (पीएमआरकेवाई) और कृषोन्नति योजना (केवाई) का बजट 1,01,321.61 करोड़ रुपये कर दिया है। आज भारत दूध और मसालों के उत्पादन में विश्व में नम्बर 1 पर है। भारत सरकार ने 2817 करोड़ रुपए डिजिटल कृषि मिशन के लिए स्वीकृत किये हैं।

महिला सशक्तिकरण-महिला सशक्तिकरण मोदी सरकार के विकास एजेंडे का प्रमुख हिस्सा है। मातृवंदन योजना, नारी शक्ति वंदन और 33 प्रतिशत आरक्षण से महिलाओं के जीवन में नई उम्मीद जगी है। स्टैंडअप इंडिया से 81 प्रतिशत महिलाएं उद्यमी बनीं। मुद्रा योजना से 68 प्रति. महिलाएं लाभार्थी हुई। केन्द्र सरकार का लक्ष्य तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने का है, जिनमें से लगभग 1 करोड़ 10 लाख लखपति दीदी अपना गरिमामय जीवन जी रही हैं। बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ अभियान से बेटियों का आत्मसम्मान बढ़ा है। तीन तलाक कानून की समाप्ति से मुस्लिम महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा सुनिश्चित हुई है।

स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि -प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार ने देश में लगभग 1लाख 75 हजार आयुष्मान आरोग्य मंदिर खोले हैं। मोदी सरकार की प्राथमिकता है कि समाज के हर वर्ग खासकर सामान्य लोगों तक सस्ती, सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचें। इस दिशा में जारी प्रयास के परिणाम स्वरूप अस्पताल,इलाज और दवाओं पर होने वाला खर्च निरन्तर कम होता जा रहा है। कोरोना काल में प्रधानमंत्री जी ने स्वदेशी वैक्सीन के आविष्कार में प्रेरक भूमिका निभाई।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण-प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की परिकल्पना संकल्प विरासत का, संरक्षण भी और विकास भी के परिणाम स्वरूप अयोध्या में रामलला की दिव्य मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। काशी में बाबा विश्वनाथ कॉरिडोर, उज्जैन में महाकाल लोक, केदारनाथ धाम का नवनिर्माण, बद्रीनाथ क्षेत्र का विकास, करतार साहब कॉरिडोर को खुलवाना, हेमकुण्ड साहब और गिरनार में रोपवे बनाना, नमामि गंगे योजना, तिरुवल्लूर में कल्चरल सेन्टर बनाना आदि उल्लेखनीय कार्यों से भारत आत्मगौरव के साथ विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है।

धारा- 370 की समाप्ति-प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर में धारा 370 समाप्त कर दी। धारा- 370 को हटाना एक इतिहास की धारा को मोड़ने वाला निर्णय साबित हुआ है, इससे जम्मू-कश्मीर में खुशहाली की राह खुली है और देश की एकता व अखण्डता का ताना-बाना मजबूत हुआ है। आज स्थिति यह है कि जम्मू-कश्मीर के नागरिक आतंकियों की गतिविधियों के पुरजोर विरोध में खड़े हुये हैं।

आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस की नीति-प्रधानमंत्री श्री मोदी की आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस की नीति बहुत स्पष्ट है। पाकिस्तान के हुक्मरानों, पाकिस्तानी सेना, आईएसआई और उनके द्वारा पोषित आतंकवादी संगठनों ने भारत में समय-समय पर आतंकवादी हमले किये हैं, जिसमें निर्दोष भारतीयों की जानें गई हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने सेना को पाकिस्तान पर जवाबी कार्रवाई के लिए खुली छूट दी। भारतीय सेना ने आपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के आतंकवादी अड्डों एवं प्रशिक्षण शिविरों को जमींदोज कर दिया। प्रधानमंत्री जी ने विश्व समुदाय के सामने भारत का पक्ष रखने के निए सर्वदलीय प्रतिनिधिमण्डल भेजने का फैसला लिया, जो सराहनीय कदम है।

भारतीय सेना को सम्मान-प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार द्वारा विभिन्न युद्धों के दौरान शहीद हुए भारतीय सेना के जवानों की पुण्य स्मृति में दिल्ली में राष्ट्रीय शौर्य स्मारक एवं नेशनल वॉर मेमोरियल निर्मित कराये गये। पूर्व सैनिकों के लिए वन रैंक वन पेंशन योजना लागू की गई। केंद्र सरकार ने देश के रक्षा बजट में काफी बढ़ोत्तरी की। रक्षा बजट जो वर्ष 2014 में 46,429 करोड़ रुपये था, वह 2024 में 1.27 लाख करोड़ हो चुका है। मेक इन इंडिया, डिफेंस स्टार्टअप की बदौलत रक्षा उत्पादन के मामलों में भारत आत्मनिर्भर होने की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहा है। देश में पहले 65-70 प्रतिशत रक्षा उपकरण आयात किये जाते थे, वहीं अब 65प्रतिशत रक्षा उपकरण भारत में ही तैयार हो रहे हैं। स्वदेशी रक्षा उत्पादन जैसे तेजस लड़ाकू विमान, ब्रम्होस मिसाइल और अग्नि मिसाइल सिस्टम ने भारत को रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना दिया है। आज भारत लगभग 100 देशों को रक्षा उपकरण निर्यात कर रहा है। भारत का रक्षा निर्यात 2013-14 में 686 करोड़ रुपये का था, जो बढ़कर 23,000 करोड़ रुपये हो गया है।नया भारत विकसित भारत हो इसके लिये आधारभूत संरचना को मजबूत बनाना प्रधानमंत्री जी की प्राथमिकता है। नागरिकता संशोधन कानून, ई-गवर्नेन्स, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर का विस्तार, अक्षय ऊर्जा में वृद्धि, पीएम गतिशक्ति आदि योजनाएं देश को विकसित एवं खुशहाल भारत की ओर ले जाने की दूरगामी पहल है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का जीवन राष्ट्रयज्ञ की समिधा है, और उनकी कामना रन्तिदेव की तरह राष्ट्र को वैभव पूर्ण बनाने की है।

रन्तिदेव ने कहा था -

''न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्ग न पुनर्भवम्।
कामये दुःख तातानां, प्राणिनामार्ति नाशनम्।।''

अर्थात् - न मुझे राज्य की कामना है, न स्वर्ग की और न पुनर्जन्म से छुटकारा पाने की। मेरी कामना तो यह है कि मैं दुखों से संतप्त प्राणियों के काम आ सकूं।इसी भावना से स्वप्नदृष्टा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भारत को दुनिया के समृद्ध और शक्तिशाली देशों में शुमार करने की दिशा में सन्नद्ध व संकल्पबद्ध हैं।

ज़बान फिसल ही जाती है

कटाक्ष

गोविन्द सेन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

ज़बान की ग़लती का खामियाज़ा कभी-कभी सिर ही नहीं, पूरे शरीर को भुगतना पड़ता है। करे कोई और भरे कोई जैसा मामला हो जाता है। कसूर किसी का, और सज़ा किसी और को मिले। चोरी करे दाढ़ी वाला और पकड़ा जाए मूँछ वाला। इसके उलट भी हो जाता है।

चोरी सब करते हैं लेकिन चोर वही कहलाता है जो पकड़ा जाता है। शातिर चोर पहले कोतवाल को पटा लेते हैं। या अपने सैयां को कोतवाल बनवा देते हैं। सैयां भए कोतवाल तो डर काहे का। लेकिन कोई-कोई सैयां अड़ जाते हैं-हम तुम्हारी रेवड़ी के चक्कर में नहीं पड़ेंगे, कोतवाल नहीं बनेंगे। पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं होती। कोई सिरफिरा भी होता है। वह अपना हित नहीं देखता। अपना विकास भी नहीं चाहता। होते हैं ऐसे। उस कालिदास का क्या करोगे जो जिस डाल पर बैठता है उसी को काटने लगता है। अब हर कालिदास को विद्योत्तमा जैसी बुद्धिमान पत्नी तो नहीं मिलती जो उसे लाइन पर ले आए। हर पुरुष की प्रगति के पीछे एक स्त्री होती है। तुलसीदास के पीछे यदि रत्नावली नहीं होती तो तुलसीदास रामचरित मानस रच पाते क्या! नहीं न। पत्नी पति को बता देती है कि उसका हित किसमें है। सब ऐसे सौभाग्यशाली नहीं होते। मेरी क़लम भी चंचल है मेरे कंट्रोल में नहीं रहती। ज़बान की तरह फिसल ही जाती है। चलो मैं भी ज़बान को फिर संभालता हूँ। क़लम भी ज़बान की तरह बहक जाती है।

ऐसा भी नहीं कि हर बार ज़बान फिसले और उसका खामियाजा ही उठाना पड़े। कभी कभी ईनाम भी मिल जाता है। दो-चार को ईनाम मिल जाता है तो ज़बान समझने लगती है कि हमें भी ऐसा फिसलने पर ईनाम ही मिलेगा। लालच में ज़बान लपलपाने लगती है। कभी-कभी दाँव उल्टा भी पड़ जाता है। सदा ग्रह नक्षत्र सीधे नहीं चलते, वे उल्टे भी चलने लगते हैं। तब सब उल्टा होने लगता है। सिर मुंडाते ही ओले पड़ने लगते हैं।

ज़बान भी बेचारी क्या करे। वह तो दिल का डस्टबिन है। जो दिल में होता है वह शब्द बनकर ज़बान पर आ जाता है। दिमाग़ भी अपना कूड़ा ज़बान से ही निकालता है। ज़बान अपना कूड़ा सड़क पर फेंक देती है। ऐसा ही तो होता आया है। अब ऐन वक्त पर कोई कहे कि सड़क पर कूड़ा क्यों फेंका। यह तो वैसा ही हुआ न कि मेरी भैंस को डंडा क्यों मारा। भैंस को डंडा मारते ही आए हैं। इसमें नई बात क्या है। डंडे का निर्माण अचार डालने के लिए तो हुआ नहीं, उसका निर्माण तो भैंस को मारने के लिए ही हुआ है न भाई। हम तो भैंस को डंडे से पीटते रहे हैं। नई बात क्या है। अब क्या नया नियम बन गया है। नियम तो ऐसा बनाओ जो सार्वकालिक हो। भैंस हमारा खेत चर जाए और हम कुछ बोले भी नहीं। डंडा न मारे। यह तो वही हुआ कि मारें भी और रोने भी न दें। यह अन्याय है।

हर ज़बान को अपनी ग़लती की माफ़ी भी नहीं मिलती। सज़ा भी एक जैसी नहीं मिलती। नियम भले ही एक हो। किसी को हल्की चपत से निपटा दिया जाता है और किसी को उसी ग़लती के लिए बीस कोड़े खाने होते हैं। इसलिए आगे-पीछे देखकर बोलना चाहिए। बोलकर फिर सोचना नहीं चाहिए। यह उल्टा तरीका है।

बोलने के पहले सोचना चाहिए। का वर्षा जब फ़सल सुखानी। जब फ़सल सूख जाए तो बारिश बेमतलब है। सदा देने के लेने नहीं पड़ते। कभी कभी लेने के देने भी पड़ जाते हैं। इसलिए हल्के आदमी को दिलो दिमाग का कचरा ज़बान से निकालने के पहले सौ बार सोचना चाहिए। भारी आदमी की नकल नहीं करना चाहिए उसे तो सौ खून माफ़ होते हैं। लेकिन ज़बान फिसल ही जाती है। इस ज़बान का क्या कीजिए!

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

श्रेय लेने की होड़ के जोड़-तोड़

व्यंग्य

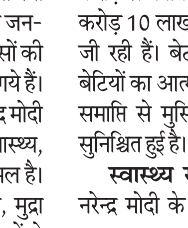

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मॉर्निंग वॉक में हर दिन मॉर्निंग वाक़िए करंट टॉक न करें तो मॉर्निंग वॉक, वॉक ओवर जैसा लगने लगता है। पंडित शिवनारायण जी घर से जब मॉर्निंग वॉक के लिए निकले तो उन्होंने भारत-पाकिस्तान युद्ध के सीजफायर पर श्रेय लेने वाले पर चर्चा की ठानी। पंडित जी के इस श्रेय लेने के मनसूबे पर सुनील भैया बोले दुनिया में श्रेय लेने की होड़ मची हुई है। और यदि श्रेय लेने का मास्टरमाइंड किसी के पास है तो वह है, ट्रंप! देखो ना युद्ध विराम जैसी घोषणा का फर्जी श्रेय लेने से पीछे नहीं हटा। फिलवक्त तो श्रेय लेने की इस होड़ में ट्रंप की कोई सानी नहीं है। ट्रंप को श्रेय लेने का आदर्श मॉडल मानना चाहिए!

जब से श्रेय की बात चली तो पंडित जी बोले श्रेय किस तरह और कैसे लिया जाए यह भी अभी एक आर्ट है,एक हुनर है और कई लोगों की जिंदगी का बहुत बड़ा पार्ट है। श्रेय को लेकर श्रेयस्कर बनना और कहलाने का जुनून छोटे लोगों से ज्यादा बड़े लोगों के दिल में ज्यादा समाया हुआ है इसलिए श्रेय लेने की होड़ में हदों को पार करते हुए हर कस्बे, नगर में श्रेय को प्राप्त करने वाले जुगाड़ी अमूमन मिल जाते हैं।

इस पर विनय जी ने कहा कि मेरी कॉलोनी के टीचर मूलचंद जी का जब तबादला हो गया तो तबादले को रुकवाने के लिए श्रेय की होड़ स्थानीय नेताओं में मच गई। नया नवेला युवा नेता बोला मैंने माननीय से कहकर तुम्हारा तबादला रुकवा दिया है तो पुराने जुनेरी अनुभवी नेता श्रेय की होड़ में पीछे नहीं रहे और बोले मैंने माननीय से कहा कि मूलचंद जी की पीढ़िया मूल रूप से हमसे जुड़ी हुई है और वह जिस बिरादरी के हैं उनका समर्थन हमे मिलता है उनकी बदली कराकर हम अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं तब मेरे कहने पर मूलचंद जी अपने मूल स्थान पर आ गए, जिसका श्रेय मुझे है। जब माननीय को यह पता चला कि श्रेय लेने का ढिंढोरा छोटे-मोटे नेता पीट रहे हैं तो उन्होंने भी श्रेय की होड़ में अपनी हिस्सेदारी जताई और पूरे खानदान को घर बुलाया, और बोला कि आप सब का दो-तीन पीढ़ी से बड़े साहब से घरोंपा होने की वजह से उन्हें वापस घर ले आया हूं।श्रेय लेने की होड़ से मची इस अफरा तफरी से पूरा परिवार वाकिफ हो गया।श्रेय लेने के मचे शोर पर कुलदीप जी बोले श्रेय लेना सीखो तो ट्रंप से सीखो ,श्रेय लेने का सबसे बड़े सरताज ट्रंप से बड़ा कोई नहीं हो सकता है।श्रेय लेने के पीछे ट्रंप ने झूठ का जो ट्रंप कार्ड चलाया उसने सच भी असहज महसूस करने लगा है। कुलदीप जी बोले ट्रंप ने झूठ बोल बोल कर और हर जगह फटे में टांग फंसा कर श्रेय लेना सीख लिया है।इस पर विनय जी बोले क्या देश और दुनिया हर गांव शहर में फटे में टांग फसाने वाले मिलते हैं। एक माननीय जब जनता से नकार दिए जाते है और दूसरे माननीय आते है तो श्रेय की होड़ में दो दो दावेदार हो जाते है! श्रेय की होड़ लेने वालों ने शहर में कई वायरस छोड़ रखे थे उन्हें इस बात का प्रशिक्षण दिया गया था कि कहीं भी फटा दिखे तो खबर लाओ, फटे में टांग फंसा कर श्रेय ले लेंगे। हेमंत जी श्रेय लेने के ट्रंप टैरिफ की चर्चा कर बोले ट्रंप की तरह झूठ का ट्रंप कार्ड खेल कर कई छूट भैया माननीय बन गए।श्रेय लेने में झूठ का बड़ा सहारा है,जितना झूठ श्रेय दिलाता है सच उतना ही रुलाता है।इसी कारण ट्रंप ने टेरिफ से लेकर सीज फायर और ईरान से डील कर लीडर से,डीलर,बनने, सीरिया पर प्रतिबंध हटाने के श्रेय से भी पेट नहीं भरा तो, एप्पल, पर भी झूठ सच कर श्रेय का एप्पल खाने से बाज नहीं आए। श्रेय लेने के मंसूबो पर चर्चा करते-करते मॉर्निंग वाक़िए एक ही स्वर में बोले,हिफाजत कीजिए अपने हुनर की वरना बड़ा पछतावा होगा। मेहनत आपकी और श्रेय और कोई ले जायेगा। सभी अंत में बोले, ट्रंप के झूठ ने उन्हें श्रेय का ताज पहना दिया है। इसी कारण ट्रंप जैसे अनेक श्रेय की लड़ाई में झूठ का ट्रंप कार्ड इस्तेमाल कर झूठा श्रेय ले रहे हैं और श्रेयस्कर कहलाने का अवार्ड प्राप्त कर रहे हैं।

कानून और न्याय

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

विजय शाह की माफी अस्वीकार के पीछे ठोस आधार

सर्वोच्च न्यायालय ने मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री विजय शाह की माफी को अस्वीकार कर दिया। न्यायालय ने कहा कि यह घड़ियाली आंसू है, जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। महत्वपूर्ण पद पर बैठे हुये व्यक्ति द्वारा इस प्रकार अशिष्ट भाषा एवं टिप्पणियों की अपेक्षा नहीं की जा सकती। ऐसे व्यक्तियों को अपने पद की गरिमा बनाये रखना चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय ने भी मध्य प्रदेश के मंत्री कुंवर विजय शाह द्वारा कर्नल सोफिया कुरैशी पर की गई अशिष्ट एवं अपमानजनक भाषा के उपयोग पर प्रस्तुत माफीनामे को स्वीकार नहीं किया। सर्वोच्च न्यायालय ने विजय शाह द्वारा किए कथित अपराध के लिए 20 मई की सुबह 10 बजे तक विशेष जांच इकाई के गठन करने का आदेश भी दिया था। न्यायालय ने यह भी स्पष्ट किया कि यह विशेष जांच इकाई मध्य प्रदेश के पुलिस महानिरीक्षक द्वारा गठित की जाएगी। इस जांच इकाई के तीनों सदस्य पुलिस अधीक्षक या इससे उच्च श्रेणी के अधिकारी होंगे, जो मध्यप्रदेश से बाहर के होंगे। इनमें एक महिला अधिकारी भी होगी। लेकिन, सर्वोच्च न्यायालय ने तब तक कुंवर विजय शाह के विरूद्ध कोई कठोर कार्यवाही (गिरफ्तारी) पर रोक लगा दी। सर्वोच्च न्यायालय ने याचिकाकर्ता विजय शाह को निर्देश दिए कि वे इस विशेष जांच इकाई को जांच के दौरान पूर्ण सहयोग प्रदान करें। न्यायालय ने विशेष जांच इकाई को यह निर्देश दिए कि वह अपनी पहली रिपोर्ट 28 मई को प्रस्तुत करें।

इसके पूर्व मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने बुधवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मंत्री विजय शाह के खिलाफ स्वतः संज्ञान लेते हुए मामला शुरू किया। क्योंकि, उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ 'ऑपरेशन सिंदूर' के बारे में मीडिया को जानकारी देने वाली भारतीय सेना की अधिकारी कर्नल सोफिया कुरैशी पर निशाना साधते हुए टिप्पणी की थी। न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन और न्यायमूर्ति अनुराधा शुक्ला की खंडपीठ ने पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) को निर्देश दिया कि वे भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के विभिन्न प्रावधानों के तहत शाह के खिलाफ तत्काल एफआईआर दर्ज करें। यह भी कहा यह आज शाम तक किया जाना चाहिए, अन्यथा न्यायालय कल डीजीपी के खिलाफ न्यायालय की अवमानना अधिनियम के तहत कार्यवाही करेगा।

'न्यायमूर्ति श्रीधरन ने महाविधवक्ता प्रशांत सिंह से कहा कि मैं कोई बहाना नहीं सुनूंगा। सुनिश्चित करें कि यह किया जाए। अन्यथा मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं, मैं वादा करता हूं, राज्य को अत्यधिक शर्मिंदगी का सामना करना पड़ेगा और मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।' न्यायालय ने पाया कि शाह ने कर्नल कुरैशी के खिलाफ 'अशिष्ट भाषा' का इस्तेमाल किया है। न्यायालय ने कहा कि उनकी टिप्पणियां अपमानजनक और खतरनाक है। न केवल संबंधित अधिकारी के लिए बल्कि सशस्त्र बलों के लिए भी। न्यायालय ने कहा कि विजय शाह ने कर्नल कुरैशी को 'आतंकवादियों की बहन' बताया, जिन्होंने पहलगाम में 26 निर्दोष भारतीयों की हत्या की थी। न्यायालय ने बीएनएस के विभिन्न प्रावधानों की ओर इशारा किया, जिसका प्रथम दृष्टया शाह द्वारा उल्लंघन पाया गया। विशेष रूप से, न्यायालय ने बीएनएस की धारा 152 का उल्लेख किया। यह प्रावधान भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को खतरे में डालने वाले कार्यों को अपराध बनाती है।

न्यायालय ने कहा कि प्रथम दृष्टया, मंत्री का यह कथन कि कर्नल सोफिया कुरैशी उस आतंकवादी की बहन है जिसने पहलगाम में हमला किया था, किसी भी मुस्लिम व्यक्ति में अलगाववादी गतिविधियों को बढ़ावा देता है। इससे भारत की संप्रभुता या एकता और अखंडता को खतरा है। इस प्रकार यह न्यायालय प्रथम दृष्टया संतुष्ट है कि मंत्री के खिलाफ पहला अपराध भारतीय दंड संहिता की धारा 152 के तहत किया गया था। मंत्री का यह बयान कि कर्नल सोफिया कुरैशी उस आतंकवादी की बहन है, जिसने पहलगाम में हमला किया था, किसी भी मुस्लिम व्यक्ति में अलगाववादी भावना का आरोप लगाकर अलगाववादी गतिविधियों की भावनाओं को बढ़ावा देता है।

उच्च न्यायालय ने यह भी कहा कि बीएनएस की धारा 196, जो विभिन्न समूहों के बीच शत्रुता को बढ़ावा देने से संबंधित है। प्रथम दृष्टया इस मामले में भी बनती है। क्योंकि, कर्नल सोफिया कुरैशी इस्लाम की अनुयायी है। इसमें यह भी कहा गया है कि विजय शाह द्वारा दिया गया बयान प्रथम दृष्टया मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच वैमनस्य और शत्रुता या घृणा या और भावना की भावना पैदा करने की प्रवृत्ति रखता है। इस प्रकार न्यायालय ने कहा कि धारा 197, जो राष्ट्रीय एकता के लिए हानिकारक आरोपों, दावों को दंडित करती है, भी शाह के खिलाफ प्रथम दृष्टया बनती है। तद्नुसार न्यायालय ने भाजपा सरकार के मंत्री के खिलाफ तत्काल आपराधिक मामला दर्ज करने का आदेश दिया। जब एजी प्रशांत सिंह ने आदेश का पालन करने के लिए और समय मांगा, तो न्यायमूर्ति श्रीधरन ने कहा कि अगर कल तक आदेश का पालन नहीं किया गया तो और भी समस्याएं होगी।

न्यायाधीश ने कहा कि बस इतना कहिए कि हम आदेश को लागू करेंगे, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि न तो आप और न ही न्यायालय को शर्मिंदा होना पड़े। चुनाव आपका है। गेंद आपके पाले में है। एडिशनल एडवोकेट जनरल एचएस रूपरा और अमित सेठ के साथ एडवोकेट जनरल प्रशांत सिंह ने राज्य का प्रतिनिधित्व किया था। अगले दिन मामले की सुनवाई फिर होने पर न्यायालय ने कहा कि विजय शाह के खिलाफ एफआईआर इस तरह से तैयार की गई कि उसे रद्द किया जा सकता है। उच्च न्यायालय ने गुरुवार को भारतीय जनता पार्टी के मंत्री विजय शाह के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी (एफआईआर) में खामियों के लिए राज्य को फटकार लगाई।

महाधिवक्ता (एजी) प्रशांत सिंह ने न्यायालय को सूचित किया कि एफआईआर दर्ज कर दी गई है। हालांकि, न्यायालय ने पाया कि एफआईआर को लापरवाही से तैयार किया गया। इस पर न्यायमूर्ति श्रीधरन ने टिप्पणी की कि क्या आपने एफआईआर पढ़ी है? इसे कैसे तैयार किया गया है? इसमें कोई तत्व नहीं है। इसे इस तरह तैयार किया गया है कि इसे रद्द किया जा सके। एफआईआर में तत्व होना चाहिए। आरोप सामने आने चाहिए। ऐसी एफआईआर को रद्द किया जाना चाहिए, क्योंकि इसमें तत्व नहीं दर्शाए गए हैं। इसमें अपराध का कोई विवरण नहीं है, सिवाय इसके कि आदेश की तिथि ऐसी हो। इसलिए हम अपने निष्कर्ष निकालते हैं। इसमें (एफआईआर) केवल यह कहा गया है कि कुछ निर्देश दिए गए हैं। न्यायालय ने अपने आदेश में इन चिंताओं को दर्ज किया और कहा कि वह विजय शाह के खिलाफ जांच की निगरानी करेगा।

आदेश में कहा गया कि, इस न्यायालय ने एफआईआर की जांच की है। इसमें अनिवार्य रूप से अपराध के तत्वों को अपराधी के कृत्यों से जोड़ना चाहिए। एफआईआर संक्षिप्त है। संदिग्ध की गतिविधियों का एक भी उल्लेख नहीं है, जो पंजीकृत अपराधों की सामग्री को संतुष्ट कर सके। क्रियात्मक भाग उच्च न्यायालय के आदेश की पुनरुत्पादन के अलावा कुछ नहीं है। इसमें संदिग्ध की गतिविधियों और वे किस तरह से अपराध का गठन करते हैं, इसका कोई उल्लेख नहीं है। यह एफआईआर इस तरह से दर्ज की गई है कि इसमें पर्याप्त जगह है कि अगर इसे चुनौती दी जाती है, तो इसे रद्द किया जा सकता है क्योंकि इसमें भौतिक विवरण की कमी है। इन परिस्थितियों में, यह न्यायालय यह सुनिश्चित करने के लिए बाध्य है कि वह जांच एजेंसी की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप किए बिना जांच की निगरानी करे। मामले की प्रकृति और जिस तरीके से एफआईआर दर्ज की गई है, उसे देखते हुए, यह न्यायालय को यह विश्वास नहीं दिलाता कि यदि मामले की निगरानी नहीं की जाती है, तो पुलिस न्याय के हित में और कानून के अनुसार निष्पक्ष जांच करेगी।

न्यायालय ने यह भी निर्देश दिया कि उसके 14 मई के आदेश को सभी न्यायिक, अर्ध-न्यायिक और जांच उद्देश्यों के लिए एफआईआर के हिस्से के रूप में पढ़ा जाएगा। इस बीच विजय शाह ने उच्च न्यायालय के 14 मई के आदेश को चुनौती देते हुए सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। शीर्ष न्यायालय ने उन्हें कोई अंतरिम राहत देने या उनके खिलाफ दर्ज एफआईआर पर रोक लगाने से इंकार कर दिया। लेकिन, कहा कि वह मामले की सुनवाई करेगा। भारत के मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई ने कहा कि संवैधानिक पद पर बैठे ऐसे व्यक्ति को जिम्मेदार होना चाहिए। जब यह देश ऐसी स्थिति में गुजर रहा है, तो उसे पता होना चाहिए कि वह क्या कह रहा है। सिर्फ इसलिए कि आप एक मंत्री है। उच्च न्यायालय के समक्ष सरकार की ओर से यह भी आश्वासन दिया है कि राज्य का न्यायालय के आदेशों का पालन करने का हर इरादा है। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि उच्च न्यायालय राज्य को इस तरह संदेह की दृष्टि से देख रहा है। राज्य के महाधिवक्ता ने कहा, ''मुझे थोड़ा दुख है। राज्य को शक से न देखें। चार घंटे के भीतर हमने काम पूरा कर लिया। हम अभी भी अनुपालन के लिए तैयार है। न्यायालय ने कहा कि हम समय पर सवाल नहीं उठा रहे हैं, पर हम एफआईआर से संतुष्ट नहीं हैं।

शैलेंद्र पारे

सिंदूर: सिर्फ एक शब्द नहीं, एक भावना

सिंदूर में हनुमान जैसी शक्ति है—जो विपत्तियों से लड़ना जानती है। जब परिवार पर कोई संकट आता है, तो यही स्त्री, अपने भीतर छिपी शक्ति को पहचानती है और हर चुनौती को पार कर जाती है। सिंदूर में गणेश जैसी बुद्धि भी है—जो हर रिश्ते को सहेजने की समझ रखती है। वह सास-बहू, पति-पत्नी, माता-पिता, बच्चों के बीच की डोर को इस समझदारी से थामे रखती है कि घर एक मंदिर बन जाता है। सिंदूर, भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यह सिर्फ मांग में भरे जाने वाला रंग नहीं, बल्कि वो प्रतिज्ञा है जिसे हर विवाहिता हर सुबह नए संकल्प के साथ दोहराती है। यह उस प्रेम की याद दिलाता है, जो सात फेरों में दिया गया था-जनम जनम का साथ निभाने का।

सिंदूर कोई साधारण रंग नहीं। यह भारतीय स्त्री की आत्मा से जुड़ा हुआ वह प्रतीक है, जिसमें उसकी भावनाएं, प्रेम, समर्पण और आत्मगौरव समाहित होता है। यह उस नारी की पहचान है, जो अपने जीवनसाथी के सुख-दुख में साथ खड़ी रहती है, उसकी लंबी उम्र की कामना करती है और पूरे तन-मन से अपने रिश्ते को निभाती है।

सिंदूर में हनुमान जैसी शक्ति है—जो विपत्तियों से लड़ना जानती है। जब परिवार पर कोई संकट आता है, तो यही स्त्री, अपने भीतर छिपी शक्ति को पहचानती है और हर चुनौती को पार कर जाती है।

सिंदूर में गणेश जैसी बुद्धि भी है—जो हर रिश्ते को सहेजने की समझ रखती है। वह सास-बहू, पति-पत्नी, माता-पिता, बच्चों के बीच की डोर को इस समझदारी से थामे रखती है कि घर एक मंदिर बन जाता है।

सिंदूर, भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यह सिर्फ मांग में भरे जाने वाला रंग नहीं, बल्कि वो प्रतिज्ञा है जिसे हर विवाहिता हर सुबह नए संकल्प के साथ दोहराती है। यह उस प्रेम की याद दिलाता है, जो सात फेरों में दिया गया था—जनम जनम का साथ निभाने का।

यह सुहाग की रेखा नहीं, बल्कि एक स्त्री का आत्मबल है। और यही वजह है कि जब वह अपने सिंदूर को सजाती है, तो वह देवी बन जाती है—संवेदनाओं की, शक्ति की, और बुद्धि की मूर्ति। आज सिंदूर भारत की परंपरा से पराक्रम तक की पहचान है।

सिंदूर, भारतीय नारी के लिए केवल एक सौंदर्य प्रसाधन नहीं, बल्कि उसकी संस्कृति, प्रेम और समर्पण का प्रतीक है। यह लाल रेखा उसकी शक्ति, बुद्धि और आत्मबल का प्रतीक

बन चुकी है। परंतु जब यही सिंदूर राष्ट्र की रक्षा के लिए प्रेरणा बनता है, तब वह केवल एक व्यक्तिगत भावना नहीं, बल्कि राष्ट्रीय गर्व और पराक्रम का प्रतीक बन जाता है।

आज सिंदूर नारी से राष्ट्र तक राष्ट्र के गौरव की पहचान बन गया। जब एक भारतीय नारी अपनी मांग में सिंदूर भरती है, तो वह केवल अपने पति के प्रति समर्पण नहीं दर्शाती, बल्कि वह उस शक्ति, बुद्धि और आत्मबल का प्रतीक बन जाती है, जो राष्ट्र की रक्षा के लिए आवश्यक है। 'ऑपरेशन सिंदूर' ने यह सिद्ध कर दिया कि जब राष्ट्र पर संकट आता है, तो भारत केवल प्रतिक्रिया नहीं देता, बल्कि निर्णायक कार्रवाई करता है।

सिंदूर अब केवल एक सांस्कृतिक प्रतीक नहीं, बल्कि भारत की शक्ति, संकल्प और आत्मबल का प्रतीक बन चुका है। 'ऑपरेशन सिंदूर' ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए हर संभव कदम उठाने को तैयार है, और यह संकल्प हर भारतीय के हृदय में सिंदूर की तरह स्थायी है।

इसी स्थायित्व को अगर हम बरकरार रख सके और एक नया आयाम बना सकें।

जन भावनाओं को समझते हुए हम भारत के सबसे स्वच्छ आदर्श शहर इंदौर में निर्माणाधीन रेत मंडी ब्रिज का नाम 'सिंदूर' रख कर शहीदों को श्रद्धांजलि समर्पित करें, और भावनाओं को सम्मान दें।

व्रत पर विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।

नारी सशक्तिकरण का प्रतीक 'वट सावित्री व्रत'

भारतीय संस्कृति में वट सावित्री व्रत का अत्यंत पावन महत्व है। यह व्रत विवाहित स्त्रियों द्वारा अपने पति की लंबी उम्र, सुख-समृद्धि और दांपत्य जीवन की स्थिरता के लिए किया जाता है। धार्मिक ग्रंथों और पुराणों में इसका उल्लेख विशेष रूप से किया गया है। मान्यता है कि इसी दिन सतयुग में माता सावित्री ने यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राण वापस लिए थे। यह व्रत नारी शक्ति, संकल्प और श्रद्धा का प्रतीक बन चुका है। वट वृक्ष, जिसे 'अक्षयवट' भी कहा जाता है, उस अद्भुत स्थल का प्रतीक बन गया है, जहां यह चमत्कारी घटना घटित हुई थी। अतः इस दिन वट वृक्ष की पूजा का विशेष महत्व है।

26 मई को एक दुर्लभ और अत्यंत पुण्यदायक संयोग बन रहा है, जब वट सावित्री व्रत और सोमवती अमावस्या एक ही दिन पड़ रहे हैं। यह योग वर्षों में कभी-कभी बनता है और धार्मिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। जब अमावस्या सोमवार के दिन पड़ती है तो इसे 'सोमवती अमावस्या' कहा जाता है और ऐसे अवसर को विशेष फलदायी तथा मनोकामना पूर्ति करने वाला माना जाता है। इस दिन का व्रत, पूजा-पाठ और धार्मिक अनुष्ठान न केवल जीवन में सौभाग्य, संतान सुख और समृद्धि लाते हैं बल्कि यह पारिवारिक कल्याण के लिए भी अत्यंत प्रभावशाली होता है। वट सावित्री व्रत और सोमवती अमावस्या का संयोग एक अत्यंत दुर्लभ अवसर है, जिसे श्रद्धा और विधिपूर्वक मनाने से जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इस दिन किए गए व्रत, पूजा और उपाय अनेक बाधाओं का निवारण करते हैं और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं।

भारतीय संस्कृति में वट सावित्री व्रत का अत्यंत पावन महत्व है। यह व्रत विवाहित स्त्रियों द्वारा अपने पति की लंबी उम्र, सुख-समृद्धि और दांपत्य जीवन की स्थिरता के लिए किया जाता है। धार्मिक ग्रंथों और पुराणों में इसका उल्लेख विशेष रूप से किया गया है। मान्यता है कि इसी दिन सतयुग में माता सावित्री ने यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राण वापस लिए थे। यह व्रत नारी शक्ति, संकल्प और श्रद्धा का प्रतीक बन चुका है। वट वृक्ष, जिसे 'अक्षयवट' भी कहा जाता है, उस अद्भुत स्थल का प्रतीक बन गया है, जहां यह चमत्कारी घटना घटित हुई थी। अतः इस दिन वट वृक्ष की पूजा का विशेष महत्व है।

इस बार की विशेषता यह है कि वट सावित्री व्रत सोमवती अमावस्या के दिन पड़ रहा है। सोमवती अमावस्या का योग जब वट सावित्री व्रत के साथ आता है तो इसका महत्व कई गुना बढ़ जाता है। धर्मशास्त्रों के अनुसार सोमवती अमावस्या का व्रत करने से पितृ दोष समाप्त होता है, पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है और घर में सुख-शांति

का वास होता है। यह दिन विशेष रूप से स्नान, दान और जप-तप के लिए उपयुक्त माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन ब्राह्मणों को अन्न, वस्त्र और दक्षिणा का दान करना अत्यंत पुण्यकारी होता है। जो व्यक्ति इस दिन गंगा स्नान करता है और भगवान विष्णु तथा माता लक्ष्मी की पूजा करता है, उसे समस्त पापों से मुक्ति मिलती है और उसका जीवन धन-धान्य से परिपूर्ण होता है।

यदि परिवार में आर्थिक संकट बना हुआ हो, कर्ज बढ़ रहा हो या आमदनी में निरंतर बाधा आ रही हो तो इस दिन कुछ विशेष उपाय अत्यंत फलदायी सिद्ध हो सकते हैं। धार्मिक मान्यता है कि इस दिन माता लक्ष्मी को पीले रंग की 11 कौड़ियां अर्पित करनी चाहिएं। यदि पीली कौड़ियां न मिलें तो सफेद कौड़ियां हल्दी से रंगकर अर्पित की जा सकती हैं। इस उपाय से धन संबंधित समस्याओं का समाधान होता है और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। इसी प्रकार यदि वैवाहिक जीवन में तनाव है या पति-पत्नी के बीच मनमुटाव बना रहता है तो इस दिन वट वृक्ष के नीचे दीपक जलाकर माता लक्ष्मी की पूजा करें, प्रणम्य मंत्रों का जाप करें और पांच-पांच मीठे नींबू वट वृक्ष को अर्पित करते हुए 11 बार परिक्रमा करें। इस उपाय से वैवाहिक जीवन में सामंजस्य बढ़ता है और पारिवारिक तनाव दूर होता है।

व्रत के दिन कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना भी आवश्यक होता है ताकि इसका संपूर्ण फल प्राप्त हो सके। सबसे पहले तामसिक भोजन जैसे प्याज, लहसुन, मांसाहार आदि से पूरी तरह बचना चाहिए। इस दिन फल, दूध, मेवे, मिठाई, शहद आदि का सेवन करना उत्तम माना गया है। उपवास करते समय मन, वाणी और कर्म की शुद्धता अत्यंत आवश्यक है। किसी के प्रति बुरा बोलना, अपशब्द कहना या क्रोध करना व्रत की पवित्रता को भंग कर सकता है। इसलिए शांत चित्त से व्रत करना चाहिए और मन में सद्भावना बनाए रखनी चाहिए। पूजा करते समय काले वस्त्र पहनना भी वर्जित माना गया है क्योंकि यह नकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक होता है। इसके स्थान पर पीले, लाल या गुलाबी जैसे शुभ रंगों का चयन करना चाहिए।

यह व्रत नारी सशक्तिकरण और पारिवारिक मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रतीक है। जिस प्रकार सावित्री ने अपने पति के लिए मृत्यु के देवता यमराज से संघर्ष करके उन्हें पुनर्जीवन दिलाया, उसी प्रकार आज की नारी भी अपने परिवार की सुख-समृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहती है। यह व्रत स्त्रियों को यह प्रेरणा देता है कि श्रद्धा, संकल्प और निष्ठा से किसी भी कठिन परिस्थिति को बदला जा सकता है। वर्तमान समय में जब पारिवारिक जीवन में अनेक प्रकार की चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं, यह व्रत मानसिक और आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करता है। यह केवल धार्मिक कर्त्तव्य नहीं बल्कि आत्मिक बल का भी प्रतीक है। यह व्रत जीवन को संतुलन, सहिष्णुता और त्याग की भावना से जोड़ता है। यह दिन महिलाओं को उनकी शक्ति, करुणा और श्रद्धा का पुनः स्मरण कराता है, जिससे वे अपने जीवन में नई ऊर्जा और उत्साह के साथ आगे बढ़ सकें।

आसमान में छाये रहे बादल, अधिकतम तापमान 31.2 डिग्री किया दर्ज

तपने के बजाए ठंडा रहा नौतपा का पहला दिन

बैतूल। रविवार को सूर्य के रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश के साथ ही नौतपा भी शुरू हो गया है। लेकिन अरब सागर में सिस्टम के एक्टिव होने के कारण जिले में नौतपा के पहले दिन यानि रविवार को आसमान में बादल छाए रहे। बादलों के डेरा डाले रहने के कारण गर्मी व उमस ने लोगों को परेशान किया। हालांकि मौसम विभाग ने आने वाले दिनों में बारिश होने की संभावना जताई है। इसी के चलते जिले के तापमान में लगातार कमी आ रही है। रविवार को अधिकतम तापमान 32.2 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। मौसम विभाग के अनुसार अरब सागर में मजबूत सिस्टम एक्टिव है, जो कि देश के दक्षिण-पश्चिम हिस्से में सक्रिय है। इसका असर जिले में देखने को मिला रहा है। नवतपा में इस सिस्टम की वजह से ही बादल छाये हुए है और बारिश का अनुमान है। इस कारण नौतपा तपाने के बजाए ठंडा बीतने के पूरे आसार है। सबसे बड़ी बात यह है कि जिले में मई माह में एक बार भी तापमान 40 डिग्री के पार नहीं गया है। अधिकतम तापमान पिछले तीन दिनों में 2 डिग्री कम हुआ है। वहीं न्यूनतम तापमान 23 डिग्री के आसपास आ गया है। लेकिन वातावरण में उमस का असर बरकरार है।

पिछले पांच सालों से नहीं तपा नवतपा

जिले में पिछले पांच सालों की बात करे तो 2021, 2022 और 2023 में नौतपा में तापमान 40 डिग्री से ही कम रहा था। इसके बाद भी बारिश अच्छी हुई थी। पिछले साल तापमान 42 डिग्री तक जाने के बाद भी औसत बारिश ही हुई थी। पिछले साल नौतपा में 8 दिन तक तापमान के तीखे तेवर देखने को मिले थे, लेकिन अंतिम दिन बूंदाबांदी से तापमान गिर गया था। इस साल नवतपे पर चक्रवात का असर रहने की संभावना है। मौसम वैज्ञानिक का कहना है इस बार नवतपे पर बादल और बारिश का असर रहेगा। इस कारण तापमान 39 डिग्री तक ही जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि नौतपा के दौरान तापमान अधिक जाने पर बारिश अच्छी होती है, लेकिन इस बार मई माह के शुरुआत से ही अरब सागर में उठे चक्रवात के कारण बादल और बारिश की संभावना बन रही है।

2019 और 2020 में रहे थे नौतपा के तीखे तेवर

जिले में नौतपे पर सबसे अधिक तेवर 2019 को देखने को मिला था। 2019 को 27 और 29 मई को अधिकतम तापमान 44 डिग्री तक पहुंचा था। जो जिले में अब तक का सबसे अधिक तापमान है। इसके अलावा 2020 में भी नौतपा में तापमान के तीखे तेवर रहे। शुरुआत में ही तापमान 43 डिग्री से अधिक हो गया था। हालांकि बाद में धीरे-धीरे करके तापमान कम हो गया था। 2021 में 9 दिन में केवल 1 दिन पारा 39 डिग्री पर गया था, वहीं 2022 में 3 दिन पारा 40 डिग्री से अधिक रहा था, जो 41.5 तक गया था। 2023 में नवतपे में तूफान के कारण बदली छाई रही। 2024 को जरूर नौ दिन तक पारा के तीखे तेवर थे। इस बार मौसम विभाग ने बारिश और हवा-आंधी की चेतावनी पहले से जारी कर दी है। जिससे माना जा रहा है कि नौतपा में तापमान भी 38 डिग्री सेल्सियस से ऊपर नहीं जाएगा।

मानसून के जल्द आने का अनुमान

मानसून के भी इस बार जल्दी आने की उम्मीद जताई जा रही है। केरल में समय से पहले मानसून दस्तक दे चुका है। एक दशक में पहली बार होगा, जब मानसून जून के पहले सप्ताह में ही आ सकता है। इससे पहले 15 जून तक ही मानसून जिले में आया है। इस बार जिस रफ्तार से मानसून आगे बढ़ रहा है, उससे उम्मीद जताई जा रही है कि जून के पहले सप्ताह में ही वह जिले में आ सकता है। रविवार से नौतपा शुरू हो गया, लेकिन पहले ही दिन नौतपा के तेवर फीके रहे। रविवार सुबह से शहर में बादल छाए रहे। और दोपहर बाद रिमझिम बारिश ने मौसम में ठंडक ला दी। दिन का तापमान भी 32.2 डिग्री दर्ज किया गया। वहीं शनिवार रात का तापमान 24.5 डिग्री दर्ज किया गया।

बारिश के पहले तैयारियों में जुटा प्रशासन

जून की शुरुआत में मानसून आता है तो जिले में होने वाले निर्माण कार्य प्रभावित होंगे। शहर में भी स्थिति बिगड़ सकती है, क्योंकि अभी नालों की सफाई और सड़कों का काम पूरा नहीं हुआ है। ऐसे में बारिश के कारण निर्माण कार्यो में परेशानी आ सकती है। मानसून की दस्तक से पहले नगरपालिका प्रशासन नालों की सफाई में जुटा हुआ है। जिले से ताप्ती नदी बहती है और दर्जनों पहाड़ी बरसाती नदी-नालों में बाढ़ की स्थिति बनती है। ऐसे में बाढ़ आपदा नियंत्रण के लिए तैयारी शुरू हो गई है। हालांकि अभी इसके लिए कंट्रोल रूम नहीं बनाया गया है। इसके अलावा शहर नाले-नालियों की सफाई का कार्य भी पूरा नहीं हुआ है। हालांकि प्रशासन बारिश के पहले तैयारियों में जुटा हुआ है।

दोपहर बाद रिमझिम बारिश, गिरा तापमान

बैतूल में नौतपा के पहले दिन गर्मी का असर कम रहा। रविवार को दोपहर बाद रिमझिम बारिश ने मौसम में जहां ठंडक ला दी। वहीं तापमान 31.5 डिग्री सेल्सियस पर ला दिया। यह पिछले पांच सालों में नौतपा के पहले दिन का सबसे कम तापमान है। शहर में 1.5 मिलीमीटर बारिश भी हुई। शनिवार की तुलना में तापमान 0.7 डिग्री कम रहा। पिछले कुछ सालों से कोरोना के बाद से चक्रवात, तूफान और मौसमी गड़बड़ी के कारण गर्मी का प्रकोप कम हो रहा है। पिछले साल नौतपा में 8 दिन तक तापमान अधिक रहा था, लेकिन अंतिम दिन बूंदाबांदी से गिरावट आई थी। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, इस बार नौतपा में बादल और बारिश का असर बना रहेगा। तापमान 39 डिग्री से ज्यादा जाने की संभावना नहीं है। पारंपरिक मान्यता है कि नौतपा में अधिक तापमान अच्छी बारिश का संकेत होता है। मई की शुरुआत से ही अरब सागर में बने चक्रवात का असर दिख रहा है।

पिछले साल 2024 में इस तरह रहा था नौतपा

दिनांक	तापमान
25 मई	41.2
26 मई	41.8
27 मई	42.0
28 मई	41.0
29 मई	40.5
30 मई	41.2
31 मई	40.5
1 जून	41.2
2 जून	38.7

शाहपुर वन विभाग की कार्यवाही, जंगली सूअर ले जा रही पिकअप को पकड़ा

तीन आरोपी हिरासत में, 6 जंगली सूअर जब्त

बैतूल। शाहपुर क्षेत्र में लगातार बढ़ रही शिकार और तस्करी की घटना को लेकर फॉरेस्ट विभाग द्वारा अब लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है। एसडीओ उत्तम सिंह सरत्तया के मार्गदर्शन में फॉरेस्ट विभाग के कर्मचारियों ने बरेठा में एक पिकअप को मुखबिर की सूचना पर पकड़ा। दरअसल सूचना मिली थी कि कुछ जंगली सूअरों की तस्करी की जा रही है। जिसके बाद वन विभाग शाहपुर हरकत में आया और पिकअप को वन विभाग के ऑफिस में लाकर जांच की गई। जिसमें आरोपियों से पूछताछ में जानवरों की संख्या पूछी गई, पर उनके द्वारा जानकारी नहीं दी गई। गाड़ी से जानवरों को बाहर निकलवाकर जांच की गई, जिसमें 6 जंगली सूअर एवं 38 देशी सूअर मिले। 6 सूअरों की प्राथमिक जांच के पश्चात वाइल्ड बोर होने की आशंका में वन विभाग द्वारा तीन आरोपियों पर वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन एक्ट में कार्यवाही की गई।

गुजरात के हैं तस्कर

वन विभाग शाहपुर से मिली जानकारी के अनुसार महिंद्रा बोलेरा मैक्स पिकअप जिसका नंबर जीजे 16 एडब्ल्यू 5265 हैं, इस वाहन में तीन लोग नारसिंह, दीपसिंह, महेंद्र सिंह गुजरात के भरूच जिले के निवासी हैं, जो कि इन सूअरों को भरूच से बैतूल जिले के चोपना ले जा रहे थे। जिसमें कुल 44 नग सूअरों को क्रूरतापूर्वक भरकर रखा गया था। जिसमें 6 वाइल्ड बोर होने की आशंका है। आरोपियों के पास किसी भी प्रकार के परिवहन एवं जानवरों से संबंधित दस्तावेज उपलब्ध नहीं है, साथ ही आरोपी जानकारी भी साझा नहीं कर पा रहे हैं।

इनका कहना है -

मुखबिर की सूचना पर तीन आरोपियों के साथ 44 सूअरों से भरी पिकअप को जब्त किया है। गाड़ी गुजरात की है और जानवरों में 6 वाइल्ड बोर होने की आशंका है। जिसके तहत नियमानुसार कार्यवाही की जा रही है ।

\- उत्तम सिंह सरत्तया, एसडीओ, वन विभाग शाहपुर

गोवंश से भरा ट्रक पलटा, 30 में से 20 गौवंश की मौत

राष्ट्रीय हिंदू सेना ने किया रेस्क्यू

बैतूल। छिंदवाड़ा से बैतूल की ओर जा रहा एक आईसर ट्रक रविवार को मौरखा मार्ग के पास नाले में पलट गया। ट्रक में 30 गोवंश थे, जिनमें से 20 की मौत हो गई। राष्ट्रीय हिंदू सेना के तहसील अध्यक्ष राहुल ठाकुर को घटना की सूचना मिलते ही संगठन के कार्यकर्ता मौके पर पहुंचे। संगठन के प्रदेश अध्यक्ष दीपक मालवीय ने कंट्रोल रूम और बोरदही थाना को सूचित किया। मौरखा गांव अध्यक्ष नवीन मन्नासे के अनुसार ट्रक में गोवंश के पैरों को रस्सियों से बांधा गया था। इसके ऊपर पट्टियों से पैक करके तिरपाल से ढका हुआ था। दुर्घटना में बचे गोवंश को गंभीर चोट आई हैं। ग्राम सचिव रोहन ठाकुर ने बताया कि बोरदही पुलिस और संगठन के सदस्यों ने ट्रक के नीचे दबे गोवंश को निकाला। घायल पशुओं का पशु चिकित्सकों से इलाज कराया गया। मृत गोवंश का पोस्टमार्टम कर विधिवत दफनाया गया।

लोकमाता अहिल्याबाई की 300वीं जयंती मनाएगा पाल धनगर समाज

31 मई को होगा आयोजन समाज की बैठक में लिया फैसला

बैतूल। जिला पाल धनगर समाज द्वारा आगामी 31 मई को लोकमाता अहिल्या बाई की 300वीं जयंती मनाने का निर्णय लिया गया है। इस संबंध में रविवार 25 मई को पाल भवन मोती वार्ड में समाज की बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता समाज के अध्यक्ष चिन्थुलाल पाल ने की, जबकि संचालन सचिव शिवकिशोर पाल ने किया। इस बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया कि लोकमाता अहिल्याबाई, जो समाज की महान पूर्वज और प्रेरणा हैं, की 300वीं जयंती इस वर्ष 31 मई को धूमधाम से पाल भवन में मनाई जाएगी। इस अवसर पर समाज के पूर्व सचिव एवं पाल भवन संचालन समिति के अध्यक्ष कामरेड कुन्दन राजपाल ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर जानकारी दी कि यह जयंती पूरे समाज के लिए गौरव की बात है। उन्होंने बताया कि पूरे प्रदेश में शासन स्तर पर वर्षभर लोकमाता अहिल्या बाई की 300वीं जयंती समारोह पूर्वक मनाई जा रही है और बैतूल जिला पाल धनगर समाज भी इस आयोजन में भागीदारी कर रहा है। अध्यक्ष चिन्थुलाल पाल ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि लोकमाता अहिल्याबाई नारी शक्ति की प्रतीक थीं और समाज के उत्थान में उनका योगदान अमूल्य है। उनके विचार आज भी समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

जिंदगी और मौत से जूझ रहे मरीज को अस्पताल में नहीं मिला डॉक्टर

मरीज के परिजनों ने की कार्यवाही की मांग

बैतूल/मुलताई। मुलताई सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र एक ओर जहां डॉक्टर की कमी से जूझ रहा है, वहीं दूसरी ओर जो डॉक्टर पदस्थ है, वह भी अपनी ड्यूटी पर नहीं रहते, जिसका खामियाजा क्षेत्र की जनता को भुगतना पड़ रहा है। बीती रात जिंदगी और मौत से जूझ रहे ग्राम बिछुआ निवासी 22 वर्षीय युवक को गंभीर अवस्था में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लाया गया, किंतु सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में कोई डॉक्टर उपस्थित नहीं था। बताया जा रहा है कि बीती रात स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर मीना की ड्यूटी थी, किंतु वह उपस्थित नहीं थे। कुछ समय बाद मरीज के परिजनों ने मुलताई ब्लॉक स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर

पंचम को मरीज के संबंध में जानकारी दी ड्यूटी न होने के बावजूद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे डॉक्टर पंचम ने मरीज का प्राथमिक उपचार कर उन्हें बैतूल रेफर किया। गुस्साए मरीज के परिवारों ने इसकी शिकायत खंड चिकित्सा अधिकारी मुलताई से की है। जिसमें कहा गया है कि मैं पन्नालाल निवासी ग्राम बिछुआ अपने पुत्र आयुष जिसने जहर का सेवन किया था उसे सरकारी अस्पताल लाया। लगभग 8.00 बजे मैं स्वास्थ्य केंद्र में अपने पुत्र को लेकर पहुंचा किंतु उस वक्त स्वास्थ्य केंद्र में कोई भी डॉक्टर ड्यूटी पर नहीं था। मेरे मरीज की स्थिति को देखते हुए तुरंत मैंने डॉक्टर पंचम सिंह को बुलाया जिन्होंने इसका उपचार कर बैतूल सरकारी अस्पताल में रेफर किया है। अस्पताल में ड्यूटी पर कोई भी डॉक्टर नहीं मिलने की मैं शिकायत करता हूं जिस पर तुरंत कार्रवाई की जाए।

शिकायतकर्ता में पन्नालाल तीलंथे, कृष्णा बारंगे के हस्ताक्षर है। इस संबंध में ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर मीना से हमारी चर्चा नहीं हो पाई है किंतु उन्होंने पत्रकारों से कहां है कि वह 24 घंटे ड्यूटी नहीं कर सकते। इधर पता चला है कि डॉक्टर की कमी से जूझ रहे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में पदस्थ डॉक्टर पंचम सिंह जो कि ब्लॉक स्वास्थ्य अधिकारी है का भी स्थानांतरण किया जा रहा है बड़ा प्रश्न यह है कि डॉक्टर पंचम के जाने के बाद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति क्या होगी एक और राजनीतिक लोग जहां डॉक्टर की कमी पूरी नहीं कर पा रहे हैं वही शिकवा शिकायतों के माध्यम से डॉक्टर का स्थानांतरण किया जा रहा है जिसको लेकर नागरिकों में भारी रोष है।

इनका कहना है -

बीती रात जब जहरीले पदार्थ सेवन के मरीज को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लाया गया तब सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर मीणा की ड्यूटी थी किंतु वह बगैर बताएं पूरी रात स्वास्थ्य केंद्र नहीं आए दूसरे दिन सुबह स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे।

- डॉ पंचम सिंह, ब्लॉक स्वास्थ्य अधिकारी, मुलताई

शुद्ध कच्ची घानी तेल का व्यवसाय कर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दे रही गायत्री साहू

पीएमएफएमई योजना से मिली सहायता

बैतूल। प्रदेश सरकार लोकमाता अहिल्याबाई की 300वीं जयंती मनाने जा रही है। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शासन द्वारा कई महत्वाकांक्षी योजनाएं जिले सहित प्रदेश में चलाई जा रही है। इस योजना का लाभ लेकर महिलाएं आत्मनिर्भर बन मजबूत राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान सुनिश्चित कर रही है। ऐसी ही कहानी बैतूल के विनोबा नगर निवासी श्रीमती गायत्री साहू की है जो आज क्षेत्र की महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन चुकी हैं। उन्होंने न केवल पारंपरिक पारिवारिक व्यवसाय को सहेजा, बल्कि प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य

प्रसंस्करण उद्यम योजना के माध्यम से उसे एक नई दिशा देकर स्वरोजगार की नई मिसाल पेश की। श्रीमती गायत्री साहू ने बताया कि वे अपने पैतृक व्यवसाय कच्ची घानी के तेल के व्यापार से जुड़ी हुई हैं, जो उनके सास-ससुर द्वारा प्रारंभ किया गया था। पहले वे बाजार से दूसरों की घानी से निकला हुआ तेल मंगवाकर उसे बेचती थीं, जिसमें परिवहन सहित अन्य खर्चों का भार अधिक होता था। आय भी सीमित होती थी। इसी दौरान उन्हें प्रधानमंत्री की पीएमएफएमई योजना के बारे में जानकारी मिली। योजना की विस्तृत जानकारी लेने के बाद उन्होंने उद्यानिकी विभाग से संपर्क किया, जहां से अधिकारियों ने उन्हें योजना की प्रक्रिया समझाई और आवेदन में मदद की। योजना के अंतर्गत उन्हें आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान की गई। इस सहायता से उन्होंने खुद की कच्ची घानी मशीन लगाकर शुद्ध तेल का उत्पादन प्रारंभ किया। अब वे न केवल अपने व्यवसाय से अधिक मुनाफा कमा रही हैं, बल्कि ट्रांसपोर्टिंग, भंडारण और अन्य माध्यमिक खर्चों से भी बचाव हो रहा है। गायत्री साहू ने अन्य महिलाओं से भी आग्रह किया कि वे अपने-अपने गांव और शहर में इस योजना के माध्यम से स्वरोजगार प्रारंभ करें और आत्मनिर्भर बनें।

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में एक हजार से अधिक मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण

गंभीर मरीजों को नि:शुल्क उपचार के लिए 2 बसों से भोपाल किया गया रवाना

बैतूल। आदिम कल्चर एंड वेलफेयर सोसाइटी तथा घोड़ाडोंगरी के समाजसेवियों के सहयोग से एलएन मेडिकल कॉलेज एवं जेके हॉस्पिटल भोपाल द्वारा एक दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन 25 मई को घोड़ाडोंगरी के एक लॉन, रेलवे स्टेशन के पास किया गया। शिविर का शुभारंभ मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राजेश परिहार द्वारा भगवान श्री गणेश की पूजा-अर्चना कर किया गया। इस अवसर पर डॉ. मनोज वरवड़े ने बताया कि सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक चले इस शिविर में एक हजार से अधिक मरीजों का निश्शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें आवश्यक परामर्श एवं इलाज प्रदान किया गया। शिविर में हृदय रोग, किडनी रोग, लीवर रोग, हड्डी रोग, स्त्री रोग, शिशु रोग, हार्निया, हाइड्रोसील, पाइल्स, पथरी, बच्चेदानी के ऑपरेशन सहित मधुमेह, ब्लड प्रेशर, थायराइड, एलर्जी, माइग्रेन, सर्दी-जुकाम जैसे सामान्य एवं जटिल रोगों की जांच की गई। इसके अतिरिक्त, मरीजों की रक्त, मूत्र जांच के साथ-साथ आंखों की जांच मोतियाबिंद, कांचबिंदु, नाखुना आदि भी निःशुल्क की गई। डॉक्टरों की विशेषज्ञ टीम ने हर रोग की सटीक जांच कर मरीजों को उचित सलाह और आवश्यकता अनुसार दवाएं उपलब्ध कराईं। डॉ. वरवड़े ने बताया कि शिविर में 80 से अधिक ऐसे गंभीर मरीज चिन्हित किए गए, जिन्हें इलाज के लिए दो बसों के माध्यम से भोपाल भेजा गया है। वहां जेके हॉस्पिटल और एलएन मेडिकल कॉलेज में उनका निःशुल्क उपचार किया जाएगा। शिविर में आयुष्मान भारत योजना के तहत कार्डधारकों को भी विशेष लाभ दिया गया। इस व्यापक शिविर को मेडिकल ग्रुप डॉ.दीपक श्रीवास्तव के दिशा निर्देशों से सफल बनाया गया जिसमें आशीष अग्रवाल, रवि नागले, विवेक खंडेलवाल, सुनील मालवीय, डॉ.मनोज पाटनकर, तोषण गावंडे, दीपक जैन, हेमंत साहू, सुमन तुमडाम, सारणी से कृष्णा साहू, बलदेव नागले, बैतूल से सचिन खातरकर, जय खातरकर, साहिल खान, रीना इवने का सराहनीय सहयोग रहा।

आमला आवरिया सारणी मार्ग बनना लगभग तय

- पीडब्ल्यूडी विभाग ने शुरू किया सर्वे
- अगले माह प्रस्ताव की रूपरेखा भी होगी तैयार

आमला। आमला सारणी विधानसभा के लोग पिछले कई वर्षो से आमला सारणी के बीच एक सुरक्षित और कम दूरी वाला मार्ग बनाने की मांग करते रहे हैं, चूंकि वर्तमान में आमला से बोरी होते हुए सारणी तक वन विभाग द्वारा बनाए गए मार्ग से लोग आवागमन कर तो रहे हैं, किंतु खतरों से भरे इस मार्ग पर बस एवं अन्य बड़े वाहनों का आना-जाना नहीं हो पाता, साथ ही इस मार्ग पर कई खतरनाक मोड़ एवं टर्निंग वाले घाट भी है और आमला से इसकी दूरी भी लगभग 35 किलोमीटर है। इलाके के लोग आमला आवरिया होते हुए सारणी तक सड़क बनाने की मांग लम्बे समय से कर रहे हैं, जो बेहद सुरक्षित और आमला से सारणी के बीच की दूरी भी इसमें कम है, ऐसे में इस मार्ग के लिए इलाके के लोग पुरजोर ढंग से अपनी आवाज बुलंद करते रहे हैं।

पीडब्ल्यूडी विभाग ने शुरू किया सर्वे

आमला से आवरिया ठानी होते हुए खटगड़ बेलोंड और सारणी मार्ग बन जाने से जहां दर्जनों गांव तो लाभान्वित होंगे ही, बल्कि आमला सारणी के बीच व्यापार करना भी आसान हो जाएगा। अब विभाग के सूत्रों द्वारा बताया गया है कि इसके लिए सर्वे भी शुरू हो गया है। यहां विभाग को केवल 5 से 7 किलोमीटर ही मार्ग बनाना है, क्योंकि आमला से आवरिया ठानी तक सड़क मार्ग पहले से बना हुआ है, यानी यहां कोई बड़े बजट की भी आवश्यकता नहीं है। जैसा कि विभागीय सूत्रों द्वारा बताया गया है कि जल्द ही सर्वे के बाद इस सड़क निर्माण का प्रस्ताव बनाकर शासन को भी भेज दिया जाएगा, ऐसे में इस मार्ग की आवाज उठाने वाले संगठनों के साथ-साथ आमला सारणी के लोगों के लिए यह एक सौगात होगी।

तकनीकी बाधाएं नहीं आई तो सब कुछ जल्द

इधर सूत्र बताते हैं कि आमला सारणी विधानसभा के लिए जिस सड़क बनाने की मांग इलाके के लोग कर रहे हैं, उसके लिए पीडब्ल्यूडी विभाग ने सर्वे तो शुरू कर ही दिया है, अगर इसमें कोई तकनीकी आ बजट संबंधी बाधाएं नहीं आई, तो अगले कुछ महीनो में ही इस सड़क का निर्माण हो सकता है, इस मार्ग के बन जाने से आमला सारणी की आर्थिक उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त हो जाएंगे। इस संबंध में आमला के सामाजिक संगठनों की एक बैठक भी रविवार को हुई, जिसमें आमला सारणी के इस मार्ग के लिए कई प्रस्ताव पर चर्चा की गई।

इनका कहना है

जैसे की हमारे पास जानकारी आई है, विभाग द्वारा आमला आवरिया मार्ग के लिए सर्वे शुरू कर दिया गया है, सर्वे के बाद जैसे ही स्थिति स्पष्ट होगी, हमारे द्वारा प्रस्ताव बनाकर शासन को भेज दिया जाएगा। फिलहाल हमारे पास किसी तरह का कोई आदेश नहीं है।

प्रीति पटेल ई.पीडब्ल्यूडी विभाग बैतूल

इस मामले की जानकारी है, पहले से प्रयास किया जा रहा है। इस मामले में विभाग से भी चर्चा चल रही है, जैसे ही संभव होगा, सड़क का निर्माण किया जाएगा।

डॉ योगेश पंडाग्रे, विधायक आमला-सारणी

साहित्य और बुकर

प्रभुनाथ शुक्ल

लेखक पत्रकार हैं।

'हॉर्ट लैम्प' आप भी लिखिए, भले छोटा लिखिए

साहित्य सिर्फ कोरी कल्पना या फंतासी नहीं। साहित्य जीवन का यथार्थ है और हर स्वांस में रचा बसा है। कन्नड़ लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता, अधिवक्ता बानू मुश्ताक की अंग्रेजी में अनुदित कृति हॉर्ट लैम्प को बुकर पुरस्कार से नवाज़ा गया है। यह भारत की भाषायी साहित्य के लिए यह बेहद गर्व और गौरव का विषय है। इससे यह साबित होता है कि लेखन किसी धर्म, भाषा, जाति और सीमा में बधा नहीं है। आम तौर पर सर्वहारा वर्ग की पीड़ा एक जैसी होती हैं, उनकी जाति या धर्म कुछ भी हो। यह पुरस्कार भारतीय भाषाओं के लिए एक संजीवनी है। बुकर पुरस्कार भाषा के नाम पर लड़ने वाले एक सभ्य समाज के लिए साफ संदेश है। अगर भाषा का विभेद होता तो दीपा भस्थी की तरफ से कन्नड़ से अनुदित बानू मुश्ताक की सिर्फ बारह लघुकथाओं के संकलन हॉर्ट लैम्प को बुकर पुरस्कार से सम्मानित नहीं किया जाता। भाषा और साहित्य सीमा से बहुत दूर है। अब तक यह अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार छह भारतीय लेखकों को मिल चुका है। इसके लिए बानू मुश्ताक के साथ दीपा भी बधाई की पात्र हैं। क्योंकि यह उनकी पहली अनुदित कृति है जिसे यह सम्मान मिला है।

बानू मुश्ताक दक्षिण भारतीय लेखिका हैं। बानू मूलरुप से कन्नड़ भाषा में अपना लेखन करती हैं। बानू को जो बुकर पुरस्कार मिला है वह कन्नड़ में लिखी उनकी लघुकथा संग्रह से चुनी कुछ लघुकथाओं के अंग्रेजी अनुवाद पर दिया गया है। उन्होंने कुल छह लघुकथा संग्रह, एक उपन्यास, एक निबंध और एक कविता संग्रह लिखा है। उनकी रचनाओं का अनुवाद हिंदी, तमिल, मलयालम और उर्दू में किया गया है। उन्हें इसके अलावा और भी साहित्य पुरस्कार मिले हैं।

साहित्य में सबसे अहम सवाल है कि आप कितना लिख रहे हैं यह मायने नहीं रखता है। वजूद इस बात का है कि आप क्या लिख रहे हैं। लिखा तो बहुत कुछ जा रहा है या बहुत कुछ लिखा गया है, लेकिन सबको बुकर नहीं मिला। बुकर को ध्यान में रखकर लिखना भी संभव नहीं है। क्योंकि साहित्य कोई तकनीक नहीं एक जीवंत कला है जो बगैर जीवन के जीवंत नहीं होती। बानू लंकेश पत्रिका से भी जुड़ी थीं और बेंगलुरु आल इण्डिया रेडियो में भी काम किया।

बानू मुश्ताक (77) की स्कूली शिक्षा की शुरुवात भी कठिन चुनौतियों से हुई यही उनके लेखकीय जीवन की चुनौती बनी। उनका जन्म 1948 में कर्नाटक के मुस्लिम परिवार में हुआ था। शिवमोगा के कन्नड़ मिशनरी स्कूल में पिता के काफी प्रयास के बाद उनका दाखिला भी आठ साल की उम्र में इस शर्त पर हुआ था कि उन्हें छह माह में कन्नौड़ को लिखना पढ़ना आना चाहिए, नहीं तो स्कूल छोड़ना पड़ेगा। क्योंकि बानू एक मुस्लिम परिवार से रहीं जहाँ स्कूल की शर्त उनके लिए एक चुनौती थीं, लेकिन उन्होंने कर दिखाया। मुश्ताक ने 1980 में मुस्लिम समाज में कट्टरता को कम करने के लिए काम किया। उन्होंने मस्जिदों में भी मुस्लिम महिलाओं के प्रवेश की वकालत किया जिसकी वजह से उनके परिवार का सामाजिक बहिष्कार भी हुआ। उन्हें जान से मारने की धमकियां भी मिली। हलांकि उन्होंने स्कूलों में मुस्लिम लड़कियों के हिजाब पहनने का समर्थन किया था, जिसका विवाद कर्नाटक के शिक्षा संस्थानों में आज भी मुद्दा है।

बानू मुश्ताक ने मुस्लिम समाज में औरतों और दूसरी समस्याओं को बड़ी गहराई से परखा। ऐसी समस्याओं ने उन्हें प्रभावित किया जिसे उन्होंने कहानी या लघुकथा का आधारा बनाया। लिखने का शौक उन्हें बचपन से था, उनकी पहली कहानी 26 साल की उम्र में प्रजामाता में प्रकाशित हुई इसके बाद लेखन की दुनिया में उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। जिस हॉर्ट लैम्प के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिला है उसमें 1990 से 2023 तक की लघुकथाएं हैं जिनमें मुस्लिम समाज की महिलाओं का संघर्ष दिखाया गया है। अनुवादक दीपा भस्थी भी पहली भारतीय हैं जिन्हें यह सम्मान मिला है।

मुश्ताक कहानियों का अनुवाद साल 2022 में पहली बार दीपा भस्थी ने अंग्रेजी में किया। जिसमें उन्होंने हॉर्ट लैंप नाम से कन्नड़ से कुछ चुनी हुई कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद किया जिन्हें बुकर पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया है। इस पुरस्कार में 50 हजार पाउंड की राशि लेखक को मिलती है। जिसमें आधी राशि अंग्रेजी अनुवादक के हिस्से में जाती है। क्योंकि बुकर पुरस्कार सिर्फ अंग्रेजी कृति या उस भाषा में अनुदित संग्रह को ही मिलता है। इसका मकसद साफ है कि अच्छा साहित्य सभी तक पहुंचना चाहिए। क्योंकि कि साहित्य की कोई सीमा नहीं होती है। भारतीय रुपए में इस पुरस्कार की कीमत 52.95 लाख होती है। मुश्ताक पहली कन्नड़ लेखिका हैं जिन्हें बुकर पुरस्कार 2025 के लिए चुना गया। यह अनुवादक दीपा भस्थी के लिए भी गर्व का विषय है।

बुकर पुरस्कार के निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष मैक्स पोर्टर कहानियों की सराहना किया। उन्होंने कहा है कि हलांकि मुश्ताक की कहानियां स्त्रीवादी विचारधारा की पोषक हैं। पितृसतात्मक व्यवस्था का मुखर विरोध और प्रतिरोध है। लेकिन सबसे अहम बात है कि इसमें स्त्री के दैनिक जीवन के संघर्ष को बेहद उम्दा तरीके से प्रदर्शित किया गया है। यह अपने आपमें सबसे अलग है।

अब तक छह पूर्व भारतीय लेखकों को उनकी कृति के लिए अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिल चुका है। जिसमें वीएस नायपॉल, सलमान राश्दी, अरूँधती राय, किरण देशाई, अरविंद अडिगा और गीतांजली श्री को हिंदी उपन्यास के लिए 2022 में यह पुरस्कार मिला था। जबकि सबसे पहले 1971 में नायपॉल को मिला मिला था। बुकर की होड़ में पांच किताबें शामिल थीं जिसमें सोलेज की ऑन द कलकुलेशन ऑफ़ वैल्यूज, स्मॉल बोट की विसेंट डेलिक्रोइस्क, हीरोमी कावाकामी की अंडर द आई ऑफ द बिग बर्ड, डिसेंजो लैट्रिनिको की परफेक्शन और ऐरी सेरे की ए लैपर्ड स्किन हैट शामिल थीं। ऐसी स्थित में कन्नड़ से अंग्रेजी में अनुदित हॉर्ट लैम्प को बुकर मिलना गर्व की बात है।

बुकर पुरस्कार की स्थापना 1969 में इंग्लैंड की मैकोनल कम्पनी ने की थीं। इस पुरस्कार का पूरा नाम मैन बुकर प्राइज फ़ॉर फिक्शन है। इसमें लेखक और अनुवादक को निर्धारित 50 हजार पाउंड की राशि में आधा-आधा हिस्सा मिलता है। इस पुरस्कार का उदेश्य अच्छे साहित्य का विकास है। जिसकी अवधारणा है कि कोई भी अच्छा साहित्य की कोई सीमा नहीं होती, बस उसके लिए मंच और माध्यम आवश्यक है। इसमें न लेखक की भाषा मायने रखती है न लेखक की जाति और धर्म। बस ! आप भी लिखते हैं तो कुछ अच्छा लिखिए, भले छोटा लिखिए या कम लिखिए।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद ने रविवार को बालाघाट जिले के बालाघाट विधानसभा के अंतर्गत नगर मण्डल के बूथ क्र. 226 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के मन की बात कार्यक्रम को सुना। इस अवसर पर सांसद भारती पारधी, जिला अध्यक्ष राम किशोर कावरे, वरिष्ठ नेता श्री गौरशंकर बिसेन, बूथ अध्यक्ष विनोद मंगलानी सहित जिला पदाधिकारी, कार्यकर्ताओं एवं स्थानीय जन उपस्थित रहे।

साइक्लिस्ट्स के लिए मेडिटेशन सत्र का आयोजन, रोड सेफ्टी की प्रतिज्ञा भी दिलाई गई

भोपाल। आज प्रातः सुख शांति भवन मेडिटेशन रिट्रीट सेंटर, नीलबड़ में साइक्लिस्ट्स के लिए एक विशेष मेडिटेशन सत्र का आयोजन किया गया। इस आयोजन का 'उद्देश्य मानसिक शांति, शारीरिक स्वास्थ्य और सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता को एक साथ जोड़ते हुए समग्र कल्याण की दिशा में प्रेरित करना रहा। Global Road Safety Week के अंतर्गत इस विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें साइक्लिस्ट्स को आंतरिक और बाह्य सुरक्षा के महत्व पर जागरूक किया गया। इस वर्ष की थीम 'Make Walking and Cycling Safe' के अनुरूप, साइक्लिंग को न केवल एक यातायात माध्यम, बल्कि एक जीवन शैली और ध्यानमय साधना के रूप में प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत ब्रह्माकुमारी हेमा बहन के द्वारा स्वागत और उद्घाटन भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने साइक्लिस्ट्स को चलते-फिरते योगी की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि सुरक्षा केवल सड़क पर नहीं, विचारों में भी ज़रूरी है – Safety begins in the soul. उन्होंने बताया ब्रह्माकुमारी संस्था के Transport & Travel Wing द्वारा वर्षों से ट्रैफिक पुलिस, ड्राइवरों, रेलवे एवं एविएशन क्षेत्र में राजयोग मेडिटेशन एवं वैल्यू-बेस्ड ट्रेनिंग प्रदान की जा रही है – जिससे ट्रैफिक सुरक्षा में नई चेतना और स्थिरता लाई जा सके।

कार्यक्रम में सुख शांति भवन की 'निदेशिका नीता दीदी' ने साइक्लिस्ट्स के जीवन में मेडिटेशन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साइक्लिंग शरीर को ऊर्जा देती है, वहीं राजयोग ध्यान मन को संतुलन, शांति और स्पष्टता प्रदान करता है। 'ट्रैफिक के बीच सतर्कता, धैर्य और निर्णय क्षमता बनाए' रखने के लिए मेडिटेशन एक अमूल्य साधन है।

उन्होंने बताया कि जैसे साइकिल चलाते समय संतुलन और जागरूकता आवश्यक है, वैसे ही जीवन में ध्यान और आत्म-चिंतन से ही संतुलन बनता है। राजयोग ध्यान न केवल मानसिक स्थिरता देता है, बल्कि सड़क पर सजगता और सहनशीलता भी बढ़ाता है।

कार्यक्रम में Road & Mind Safety पर विशेष बल दिया गया, जिसमें बताया गया कि मन की गति और संकल्पों को नियंत्रित करना भी उतना ही आवश्यक है जितना ट्रैफिक सिग्नल्स का पालन। उन्होंने विशेष बताया गया कि 'नियमित मेडिटेशन तनाव को कम करता है, प्रतिक्रिया की गति को नियंत्रित करता है और साइक्लिंग जैसी एक्टिविटी को और अधिक सुरक्षित तथा आनंददायक बनाता है।'

नर्सिंग ऑफिसर बीके सुनीता बहन द्वारा राष्ट्र (UN) की इस वर्ष की थीम के अंतर्गत रोड ट्रैफिक सेफ्टी 'प्रतिज्ञा' कराई गई, जिसमें सभी साइक्लिस्ट्स ने ट्रैफिक नियमों का पालन करने और सड़कों पर सुरक्षित साइक्लिंग को बढ़ावा देने का संकल्प लिया।

इस दौरान प्रतिभागियों को बीके डॉ देवयानी द्वारा राजयोग ध्यान का अभ्यास भी कराया गया, जिससे उन्हें मानसिक ताजगी और आंतरिक शांति का अनुभव हुआ। साथ ही सभी प्रतिभागियों ने आत्मिक संकल्प लिया-

मैं आत्मा शांत स्वरूप हूँ। मैं विचारों पर ब्रेक लगाने में सक्षम हूँ। मैं स्वयं भी सुरक्षित रहूँगा और दूसरों की भी सुरक्षा करूँगा।

भोपाल के विभिन्न साइक्लिंग ग्रुप्स से आए साइक्लिस्ट्स ने इस आयोजन में उत्साहपूर्वक भाग लिया और इसे एक नई ऊर्जा व दिशा देने वाला अनुभव बताया। कार्यक्रम के समापन पर सभी ने नियमित ध्यान को अपनी दिनचर्या में शामिल करने का संकल्प लिया।

सुख शांति भवन द्वारा भविष्य में भी स्वास्थ्य, आत्मिक विकास एवं जनहित से जुड़े कार्यक्रमों के आयोजन की योजना है।

व्यंग्य भोजपाल की मासिक गोष्ठी संपन्न

भोपाल। भोजपाल साहित्य संस्थान के अंतर्गत 'व्यंग्य भोजपाल' की मासिक गोष्ठी का आयोजन वनमानी सृजन पीठ के अरेरा कालोनी स्थित कार्यालय में किया गया। अध्यक्षता संस्था के कार्यकारी अध्यक्ष सुदर्शन कुमार सोनी ने की व मुख्य अतिथि अरुण अर्नव खरे रहे द्य कार्यक्रम में व्यंग्य रचना के पाठ किए गए। अरुण खरे द्वारा 'बेशरम हँसी वाया ब्रैनस।' सुरेश पटवा द्वारा नसों में दौड़ने वाला सिंदूर,सतीश. द्वारा' शांति व अमन' विवेक रंजन श्रीवास्तव द्वारा 'टिकटाक वाली जीत पाकिस्तान की' यशवंत गोरे द्वारा 'मॉनसून का विदाई समारोह' सुदर्शन कुमार सोनी द्वारा 'देश का हर दूसरा नागरिक सुरक्षा विशेषज्ञ' का पाठ किया गया। चन्द्रभान राही ने ग़ज़ल 'आतंक तुम्हारा बढ़ गया' सुनाई । आभार प्रदर्शन सुरेश पटवा ने किया।

जर्नलिस्ट हेल्थ केयर समिति का स्वास्थ्य परीक्षण शिविर संपन्न

भोपाल। सोसायटी फॉर जर्नलिस्ट हेल्थ केयर समिति का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर रविवार को शिवाजी नगर स्थित पंडित शीतल प्रसाद तिवारी वाचनालय परिसर में संपन्न हुआ। शिविर

के आयोजन में भाजपा नेता एवं अपोलो सेज हास्पिटल के स्तंभ, डॉक्टर हितेष वाजपेयी का विशेष सहयोग रहा।

समिति के अनुसार अपोलो सेज हास्पिटल, वार्ड 46 के पार्षद योगेन्द्र गुड्डू चौहान तथा संस्कृति बचाओ मंच के संयोजक चन्द्रशेखर तिवारी के सौजन्य से तीन घंटे चले इस शिविर में काफी संख्या में पत्रकारों एवं उनके परिजनों के अलावा बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों ने लाभ लिया। मध्य प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री एवं कांग्रेस नेता पी.सी.शर्मा ने भी सपत्नीक पहुंचकर चेकअप कराया। विभिन्न जांच करायीं। अपोलो सेज हास्पिटल के हृदय रोग एवं मधुमेह विशेषज्ञ डॉक्टर आनंद जाट के नेतृत्व में हास्पिटल के अनुभवी डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टॉफ द्वारा शिविर में पहुंचे पत्रकारों, पत्रकारों के परिजनों और आमजनों के वाइटल चेकअप के साथ-साथ ब्लड प्रेशर, रेंडम ब्लड शुगर, ईसीजी, दांतों की जांच सहित अन्य परीक्षण कर परामर्श दिए ।

ग्वालियर शार्ट फ़िल्म फेस्टिवल की अवॉर्ड प्राप्त फिल्में लोन और ध्रुव तारा का प्रदर्शन

भोपाल। सतपुड़ा चलचित्र समिति द्वारा आयोजित 115 फिल्म आस्वादन कार्यक्रम में आशीष बाथरी की फिल्म 'लोन-आसान दरों पर' और चक्षु शर्मा की फिल्म 'ध्रुव तारा' का प्रदर्शन किया गया।

15 फ़िल्म फेस्टिवलों में अवार्ड से सम्मानित लोन, समाज को सस्ते लोन से आगाह करती है, राहुल तिवारी की सजीव अभिनय से सजी फ़िल्म दर्शको को यह सोचने पर मजबूर करती है, कि सस्ते लोन के मायाजाल में नही फसना चाहिए।

चक्षु शर्मा के निर्देशन में बनी फिल्म 'ध्रुव तारा' हिमाचली बैकग्राउंड में ध्रुव और तारा के किरदारों के रूप में देश के सैनिकों और उनके परिवारों के दर्द को भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है।

फ़िल्म प्रदर्शन के बाद फिल्म के निर्देशक आशीष बाथरी और अभिनव से दर्शको ने फिल्म के रचनात्मक और तकनीकी पक्षों पर विस्तार से चर्चा की गई। इस अवसर पर सतपुडा चलचित्र समिति के अध्यक्ष लाजपत आहूजा, माखन लाल चतुर्वेदी रा.प.विवि के प्राध्यापक श्री लोकेन्द्र सिंह एवं भानु मित्रा, फ़िल्म निर्देशक शिवम भावसार, मयंक शर्मा, विजय तिवारी, यूनस खान के साथ फिल्म प्रेमी बंधु उपस्थित रहे।

केंद्रीय मंत्री शिवराज ने सीहोर जिले से विकसित भारत संकल्प यात्रा का किया शुभारंभ

प्रधानमंत्री के विकसित भारत का संकल्प मेरे लिए मंत्र बन गया: शिवराज सिंह

सीहोर/भोपाल। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने रविवार को सीहोर विदिशा संसदीय क्षेत्र के सीहोर जिले से विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ किया। शिवराज सिंह ने इस दौरान लाड़कुई में प्रधानमंत्री आवास योजना, वन विभाग की योजनाओं और आदिम जाति कल्याण की योजनाओं के हितग्राहियों से संवाद किया। साथ ही भादाकुई और छींदगांव में जैविक खेती, वाणिज्यिक खेती, उद्यानिकी व स्वरोजगार पर चर्चा की और लाड़ली बहना व लखपति दीदीयों से भी संवाद किया।

इस दौरान शिवराज सिंह कहा कि एक ताकतवर भारत और विकसित भारत हमारा लक्ष्य है। विकसित भारत का प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का संकल्प मेरे लिए मंत्र बन गया है, लेकिन भारत विकसित कब बनेगा...? भारत विकसित तब बनेगा, जब हमारा हरेक गांव विकसित बनेगा, मतलब ऐसा भारत जहां सड़क, बिजली, पानी का जाल बिछा हो, खेती उन्नत हो, हरेक परिवार रोजगार से जुड़ा हो, कोई भी इस धरती पर भूखा ना सोए, इलाज की बेहर सुविधाएं हो। अपना हर क्षेत्र विकसित हो।

विकसित भारत में सबका योगदान हो– केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि विकसित का मतलब केवल पुल, पुलिया, स्कूल, अस्पताल नहीं है, इसके आगे भी विकास का ये सिलसिला जारी रहे। विकसित भारत मतलब जहां मानवीय गरिमा का सम्मान होता हो, जहां गरीब भी किसी ना किसी साधन से जुड़ा हो, यहां की बहनों कि आमदनी ऐसी हो कि वह शौर्य और स्वाभिमान के साथ अपनी जिंदगी बिता सकें। विकसित भारत केवल प्रधानमंत्री जी, मुख्यमंत्री, मंत्री, सांसद, विधायक नहीं बना सकते हैं, इसके लिए हम सबको प्रयत्न करना पड़ेगा। विकसित भारत के लिए गांव-शहर का हर इंसान गंभीर हो। वह सोचे कि मैं अपना गांव विकसित करने के लिए क्या योदगान दे सकता हूं, हमारा गांव स्वच्छ होना चाहिए, यहां पानी का संरक्षण होना चाहिए, यहां के स्कूल अच्छे हो, यहां की आंगनबाड़ी अच्छी हो, यहां महिलाओं के सेल्फ हेल्प ग्रुप बने हो, जो बहनों की आमदनी बढ़ाएं और रोजगार के साधन उत्पन्न कर रहे हो। बच्चों में टैलेंट और क्षमताएं बढ़ें, वो लगातार आगे बढ़ते रहे।

विकसित भारत संकल्प पदयात्रा– केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मैं आज एक अलग उद्देश्य से इस पदयात्रा पर निकला हूं। उन्होंने कहा कि आज उत्पादन बढ़ाने के लिए अच्छे बीज बनाने वाली संस्था भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के महानिदेशक, अन्य वरिष्ठ अधिकारी, ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक भी मेरे साथ इस पदयात्रा में आए हैं। ये वैज्ञानिक खेतों में जाकर किसानों से बात करेंगे, उन्हें अनुसंधान के बारे में जानकारी देंगे। इसके अलावा इस पदयात्रा में हम जनजातीय बहनों-भाइयों से भी चर्चा करेंगे। बहनों के सेल्फ हेल्प ग्रुप से भी चर्चा करेंगे, नौजवानों से भी केन्द्र सरकार की तमाम योजनाओं के बारे में बात करेंगे। प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राहियों से भी हम चर्चा करेंगे। सभी से चर्चा करके सार निकालेंगे कि आगे और क्या किया जा सकता है। जनता, नेता और प्रशासन सभी एक साथ बैठकर गंभीर चर्चा करेंगे। उन्होंने कहा कि मन में तड़प है कि अपनी जनता के लिए सबसे अच्छा और बेहतर करें। हम सभी मिलकर आगे बढ़ेंगे और परिश्रम की पराकाष्ठा करेंगे।

29 मई से वैज्ञानिक किसानों के द्वार– केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कृषि एवं किसान कल्याण प्रधानमंत्री श्रीमान नरेन्द्र मोदी जी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। कृषि को लाभ का धंधा बनाने के लिए अब 29 मई से विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरूआत की जा रही है। इस अभियान के तहत वैज्ञानिकों की 2170 टीमें बनाई जा रही है, एक टीम में 3 से 4 वैज्ञानिक होंगे जो गांव-गांव जाएंगे और उस गांव की और आसपास के क्षेत्र की जो एग्रोक्लाइमेट कंडिशंस हैं, वहां की मिट्टी में जो अलग-अलग पोषक तत्व हैं, वहां जलवायु परिवर्तन के असर, अलग-अलग फसलों में कीटों का प्रकोप है, इन सभी विषयों को समझकर, वैज्ञानिक, किसानों को सलाह देंगे और किसान भी अपने सवाल पूछेंगे, अपनी समस्याएं बताएंगे, ये संवाद एकतरफा नहीं बल्कि दोतरफा होगा।

शिवराज सिंह ने कहा कि वैज्ञानिक किसानों को आधुनिक रिसर्च के बारे में बताएंगे कि इन परिस्थितियों में इस क्षेत्र में कौन सी फसल उपयुक्त है, कौन सी वैरायटी उपयुक्त है, कौन सा बीज लगाएं, कौन सा खाद कितनी मात्रा में डालें, अगर कहीं वायरस अटैक हो तो उससे फसलों को कैसे बचाएं, इसके साथ-साथ किसानों से भी कई चीजें निकलकर आएगी, किसानों की जरूरत के हिसाब से रिसर्च हो रहा है या नहीं तो किसानों से सुनकर रिसर्च की दिशा भी तय करेंगे। प्रधानमंत्री मोदी जी ने कहा है कि लैब टू लैंड, यानी अनुसंधान खेतों तक पहुंचें, इसलिए ये विकसित भारत के लिए विकसित कृषि संकल्प अभियान बना है।

विकसित भारत के निर्माण में भूमिका निभाए युवा शक्तिः तोमर

नई दिल्ली। मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर शनिवाार को नई दिल्ली में मध्यांचल छात्र समिति द्वारा आयोजित मध्यांचल महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। जवााहर लाल नेहरू विश्वविद्यायल (जेएनयू) के कन्वेंशन सेंटर में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रदेश भाजपा अध्यक्ष एवं सांसद वी.डी.शर्मा, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष अंतर सिंह आर्य, वरिष्ठ पत्रकार आलोक मेहता, शिक्षाविद डॉ. अंशु जोशी उपस्थित थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि दिल्ली में रह कर अध्ययन कर रहे मध्यप्रदेश के युवाओं को आपस में जोड़ने का यह अभिनव एवं प्रशंसनीय प्रयास है।

उन्होंने कहा कि आज के विद्यार्थी ही आने वाले कल में मध्यप्रदेश और भारत का भविष्य हैं। ये युवा यहां अपना कल गढ़ने के लिए अपना प्रदेश, अपना घर छोड़कर यहां आए हैं। हम सभी का प्रयास होना चाहिए कि इन्हें यहां कोई समस्या न हो। विद्यार्थियों में एकता, संस्कार, देशज भावना अवश्य होना चाहिए। मध्यांचल छात्र समिति प्रदेश के युवाओं की दिल्ली में शैक्षणिक, सामाजिक एवं अन्य स्तर की समस्याओं को दूर करने का प्रयास कर रही है। भविष्य में उनका यह प्रयास बहुत बड़े परिणाम देने वाला कदम साबित होगा। तोमर ने कहा कि विकसित भारत के निर्माण में मध्यप्रदेश के युवाओं को महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की जरूरत है। इसके लिए युवाओं को सहयोग एवं समर्थन के ये प्रयास प्रशंसनीय है। तोमर ने कहा कि वास्तविक अर्थों में जनकल्याण को जमीन पर उतारकर राजमाता से लोकमाता बनीं देवी अहिल्या बाई होल्कर जी की 300 वां जन्म जयंती वर्ष हम मनाने जा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में देशभर में अहिल्याबाई होल्कर जी के पुण्य स्मरण में कार्यक्रम होंगे। इस तरह के आयोजन के लिए युवाओं को भी आगे आना चाहिए

एम्स भोपाल की फैकल्टी डॉ. उज्ज्वल खुराना फ्लोरेंस, इटली में आयोजित 22वें इंटरनेशनल में आमंत्रित

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह संकाय सदस्यों और छात्रों के बीच अकादमिक उत्कृष्टता और ज्ञान-साझाकरण की संस्कृति को सदैव बढ़ावा देते रहते हैं। प्रो. सिंह से प्रेरित होकर संकाय सदस्य विभन्न शोध कार्यों में असाधारण प्रदर्शन कर रहे हैं। हाल ही में, पैथोलॉजी और लैब मेडिसिन विभाग की एडिशनल प्रोफेसर डॉ. उज्ज्वल खुराना को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्थान और देश का प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त हुआ। उन्हें 11 से 15 मई, 2025 के दौरान फोर्टेज़ा दा बासो, फ्लोरेंस, इटली में आयोजित 22वें इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ साइटोलॉजी 2025 में मौखिक प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया गया। डॉ. खुराना ने ट्यूबरकुलस लिम्फैडेनाइटिस के आणविक निदान में फाइन नीडल एस्पिरेशन का मूल्यांकन विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। यह सत्र सिर और गर्दन, संक्रामक रोग खंड के अंतर्गत हुआ, जिसमें प्रस्तुत शोध पत्रों की अध्यक्षता इमाकोलाटा कोज़ोलिनो और डॉ. जुबैर बलूच द्वारा की गई। यह सम्मेलन इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ साइटोलॉजी द्वारा आयोजित किया गया था, जो साइटोलॉजी के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संस्था है।

यह शोध कार्य एलओपी से मान्यता प्राप्त एक अध्ययन के अंतर्गत किया गया था, जिसे एम्स भोपाल के पैथोलॉजी और लैब मेडिसिन विभाग तथा माइक्रोबायोलॉजी विभाग के सहयोग से संपन्न किया गया। इस अनुसंधान दल में शामिल थे डॉ. उज्ज्वल खुराना, डॉ. रिमझिम रस्तोगी, डॉ. आनंद कुमार मौर्य, प्रो. (डॉ.) अलकेश कुमार खुराना, प्रो. (डॉ.) वैशाली वाल्के और सुश्री अंतिशा तिवारी। अपने व्याख्यान में डॉ. उज्ज्वल खुराना ने बताया कि कैसे उन्होंने आर्काइवल एफएनएसी स्मीयर से डीएनए निष्कर्षण, डीएनए मात्रात्मक विश्लेषण, तथा एचएसपी65 और आईएस6110 प्राइमर के माध्यम से न्यूक्लिक एसिड प्रवर्धन किया। यह अध्ययन ताजे एस्पिरेट पर किए गए सीबीएनएएटी परीक्षण के तुलनीय परिणाम प्रदान करता है, जिससे पुरानी स्लाइड्स से भी ट्यूबरकुलोसिस के आणविक निदान की दिशा में नई संभावनाएं खुलती हैं। इस सम्मेलन में विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें भारत के कई प्रतिष्ठित संस्थानों के प्रतिनिधि भी शामिल थे। इस उपलब्धि पर अपनी शुभकामनाएं देते हुए प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा- डॉ. उज्ज्वल खुराना और उनके अनुसंधान दल की यह उपलब्धि एम्स भोपाल की अनुसंधान क्षेत्र में उत्कृष्टता और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उपस्थिति को दर्शाती है। यह संस्थान में हो रहे उच्च गुणवत्ता वाले शोध और विभिन्न विभागों के बीच सहयोग का प्रतीक है।

किसानों का मुद्दा

हेमंत पाल
(सुबह सवेरे के स्थानीय संपादक, इंदौर)

कलेक्टर का वो नायक रूप जिसने किसानों के दिन फेरे

यह सिर्फ एक घटना नहीं, बदलाव का एक संकेत भी है। गरीब किसानों के प्रति प्रशासन की जिम्मेदारी वाली भावना का। अलीराजपुर को आम उत्पाद का सबसे बड़ा इलाका कहा जाता है। यहां साल के दो महीने में आम का करीब 25 करोड़ का कारोबार हो जाता है। लेकिन, इतने बड़े कारोबार में भी आम उत्पादक किसान के हाथ चंद रूपए आते हैं। क्योंकि, बिचौलिए व्यापारी सस्ती कीमत में आम खरीदकर बड़े शहरों में महंगा बेचते हैं। यहां का आम कई बड़ी पल्प कंपनियां भी खरीदती है। मंडी में कलेक्टर की नाराजगी ने आम उत्पादकों को उनकी फसल का कई गुना दाम दिलवा दिया। लेकिन, अभी भी यहां बहुत कुछ होना है, जिससे आम उत्पादक किसान अपनी फसल के साथ समृद्ध भी हों।

ये घटना भले ही आदिवासी बहुल और आर्थिक रूप से सबसे ज्यादा विपन्न जिले अलीराजपुर की हो, पर सोशल मीडिया ग्रुप पर वायरल हुए एक वीडियो ने इसे देशभर में चर्चित कर दिया। मामला 19 मई का है, जिस दिन अलीराजपुर में इस साल की आम मंडी की शुरुआत हुई। कलेक्टर डॉ अभय बेडेकर जिज्ञासावश आम की मंडी चले गए। यहां की इस मंडी को प्रदेश की सबसे बड़ी आम मंडी भी कहा जाता है। लेकिन, वहां उन्होंने जो स्थिति देखी, उससे वे द्रवित भी हुए और नाराज भी। इसके बाद जो हुआ, उसने यहां के आम उत्पादक किसानों के दिन बदल दिए। जो आम व्यापारी 4 से 5 रूपए किलो में खरीदते थे, वो कई गुना बढ़ गए।

कलेक्टर के मुताबिक, मंडी की शुरुआत के दिन ही दूर-दूर से आदिवासी किसान अपना आम बेचने मंडी में आए थे। चारों तरफ अधपके और कच्चे आम के बड़े ढेर लगे थे। मंडी में आम लाने वाले आदिवासी किसान थे और उन्हें खरीदने वाले व्यापारी भी।

देखा गया कि यहां तौल कर आम बेचने की कोई व्यवस्था नहीं है। जो बड़े-बड़े ढेर लगे हैं, वे अंदाज से ही 4 और 5 रूपए किलो के हिसाब से बेचे जा रहे हैं। ये अंदाजा भी व्यापारी ही लगाते हैं। डॉ बेडेकर बताते हैं कि मुझे देखकर आश्चर्य हुआ कि आम उत्पादक किसानों के साथ ये तो एक तरह का जुल्म है, कि उनकी फसल को व्यापारी औने-पौने दाम पर खरीद रहे हैं। मुझे दुख हुआ कि गरीब आदिवासियों के साथ ये तो बहुत ज्यादती है। जो आम सामान्य तौर पर थोक में कम से कम 15 रूपए किलो में बिकना चाहिए, वो 4-5 किलो में बिना तौल के व्यापारी खरीद रहे हैं और किसान मज़बूरी में उसे बेच भी रहा है। जिस तरह से व्यापारी कीमत लगा रहे थे, उससे साफ़ लगा कि खरीददार व्यापारियों ने पहले से तय कर लिया था कि किसानों को 4 या 5 रूपए किलो से ज्यादा कीमत नहीं देना है। सभी व्यापारी जब एक ही भाव बताएंगे तो किसान के पास कोई चारा ही नहीं बचता। मुझे लगा कि इस ज्यादती को रोका जाना और किसान के साथ इंसाफ बहुत जरूरी है। कलेक्टर ने मंडी सचिव और संबंधित अधिकारी को वहीं मंडी में

व्यापारियों और किसानों के सामने फटकार लगाई। वहां जो दृश्य देखा, उसके बाद कलेक्टर का सार्वजनिक रूप से नाराज होना स्वाभाविक भी था और जरूरी भी, ताकि मौजूद लोग वास्तविकता और प्रशासन की सख्ती से वाकिफ हो जाएं। डॉ बेडेकर के मुताबिक, मैंने अपने स्वभाव के विपरीत वहां नाराजगी जाहिर की। इसके अलावा सम्बंधित अधिकारियों को ऑफिस में तलब कर इसका हल निकालने के लिए कहा। इसका असर ये हुआ कि दूसरे ही दिन आम की अधिकतम खरीद 45 रुपए किलो तक हुई। निश्चित रूप से आम के न्यूनतम भाव भी 15 रूपए किलो के आसपास रहे, जिससे आम उत्पादक किसानों को फ़ायदा हुआ। कुछ किसान ढेर में ही आम बेचना पसंद करते हैं, उन्हें समझाया गया कि तौल कांटा लगने से उन्हें ही फ़ायदा होगा। उन्हें अपनी फसल की पूरी कीमत भी मिलेगी। इस बारे में संबंधित अधिकारियों से बात भी हुई है और जल्द ही अलीराजपुर में तौल कांटा लगाया जाएगा। इस पूरे घटनाक्रम की एक खास बात ये भी रही कि कलेक्टर डॉ अभय बेडेकर की मंडी में नाराजगी का वीडियो जबरदस्त वायरल हुआ। बताते हैं कि कुछ वायरल हुए कुछ वीडियो को 15 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा। टोटल व्यूज की बात की जाए तो एक सप्ताह में करीब 25 से 27 लाख व्यूज इस वायरल हुए वीडियो को मिले। सवाल उठता है कि क्या कलेक्टर की नाराजगी नई बात है, जो लोगों ने इस वीडियो को इतने बार देखा। दरअसल, ऐसा कई बार होता है कि इस पद पर बैठे व्यक्ति को सार्वजनिक रूप से नाराजगी जाहिर करना पड़ती है। फिर इस वीडियो में ऐसा क्या था कि इसे लाखों लोगों ने देखा और अभी भी ये देखा जा रहा है। कलेक्टर ने बताया कि मेरे पास इस बारे प्रदेश के बाहर से भी फोन आए और उन्होंने सराहना की। दरअसल, ये गरीब किसानों के प्रति जनता की सहानुभूति उभरने का मामला है। जनता ऐसे व्यापार को कभी सही नहीं मानती, जो किसी का हक़ छीनकर किया जा रहा हो और अलीराजपुर मंडी में डॉ बेडेकर की नाराजगी को लोगों ने उसी तरह लिया।

आदिवासी जिला अलीराजपुर आम के मामले में बेहद समृद्ध है। यहां से सौ से ज्यादा किस्म के आम होते हैं। ज्यादातर आम की किस्में वे हैं जो देश में और कहीं नहीं उपजती। इन्हें दुर्लभ आम कहा जा सकता है। इस वजह से यहां का आम दिल्ली, मुंबई, इंदौर समेत देशभर में भेजा जाता है। कई बड़ी आम पल्प उत्पादक कंपनियां यहां आम के खरीददार व्यापारियों से पहले ही सौदा करके इनकी खरीद करती हैं। अनुमान है कि अलीराजपुर में हर साल करीब 25 करोड़ के आमों का कारोबार होता है। कुछ साल पहले तक यहां राजस्थान, दिल्ली, महाराष्ट्र और गुजरात के व्यापारी आम की खरीद करने आते थे। लेकिन, ऐसी अव्यवस्था के चलते उन्होंने आना छोड़ दिया। जानकारी के मुताबिक, अलिराजपुर जिले में लगभग साढ़े 3 लाख आम के फल देने वाले नए और पुराने पेड़ हैं। इनमें से फसल ख़राब होने की स्थिति में भी हर चौथे पेड़ पर आम जरूर आते हैं। यानी 80 हजार से 1 लाख पौधे हर साल आम देते हैं। न्यूनतम प्रति पेड़ पर 200 किलो आम आता है जिसकी औसत कीमत 2500 रूपए आंकी जा सकती है। सीधा सा गणित हुआ कि जिले में हर साल 25 करोड़ का आम होता है। जबकि, पके और कच्चे आम के बाजार मूल्य में 100 प्रतिशत का अंतर देखा जाता है। जहां तक सरकारी प्रयास की बात है, तो कृषि विभाग यहां के दुर्लभ किस्म के आमों की क्वालिटी में सुधार के कोई प्रयास नहीं करता। उद्यानिकी और कृषि विभाग की लापरवाही के चलते मॉनिटरिंग नहीं होती और इस उत्पाद से जुड़ी फूड प्रोसेसिंग की कोई यूनिट यहां नहीं है। जबकि, सरकार को यहां आमों की फसल को सुरक्षित रखने के लिए कोल्ड स्टोरेज खोलना चाहिए, ताकि आम उत्पादक किसान अपनी फसल को कुछ दिन बचाकर उचित व्यापार कर सकें।

लोकसभा चुनाव के पहले हुआ था प्रमोशन, पद नहीं मिला

मार्च 2024 में बने थे अपर कलेक्टर, काम जाइंट कलेक्टर का कर रहे राप्रसे अफसर

भोपाल (नप्र)। सवा साल पहले लोकसभा चुनाव की आचार संहिता लागू होने के पहले अपर कलेक्टर बने राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारी सरकार की अनदेखी के कारण संयुक्त कलेक्टर की नौकरी करने को मजबूर हैं। सामान्य प्रशासन विभाग ने तीस अधिकारियों को अपर कलेक्टर बनने का आदेश जारी करने के बाद दो तीन अधिकारियों को छोड़ किसी अन्य अपर कलेक्टर की नवीन पदस्थापना नहीं की है। इस कारण ये अधिकारी अपने पुराने जिलों में ही मार्च 2024 से अब तक जॉइंट कलेक्टर के बजाय अपर कलेक्टर का काम करने को मजबूर हैं। अब जबकि तबादलों पर प्रतिबंध हटा है तो ये अधिकारी अपनी नवीन पदस्थापना का इंतजार कर रहे हैं।

लोकसभा चुनाव की आचार संहिता के पहले हुए थे आदेश: राज्य प्रशासनिक सेवा के संयुक्त कलेक्टर स्तर के अधिकारियों को अपर कलेक्टर के पद पर प्रमोट करने के लिए सामान्य प्रशासन विभाग ने सवा साल पहले 8 मार्च को आदेश जारी किए थे। लोकसभा चुनाव के लिए 16 मार्च से लागू हुई चुनाव आचार संहिता के पहले जारी इस आदेश के बाद संयुक्त कलेक्टर बने अफसरों को उम्मीद थी कि चुनाव होने के बाद उन्हें अपर कलेक्टर के पद पर जिलों में पदस्थापना मिलेगी, लेकिन ऐसा नहीं हो सका है और एक दो अफसरों को छोड़ बाकी को अपर कलेक्टर की जिम्मेदारी पाने का इंतजार है। वे पुराने पदस्थापना वाले जिलों में अपर कलेक्टर बनने के बाद भी संयुक्त कलेक्टर का काम करने को मजबूर हैं। यह बात भी सामने आई है कि कई जिलों में अपर कलेक्टर के पद रिक्त हैं और एडिशनल चार्ज देकर काम कराया जा रहा है लेकिन सरकार इन पदों की योग्यता रखने वाले अधिकारी पदस्थ नहीं कर रही है।

प्रकाश नायक ही बन पाए अपर कलेक्टर: राज्य प्रशासनिक सेवा के जिन अफसरों को सरकार ने प्रमोट कर अपर कलेक्टर का वेतनमान देना शुरू किया था उसमें से प्रकाश नायक ही अपर कलेक्टर बन पाए हैं जो इस समय भोपाल में हैं।

एक्सप्रेस-वे पर अश्लील हरकत करने वाला भाजपा नेता गिरफ्तार

मंदसौर में महिला के साथ आपत्तिजनक हालत में दिखा था धाकड़; वीडियो वायरल

मंदसौर (नप्र)। मंदसौर जिले में दिल्ली-मुंबई 8 लेन एक्सप्रेस-वे पर महिला मित्र के साथ अश्लील हरकतें करने और डांस करने वाले भाजपा नेता मनोहर धाकड़ को पुलिस ने रविवार दोपहर को गिरफ्तार कर लिया है। भाजपा नेता मनोहर धाकड़ के दो वीडियो सामने आए थे। 13 मई की रात में एक वीडियो में वह महिला मित्र के साथ आपत्तिजनक स्थिति में दिखा था, जबकि दूसरे में एक्सप्रेस-वे पर ही उसके साथ डांस करता नजर आया था। सूत्रों के मुताबिक, फिलहाल एसडीओपी दिनेश प्रजापति और टीआई आरसी डांगी उससे पूछताछ कर रहे हैं। प्रशासन अब यह भी जांच कर रहा है कि वीडियो बनाने और सार्वजनिक करने के पीछे मकसद क्या था और इसमें और कौन-कौन शामिल था। वीडियो सामने आने के बाद 23 मई को मंदसौर के भानपुरा

मनोहर धाकड़, आरोपी

थाने में मनोहर धाकड़ और एक अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था।

घर से मिली थी आरोपी मनोहर धाकड़ की कार: 23 मई की रात पुलिस ने आरोपी मनोहर धाकड़ के गांव बनी में उसके घर पर दबिश दी थी। वहां मनोहर धाकड़ तो नहीं मिला, पुलिस ने एक्सप्रेस-वे पर लगे सीसीटीवी फुटेज में दिख रही कार को जब्त कर लिया था। भानपुरा टीआई आर.सी. डांगी ने बताया कि वीडियो में नजर आ रही महिला की पहचान अब तक नहीं हो सकी है। मनोहर की गिरफ्तारी के बाद ही महिला की जानकारी सामने आएगी, उसके बाद उसे भी गिरफ्तार किया जाएगा।

भाजपा नेता की पत्नी जिला पंचायत सदस्य: दरअसल, मंदसौर के बनी गांव के रहने वाले मनोहर धाकड़ की पत्नी वार्ड क्रमांक-8 से जिला पंचायत सदस्य है। 13 मई की रात के इस वीडियो में मनोहर धाकड़ दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे पर खड़ी सफेद बलेनो कार में एक महिला के साथ आपत्तिजनक हालत में दिख रहे हैं। उनका अश्लील वीडियो वायरल हो रहा है। 8 लेन एक्सप्रेस वे पर लगे हाई सिक्योरिटी कैमरे में पूरी घटना कैद हुई है। वीडियो इतना आपत्तिजनक और अश्लील है कि हम न तो आपको वो दिखा सकते हैं और न ही बता सकते हैं।

कांग्रेस ने हाईवे का गंगाजल से किया शुद्धिकरण

मंदसौर में दिल्ली-मुंबई 8 लेन एक्सप्रेस वे पर लगे कैमरे में भाजपा नेता मनोहर धाकड़ और उनकी महिला मित्र के दो आपत्तिजनक वीडियो सामने आने के बाद विवाद गहराता जा रहा है। रविवार को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने गरोठ क्षेत्र के टोल प्लाजा पहुंचकर गायत्री मंत्र का जाप किया और गंगाजल से एक्सप्रेस-वे का शुद्धिकरण कर विरोध जताया।

रेलवे सलाहकार समिति की मीटिंग में उठा मुद्दा

मालवा एक्स. निशातपुरा से चलाने की तैयारी, 50 प्रतिशत यात्रियों को होगी दिक्कत

भोपाल (नप्र)। पिछले दो साल से तैयार निशातपुरा स्टेशन को शुरू करने के लिए यहां मालवा एक्सप्रेस का स्टॉपेज देने की तैयारी है। रेलवे का प्रस्ताव है कि अभी भोपाल मेन स्टेशन पर आ रही यह ट्रेन निशातपुरा से बीना की ओर चली जाए। यदि ऐसा हुआ तो इसमें भोपाल से जाने वाले 50 प्रतिशत यात्रियों को 5 किमी का अतिरिक्त चक्कर लगाना पड़ेगा। जहांगीराबाद से लेकर कोलार रोड, होशंगाबाद रोड और भदभदा रोड के लोगों के लिए ज्यादा परेशानी होगी। विगत कुछ वर्षों में भोपाल का विकास दक्षिणी दिशा में ज्यादा हो रहा है, जैसे कटारा हिल्स, बावड़िया, सलैया, कोलार रोड पर नयापुरा आदि। इन स्थानों के लोगों को भोपाल जंक्शन ही बहुत दूर पड़ता है। कभी-कभी तो वहां पहुंचने के भी दो-दो घंटे लग जाते हैं।

कैब और टैक्सी का खर्चा 50 से 150 रुपए तक बढ़ जाएगा। यह मामला जेडआरयूसीसी की शुक्रवार को जबलपुर में हुई बैठक में सामने आया। मालवा एक्सप्रेस को भोपाल के स्थान पर निशातपुरा से चलाए जाने और स्टॉपेज देने संबंधी प्रस्ताव रेलवे जीएम के माध्यम से भेजा जा चुका है। सांसद आलोक शर्मा तक इस प्रस्ताव पर सहमति जता चुके हैं। जबलपुर में शुक्रवार शाम हुई पश्चिम मध्य रेल जोन की क्षेत्रीय उपयोगकर्ता व सलाहकार समिति की मीटिंग में रेलवे जीएम शोभना बंदोपाध्याय के सामने यह मामला उठा। सदस्य निरंजन वाधवानी ने कहा कि यदि मालवा एक्सप्रेस को निशातपुरा शिफ्ट किया जाता है, तो ट्रैफिक जाम सहित आम लोगों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ेगा।

जबलपुर स्टेशन पर चार दिन का रेलवे ब्लॉक

रानी कमलापति-अधारताल इंटरसिटी ट्रेन मदनमहल से चलेगी

भोपाल (नप्र)। पश्चिम मध्य रेलवे के जबलपुर स्टेशन पर रेलवे मेंटेनेंस कार्य चल रहे हैं। स्टेशन पर जरूरी सुधार कार्यों के चलते 27 मई से 30 मई तक रोजाना तीन घंटे का मेगा ब्लॉक लिया जाएगा। इस ब्लॉक का सीधा असर रानी कमलापति-अधारताल इंटरसिटी एक्सप्रेस पर पड़ेगा, जिसे इन चार दिनों के लिए मदनमहल स्टेशन से शॉर्ट टर्मिनेट और शॉर्ट ऑरिजिनेट किया जाएगा। रेलवे ने यात्रियों से अपील की है कि वे यात्रा पर निकलने से पहले अपनी ट्रेन की वास्तविक स्थिति की जानकारी एनटीईएस मोबाइल ऐप या रेलवे हेल्पलाइन नंबर 139 से जरूर ले लें, ताकि किसी प्रकार की असुविधा से बचा जा सके।

रेलवे के अधिकारियों के अनुसार: गाड़ी संख्या 22187, जो रानी कमलापति से अधारताल जाती है, 27 से 30 मई तक मदनमहल स्टेशन पर ही शॉर्ट टर्मिनेट कर दी जाएगी। यानी यह ट्रेन इन तारीखों में मदनमहल से आगे अधारताल तक नहीं जाएगी।

वहीं गाड़ी संख्या 22188, जो अधारताल से रानी कमलापति आती है, इन्हीं तारीखों में मदनमहल स्टेशन से शॉर्ट ऑरिजिनेट होगी। यानी यह ट्रेन अधारताल से मदनमहल तक नहीं चलेगी।

कही-सुनी

रवि भोई
(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

फ्लाईओवर के जमाने में स्काईवाक

लोग कह रहे हैं छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में स्काईवाक की जरुरत क्या है? अब तो जमाना फ्लाईओवर और मेट्रो रेल का है। शहर ही नहीं, गांवों में पैदल चलने वालों की संख्या बची नहीं। अब तो लोग घर से किराना स्टोर तक टू व्हीलर से जाते हैं और गांवों में लोग एक जगह से दूसरे जगह तक जाने के लिए बाइक का इस्तेमाल करते हैं। कई किलोमीटर स्काईवाक की जगह रोड़ क्रासिंग के लिए स्काईवाक होता तो शायद उसका इस्तेमाल ज्यादा होता। राजधानी में स्काईवाक बनाने का फैसला डॉ रमनसिंह की सरकार ने किया था। रमनसिंह की सरकार में स्काईवाक का स्ट्रक्चर काफी कुछ खड़ा भी हो गया था। कम्प्लीट होने से पहले सरकार बदल गई। कांग्रेस की भूपेश बघेल सरकार में स्काईवाक का काम रुक गया और बनाने या तोड़ने को लेकर कोई फैसला नहीं हो पाया। विचार-विमर्श में ही पांच साल बीत गया। बताते हैं अब विष्णुदेव साय की सरकार ने स्काईवाक के लिए 37 करोड़ रुपए मंजूर किए हैं। पहले ही इस पर करोड़ों रुपए खर्च हो चुके हैं। 37 करोड़ में स्काईवाक कितना आगे बढ़ेगा और लोग उस पर कदमताल कर पाएंगे, यह तो समय बताएगा ? दिल्ली-मुंबई जैसे महानगरों में भी देखें तो कई किलोमीटर का लंबा स्काईवाक नजर नहीं आता। अब छत्तीसगढ़ राजधानी रायपुर में फ्लाईओवर की मांग है। लोगों का कहना है कि रेलवे स्टेशन से शास्त्री चौक तक फ्लाईओवर बने तो ज्यादा उपयोगी होगा।

कब आदेश होगा फुलटाइम डीजीपी का ?

कहा जा रहा है कि छत्तीसगढ़ के फुलटाइम डीजीपी के लिए यूपीएससी ने राज्य को पैनल भेज दिया है। अब लोगों को पूर्णकालिक डीजीपी के आदेश का इंतजार है। चर्चा है कि यूपीएससी ने फुलटाइम डीजीपी राज्य को अरुणदेव गौतम और हिमांशु गुप्ता का नाम भेजा है। अरुणदेव गौतम अभी इंचार्ज डीजीपी हैं 1992 बैच के आईपीएस हैं, जबकि हिमांशु गुप्ता 1994 बैच के आईपीएस हैं। माना जा रहा है कि वरिष्ठता के चलते सरकार अरुणदेव गौतम को फुलटाइम डीजीपी बनाने का आदेश जारी कर सकती है। यह आदेश अगले हफ्ते निकलता है या फिर सुशासन तिहार के बाद, इस पर संशय है। बताते हैं कि राज्य सरकार ने फूल टाइम डीजीपी के लिए अरुणदेव गौतम और हिमांशु गुप्ता के अलावा पवनदेव और जीपी सिंह का नाम भी यूपीएससी को भेजा था। 1994 बैच के आईपीएस पवनदेव एक पुराने मामले में विशाखा कमेटी की रिपोर्ट के कारण दौड़ से बाहर हो गए। इस मामले को लेकर कुछ लोगों ने पवनदेव की भारत सरकार से शिकायत भी की थी। जीपी सिंह बर्खास्तगी के बाद हाल ही में सेवा में बहाल हुए हैं। सरकार ने अब तक उन्हें कोई काम भी नहीं सौंपा है।

संदीप शर्मा का क्या होगा ? भाजपा नेता संदीप शर्मा को सरकार ने खाद्य आयोग का अध्यक्ष बनाया है, पर कांग्रेस राज में नियुक्त खाद्य आयोग के अध्यक्ष का कार्यकाल समाप्त नहीं होने के कारण संदीप शर्मा अधर में लटक गए हैं। वैसे सरकार ने अधर में लटके कुछ लोगों को नए निगम-मंडलों में एडजेस्ट किया है, तो क्या संदीप शर्मा के लिए भी रास्ता निकाला जाएगा ? संदीप शर्मा की छवि किसान नेता की है और वे मूलतः किसान हैं। संदीप शर्मा वर्षों भाजपा किसान मोर्चा के अध्यक्ष भी रहे। अब वे अध्यक्ष नहीं हैं, फिर भी उन पर किसान मोर्चा का छाप है। किसान नेता को खाद्य आयोग की जिम्मेदारी लोगों के गले उतर नहीं रही है। कहते हैं संदीप शर्मा जो चाहते हैं , वह उन्हें मिलता नहीं हैं। संदीप शर्मा सालों तक राजिम विधानसभा से पार्टी टिकट के लिए लगे रहे, पर उनका सपना पूरा हुआ नहीं। यह अलग बात है कि वे दूसरों के सपनों को साकार करते रहे। अब देखते हैं भाजपा के वरिष्ठ नेता के सिर सेहरा कब बंधता है ?

मंत्रीजी की घोषणा, दुविधा में अफसर

कहते हैं न अनुभव और वरिष्ठता का अलग ही महत्व होता है । छत्तीसगढ़ में भाजपा ने पहली बार के विधायकों को मंत्री बना दिया, लगता है मंत्री के तौर पर कामकाज करने में और सिद्धहस्त होना पड़ेगा। मुख्यमंत्री का प्रोटोकॉल क्या होता है और मंत्री का प्रोटोकॉल क्या होता है, यह समझना होगा। मुख्यमंत्री तो राज्य के भीतर कहीं भी किसी भी विभाग के बारे में कुछ भी घोषणा कर सकते हैं। अफसर-कर्मचारियों पर एक्शन ले सकते हैं, क्योंकि मुख्यमंत्री में पूरा मंत्रिमंडल समाहित होता है। मंत्री ऐसा नहीं कर सकते। मंत्री अपने विभागों में बंधे होते हैं, पर पिछले दिनों राज्य के एक मंत्री ने अपने विभागों के इतर निर्माण कार्य विभाग से जुड़ी योजना के बारे में घोषणा कर आए। अब जिस विभाग के बारे में घोषणा की है, उस विभाग के अधिकारी पशोपेश में पड़ गए हैं कि मंत्री जी की घोषणा पूरी कैसे होगी ?

अमिताभ जैन की जगह कौन ?

वर्तमान मुख्य सचिव अमिताभ जैन की जगह छत्तीसगढ़ का अगला मुख्य सचिव कौन होगा, यह सवाल कई लोगों के मन में तैर रहा है ? चर्चा तो यह है कि छत्तीसगढ़ का अगला मुख्य सचिव दिल्ली से ही तय होगा। वैसे तो नए मुख्य सचिव के लिए तीन-चार नाम लोगों की जुबान पर है। अमिताभ जैन का कार्यकाल 30 जून तक है। माना जा रहा है कि 30 जून को छत्तीसगढ़ को नया मुख्य सचिव मिल जाएगा। अमिताभ जैन ने राज्य के मुख्य सूचना आयुक्त के लिए आवेदन किया है। पहले माना जा रहा था कि अमिताभ जैन रिटायरमेंट के दो महीने पहले स्वैच्छिक सेवानिवृति ले लेंगे और राज्य के मुख्य सूचना आयुक्त के पद पर नियुक्ति हो जाएगी, पर अब विलंब नजर आ रहा है, क्योंकि राज्य के मुख्य सूचना आयुक्त की नियुक्ति के लिए मुख्यमंत्री की अध्यक्षता वाली समिति की बैठक की अभी तक नई तारीख ही तय नहीं हुई है। 16 अप्रैल को होने वाली बैठक टल गई थी। संभावना व्यक्त की जा रही है कि अमिताभ जैन कार्यकाल पूरा करेंगे। उम्मीद जताई जा रही है कि राज्य के मुख्य सूचना आयुक्त और एक सूचना आयुक्त का निर्णय अब एक साथ हो। सूचना आयुक्त के दावेदारों का इंटरव्यू 28 मई को सचिव समिति के समक्ष प्रस्तावित है।

क्या जून में राज्य को मिलेंगे नए मंत्री ?

छत्तीसगढ़ में मंत्रिमंडल के विस्तार को लेकर कई महीनों से कयासों का बाजार गर्म है, लेकिन मुहूर्त निकल ही नहीं पा रहा है। अब नए सिरे से मंत्रिमंडल के विस्तार और नए मंत्रियों के आगमन व कुछ की विदाई की बात होने लगी है। कहा जा रहा है कि प्रदेश के कुछ ताकतवर लोग एक-दो मंत्रियों को राष्ट्रीय संगठन में भिजवाने की मुहिम में लगे हैं। अब देखते हैं वे इसमें कितना सफल हो पाते हैं। खबर है कि 15 जून तक नए राष्ट्रीय अध्यक्ष बारे में फैसला हो जाएगा। इसके बाद साय मंत्रिमंडल का ढांचा बदलने की कवायद होगी। कुछ लोगों की इंट्री के बाद कइयों के विभाग बदलने की अटकलें चल रही है। कुछ मंत्रियों को हल्का तो कुछ के पर कतरे जाने की सुगबुगाहट है। अब देखते कब शुभ मुहूर्त निकलता है।

घोटालेबाजों पर साय की नकेल

चुनावी सभाओं में मोदी और शाह ने संकेत दिया था कि छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार आई तो घोटाले और भ्रष्टाचार करने वालों की खैर नहीं,उसी सिद्धांत पर चलते हुए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने भारतमाला परियोजना में गड़बड़ी की जाँच ईओडब्ल्यू को सौंपा और अब अरपा-भैंसाझार बैराज परियोजना में गड़बड़ी की जाँच ईओडब्ल्यू को देने का निर्णय लिया है। अरपा-भैंसाझार परियोजना में भी जमीन का खेला की खबर आ रही है। इसमें भी रसूखदारों और नौकरशाहों ने जेब भरने का तरीका ढूढ़ निकाला। परियोजना अभी पूरी नहीं हुई है और बजट पूरा खत्म हो गया। बताते हैं केवल 30 फीसदी काम ही पूरा हुआ है। किसान सिचाई सुविधा की बाट जोह रहे हैं। खबर है कि भारतमाला की तरह इस योजना में भी जमीन में लोगों ने मलाई मारी है। बिलासपुर जिले के कोटा के पास बने इस परियोजना में प्रारंभिक तौर पर अब तक सिंचाई और राजस्व विभाग के 15 जिम्मेदार शक के दायरे में हैं। जाँच के बाद और खुलासा होगा। पर एक बात तो साफ़ है कि मुख्यमंत्री साय ने नहीं बख्शने की ठान ली है।